अजाने रास्ते

[यूरोप की युद्धोत्तर स्थिति का औपन्यासिक चित्रण]

डॉ० सत्यनारायण

जनवाणी प्रकाशन

प्रकाशक

जनवाणी प्रकाशन,

१६।१ए, हरिसन रोड, कलकत्ता ७

प्रथम संस्करण

मूल्य ४)

मुद्रक

श्री हजारीलाल शर्मा,

जनवाणी प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड,

२६, वाराणसी घोष स्ट्रीट,

कलकत्ता-७

बर्लिन-प्रवास के बाद अभी हाल में ही वह स्वदेश आये हैं। गत युद्ध के फलस्वरूप वहाँ की असंख्य नर-नारियों की अवस्था क्या है, उनके स्वभाव, विचार और रहन-सहन में क्या-क्या परिवर्तन घटित हुए हैं तथा युद्ध के रूप में जनसाधारण को कैसे-कैसे उत्पीड़न, प्रताड़न तथा निष्पेषण झेलने पड़ते हैं, इसी की झाँकी इस पुस्तक में दी गई है। युद्धोन्मत्त सैनिकों की, वे चाहे किसी फासिस्ट देश के हों या साम्य-कामी रूस जैसे कम्युनिस्ट राष्ट्र के— एक ही मनोवृत्ति, एक ही आचार-विचार एवं उत्पीड़न के एक ही रंग-ढंग होते हैं। इस पुस्तक के पाठक को इसका सबूत ग्रन्थ के पन्ने-पन्ने में मिलेगा। यह कोई निरा काल्पनिक शब्द-चित्र नहीं है, जिसके सत्यासत्य के सम्बन्ध में विवाद किया जा सके। यह तो उन असंख्य नर-नारियों के बीच, उनके जैसा ही रहकर किया गया उनका वास्तविक जीवन-दर्शन है।

यद्यपि यह पुस्तक कोई उपन्यास नहीं है, प्रचलित अर्थों में इसे हम भ्रमण-वृत्तान्त भी नहीं कह सकते; फिर भी पाठकों को इस पुस्तक में एक उपन्यास का-सा विधान, भ्रमण-वृत्तान्त-जैसी सचाई तथा शब्द-चित्रों की खूबसूरती मिलेगी। आशा है, पाठक इसे पढ़कर ही हमारे कथन की सार्थकता का समर्थन करेंगे।

इस पुस्तक के बाद ही डॉक्टर सत्यनारायण की अन्यान्य प्रसिद्ध पुस्तकें भी शीघ्र ही पाठकों की सेवा में हम लेकर उपस्थित होंगे। उनके पुराने-नये सभी प्रसिद्ध ग्रन्थ, पाठकों को अब हमारे प्रकाशन के द्वारा ही प्राप्त होंगे।

कलकत्ता,
गंगा-दशहरा,
१९५०।

व्यवस्थापक,
जनवाणी प्रकाशन।

विषय-सूची

प्रथम खण्ड [प्रारंभ]

द्वितीय खण्ड [[illegible]]

तृतीय खण्ड [कवियों के घाट]

अजाने रास्ते

'अजाने रास्ते' के यात्री डॉ० सत्यनारायण बर्फों में ठंडे मौसम के बीच

अजाने रास्ते

प्रथम खंड

[नारव]

प्रिंस ओलोव

आज ध्रुव अंचल की ओर निकल गया हूँ, पूरी मस्ती के साथ। हमारे जहाज का नाम है—'प्रिंस ओलोव।'

समुद्र ने ऊँचे पहाड़ों को चीरकर यह रास्ता तैयार किया है। हमारे दोनों किनारों की चोटियों पर, इस सितम्बर के महीने में भी, बरफ जमी है। प्रतिदिन सवेरे उन पर फैला हुआ सुनहला प्रकाश, धीरे-धीरे नीचे उतर, हमारी दुनिया को स्नान करा जाया करता है।

नॉर्वे का यह अंचल हमें एक विराट चित्रालय-सरीखा दीखता है। समुद्र का नील वक्षःस्थल पट-भूमि बनाता है। कलाकारों की-सी नीरवता धारण किए पहाड़, उस पर वृक्ष और जङ्गलों की कूची फेरा करते हैं। प्रति मुहूर्त, मालूम नहीं, वे कितने तरह के

अद्भुत, सुन्दर चित्र तैयार करते हैं। पर, उनमें से कोई भी उन्हें सम्पूर्ण सुन्दर नहीं जँचता। शायद इसीलिए वे अपने चित्र मिटाते और हमेशा नए ढङ्ग से तैयार करते रहते हैं।

प्रकृति के इस खेल की तुलना में, मानव के सब खेल तुच्छ और फीके जँचते हैं।

पहाड़ की गोद में सिमटा, एक गाँव पास आता जा रहा है। जेटी के पास लोगों की भीड़ जमती जा रही है। युवतियाँ रंग-बिरंगे कसीदेवाली पोशाक पहने हैं। शायद, आज बाजार या किसी उत्सव का दिन है।

जहाज के यात्री, तरह-तरह के 'कैमरों' के साथ, रेलिंग पर शिकारियों-जैसे डटते आ रहे हैं। कितने, उस गाँव को पृष्ठ-भूमि बना, अपना निज का चित्र ले रहे हैं।

मैं, एक पालवाली नाव को सामने रख, पीछे का पहाड़ी दृश्य लेना चाहता हूँ।

उस नाव के अगले सिरे पर एक युवती खड़ी है। उसके अङ्ग पर स्नान के समयवाली जाँघिया और ऊपर एक चोली है। इस लिबास में वह बड़ी सुडौल दीखती है। चेहरा उत्तरी सौन्दर्य के ढाँचे का है। बाल बिखरे हैं।

मैं अपना 'कैमरा' ठीक कर रहा था, उसी समय आवाज आई—
'क्‌···पा···क्‌!'

अफसोस!—मेरे मुँह से निकला।

'बड़ा अच्छा मौका आपके हाथ से निकल गया।'—मेरे पीछे खड़े, एक सज्जन ने हमदर्दी दिखाते हुए कहा।

युवती तैरने में बड़ी कुशल जान पड़ती है। 'तितली' के ढंग पर हाथ फेंकती, वह तेजी से, किनारे की ओर लौट पड़ी है।

हमारा जहाज भी किनारे लगा। यात्रियों की जमात, बाढ़ के पानी की तरह, किनारे पर फैलने लगी। उस भीड़ में, धक्के खाने के बजाय, उसे दूर से ही देखना अच्छा है।

मेरी निगाह, फिर, उस तैराक युवती पर पड़ी। अलखल्ला-सा वस्त्र शरीर पर रख, उसने, अपने गीले कपड़े उतार डाले। फिर, कमीज और पैण्ट पहने, वह अलखल्ले के भीतर से निकली। अब, पास पड़ा एक सूटकेस ले, वह जहाज की ओर आगे बढ़ी।

आँखें ऊपर उठाते ही उसकी निगाह मेरी ओर पड़ी। उसकी नीली आँखों में, एक अनजान कौतूहल के सिवा, अपरिचित माधुर्य छलक रहा है। मुझे उसमें एक अज्ञात तूफान के आभास से लगी कँपकँपी दिखाई दे रही है।

कभी-कभी, प्रकृति प्राणियों को माँ की तरह प्यार किया करती है। उसके स्निग्ध हाथ दिखाई नहीं देते; पर, जब वे चेहरे पर फिरते हैं, तो मीठी गुदगुदी-सी लगती है। इस आनन्द की तुलना और किसी प्रकार से प्राप्त सुख और प्रसन्नता से नहीं की जा सकती।

यह वैसी ही एक घड़ी है। तीसरे पहर की धूप में, निखरा

के साथ-साथ, बड़ी मिठास भरी है। सूर्य की किरणें सुखद रोमांच पैदा कर रही हैं।

मैं, जहाज के सब से ऊपरवाली डेक पर रखी एक नाव में, आ उड़का हूँ। यहाँ से मुझे आकाश और ऊँची सफेद तुषार से ढँकी पहाड़ियों के साथ-साथ उनका पूरा प्रतिबिम्ब भी दिखाई देता है। मालूम पड़ता है, मानों इस एकान्त प्रदेश में वे निज को भूल अपने आप से ही बातें करने लग गए हैं। जहाज के चलने से पैदा हुए हिलोरें, उनके हिलते होंठ-जैसे जान पड़ती हैं।

कुछ देर बाद, वह तैराकी युवती भी उस डेक पर आई। नाव में छिपे रहने के कारण उसने मुझे देखा नहीं। बिना किसी झिझक के वह, रेलिङ्ग से उठँग, अपने बाल सुखाने लगी।

मैं ने अन्दाज़ लगाया, उसकी उम्र उन्नीस-बीस साल से ज़्यादा नहीं होगी। चेहरे का रंग बम्बैया और गाल की काट सिन्दूरिए आम जैसा था। बाल हलके सुनहले, कुछ लम्बे और लहरदार थे। इस बार, बिना गौर से देखे ही, पता लगा कि वह अवश्य ही खेल पसन्द करनेवाली होगी।

उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए, नाव का तख्ता खटखटाते हुए, मैं उठ खड़ा हुआ। अपराधी की तरह, सर झुकाते हुए, मेरे मुँह से निकला—'माफ़ कीजिएगा !'

'मुझे माफ़ कीजिएगा'—उसने कहा—'मैं ने ही आपकी शान्ति भङ्ग की है।' फिर वह मुस्करा पड़ी।

बात का रुख बदलते हुए मैं ने कहा—'यहाँ का दृश्य बड़ा सुन्दर है।'

'क्या इधर आने का आपका पहला मौका है?'

'हाँ।'

'हमारे आगे हार्डांगेर फ्योर्ड है। वहाँ का दृश्य और भी सुन्दर है।'

चाय की घंटी बजने पर हम दोनों साथ ही नीचे चले। सीढ़ियाँ उतरते समय, हाथ मिला, हम दोनों परिचित हुए। उसने अपना नाम बताया—'सीग्रीद।'

वैसे मुझे अकेले यात्रा करने का अभ्यास है। पर इस बार एक साथी की कमी खटक रही है। इसलिए नहीं कि जब कोई रमणीक दृश्य दिखाई दे, तो उस आनन्द में हिस्सा बँटाने के लिए किसी से कहूँ—'कैसा सुन्दर है!' इस ढंग की बातें मुझे अपने सामने के दृश्य का अपमान कर बैठने जैसी दीखती हैं।

मुझे साथी की जरूरत है—अपरिचित देश में प्रवेश कराने के लिए। इस बार एक यूरोपीय प्रकाशक से मुझे, लड़ाई के बाद के यूरोप पर, एक पुस्तक लिखने का काम मिला है। उसी पुस्तक के लिए मिली पेशगी रकम से मैं ने एक मोटरकार खरीदी है और इस यात्रा में निकल पड़ा हूँ।

अपना भ्रमण-वृत्तान्त मैं यथासम्भव उपयोगी और सुन्दर बनाना चाहता हूँ। यह ख्याल भी रखता हूँ कि उसका निर्माण [illegible]

दृष्टि से उच्चकोटि का हो। इसके लिए, यूरोपीय देशों का मामूली सफर कर लेना काफी नहीं है। आवश्यकता है, वहाँ के देशों की जीवन-धारा में प्रवेशकर, उसके साथ चल, उसकी गतिविधि तथा लक्ष्य के समुचित रूप से निरीक्षण करने की। यह काम, अकेला-अकेला रहने पर, नहीं सध सकता। पर, ऐसी यात्रा के लिए उपयुक्त साथी ढूँढ़ लेना भी आसान नहीं है।

पिछली बार के तजुर्बों से मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यूरोप के देशों में उपयोगिता, रिवाज, फैशन, आदि सब खयाल से, साथ में, एक महिला सेक्रेटरी का रहना नितान्त आवश्यक है। सेक्रेटरी का शाब्दिक उद्भव 'गुप्त' शब्द से हुआ है। मतलब यह कि सेक्रेटरी अपने सञ्चालक के गुप्त रहस्यों को जानने तथा उन्हें सफल बनाने में सहायक साबित होनेवाला होता है।

लड़ाई के जमाने में, सिर्फ आजीविकोपार्जन के लिए नहीं, बल्कि अपने देश को विजयी बनाने के खयाल से, अच्छे-से-अच्छे घराने की लड़कियों ने सेक्रेटरी का काम किया था। आजकल उनमें से बहुत-सी बेकार बन गई हैं। इसीलिए अखबारों में विज्ञापन, अथवा स्टेशनों पर लगे बोर्डों पर, आप अक्सर काम की तलाशवाली बालिकाओं के लिखा पाते हैं—'मैं आप की सेक्रेटरिन हूँ।'

आजकल के यूरोप में सेक्रेटरियों की कमी नहीं है। पर मन के माफिक सेक्रेटरिन ढूँढ़ निकालना मुश्किल है। यह काम उपयुक्त बीबी ढूँढ़ निकालने से कम सहल नहीं है।

बीबी और सेक्रेटेरिन, दोनों ही, भाग्य पर निर्भर करती हैं ।

सीग्रीद को देखकर मुझे ऐसा लगा, मानों अरसे से मैं जिसकी तलाश में था, वह मुझे मिल गई है । निकट परिचय प्राप्त करने के खयाल से, मैं ने उससे कई प्रश्न किए, जिन सब का उस ने बिना किसी सङ्कोच के उत्तर दिया ।

वह रहनेवाली थी नॉरवे के ध्रुव अञ्चल में अवस्थित प्रदेश की । उसके पिता एक लड़ाकू जहाज के कप्तान थे । द्वितीय महासमर के समय, एक जरमन पनडुब्बी ने उनका जहाज डुबोया और उनके एक डोंगी में सवार होने पर, उन्हें गोलियों से उड़ा दिया था । जरमन आधिपत्य के दिनों में, सीग्रीद को, नॉरवे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, भटकना और अक्सर भूखा रहना पड़ा था । अपने देश को जरमनों से स्वाधीन बनाने के लिए वह, हार्डाङ्गर प्रदेश के स्वाधीन नार्वेजियन दल के साथ होकर, लड़ी थी । लड़ाई के बाद से वह समुद्री बेड़े के दफ्तर में काम करती है । अभी उसके छुट्टी के दिन हैं, जिसे वह अपने देश के सुन्दर प्रदेशों में भ्रमणकर बिताना चाहती है ।

उसने मुझ से भी प्रश्न किए—'तुम इटालियन तो नहीं हो ?'

'नहीं ! इण्डियन ।'

'बहुत अच्छा ! जरमनों के साथ-साथ मैं इटालियनों से भी घृणा करती हूँ ।'

'तुम [illegible]'

'जहाँ तक, किनारे के प्रदेश, सुन्दर दिखाई देंगे ।'

'फिर ?'

'फिर, मोटरकार से यात्रा करूँगा !'

'बहुत अच्छा खयाल है ।'

'और तुम ?'

'मेरे पास मोटर नहीं, मैं जहाज से उतरने पर, रेल से यात्रा करूँगी !'

'मैं अपनी मोटर में अकेला हूँ । तुम मेरे साथ यात्रा कर सकती हो !'

'सच ?'

'हाँ, क्यों नहीं !'

'मुझे साथ ले चलने में तुम्हें कोई झिझक नहीं ?'

'झिझक ? मुझे खुशी होगी !'

भोजन की घण्टी बजने लगी । हमलोग हाथ में हाथ डाले, नीचे उतरे । मेरी बगल की कुरसी पर बैठते-बैठते उसने कहा—'शायद मैं तुम्हें निराश नहीं करूँगी ।'

खाने के बाद, जब हमलोग डेक पर लौटे, तो सरदी लगने लगी । मैं ने कहा—'चलो, 'बार' में चलकर बैठें ।'

'चलो'—उसने तुरन्त ही राजी होते हुए कहा ।

अब तक मैं उस 'बार' के भीतर नहीं घुसा था । बाहर से ही झाँककर जान लिया था कि वहाँ की आबहवा बहुत अच्छी नहीं है । वह सैलून-बार हमेशा सिगरेट के धुएँ से भरा रहता है । [illegible]

अधिकतर, जोड़े-जोड़े बैठे रहते हैं। अकेले पढ़नेवाले लोग विचित्र किस्म के होते हैं। वे, प्रायः, अपने आप में मस्त रह सकनेवाले, घनघोर पियक्कड़ से दीखते हैं।

आज उसके सिवा और कोई जगह नहीं थी, जहाँ हम आराम से बैठ सकते।

उसके दरवाजे पर खड़े हो, हमलोग अपने उपयुक्त एकान्त स्थान की खोज में, आँखें दौड़ाने लगे। एक ओर से आवाज आई—'है—लो।'

उधर एक जमात बैठी थी, जिसे कम जानकारी रखनेवाले भी पहचान ले सकते थे कि वह अमेरिकनों की है। मण्डली के पुरुषों ने अपने कोट उतार रखे थे। कई की 'टाई' पर ऊँची-ऊँची इमारतों के साथ-साथ शहर की सुन्दरियों की नक्काशी छपी थी। दो-एक जवान सिर्फ गञ्जी पहने थे।

उनके साथ की औरतें भी यूरोप से अधिक 'मॉडर्न' पोशाक में थीं। इस पोशाक की सिफत यह थी कि उसमें से अङ्ग-प्रत्यङ्ग की बनावट और उस की विशिष्ट रेखाएँ पूर्णतया अपने सच्चे रूप में व्यक्त होती रहें। लेकिन ऐसे मौकों पर इस बात का ख़याल रखा गया था कि आवश्यकता से अधिक अंग कहीं दिखाई न पड़े। अपने सौन्दर्य्य का अभिमान, शायद उस मण्डली में बैठी, हर-महिला को था।

'इधर की दो कुरसियाँ खाली हैं!'—उस मण्डली के

सरदार-से दीखनेवाले एक मोटे सज्जन ने हमारी ओर देखकर कहा।

'यह जगह बड़ी तंग है।'—सीग्रीद ने मुझे इशारे से जतलाया।

पर तब तक अमेरिकन 'सरदार' उठ खड़े हुए थे। उस ओर हमारे पाँव बढ़ाते-बढ़ाते, उनकी मण्डली के और मर्द भी उठ खड़े हुए। उस सारी मण्डली से हमलोगों ने एक-एककर हाथ मिलाया, परिचय प्राप्त किया।

'सीग्रीद'—एक महिला ने मुसकुराते हुए कहा—'इस नाम से तो मैं वाकिफ हूँ। हेनरी, बताओ तो यह कौन-सा मशहूर नाम है?'

'हाँ, इस नाम की नॉरवे की एक नोबेल पुरस्कार पानेवाली महिला है।'

'वही तो मैं याद कर रही थी, नोबेल पुरस्कार तो उन्हें उनकी किताबों के लिए मिला था। इस महिला को हमलोग इसके सौन्दर्य के लिए देंगे।'

यह सराहना हमें काफी अच्छी लगी! कई बोतल 'शाम्पेन' खतम कर चुकने पर दौर 'ड्रिंक्स' चलने लगे। मैं शुरू से ही 'कोका-कोला' के पक्ष में था।

न्यूयॉर्क के रहनेवाले श्री जीन और श्रीमती जीन से हमलोग विशेष रूप से परिचित हुए। उन दम्पति के पूर्वज नॉरवे के रहनेवाले थे और इसी नाते वे यह देश देखने आए थे।

'आप को नॉरवे कैसा लगता है?'—श्री जीन ने मुझसे पूछा।

'बहुत अच्छा।'

'और यहाँ के निवासी?'

'बहुत अच्छे।' मैं ने सीप्रीद की ओर देखते हुए कहा। उसने मेरा हाथ कसकर दबाया।

'मुझे भी।'---श्रीमती जीन ने कहा---'इस सारे जहाज पर मैं सिर्फ एक ही सज्जन मिले हैं, जिन्हें नॉरवे अच्छा नहीं लगता।'

'वे कौन हैं?'---सीप्रीद ने पूछा।

'उस कोने में मोटी किताब लिए बैठे सज्जन।'

'जीन!'---श्री जीन ने अपनी पत्नी का पाँव मेज के नीचे चाँपते हुए कहा---'तुम्हें उस रूसी सज्जन की बात उस रूप में नहीं लेनी चाहिए। वे नाराज इस बात से हैं कि यहाँ पर हुकूमत की बागडोर बोर्जुआजी के हाथ में है। यही कारण है कि उन्हें यह देश पसन्द नहीं आता।'

'पर यह तो बताओ' उनकी पत्नी ने टोका---'इस पहाड़ और समुद्र के सुन्दर मिलन का यहाँ के बोर्जुआजी की हुकूमत से क्या ताल्लुक?'

'[illegible] कहना है कि अगर बोर्जुआजी की यहाँ हुकूमत नहीं होती, [illegible] पहाड़ों [illegible] के इस समुद्री रास्ते द्वारा तुम सोवियत रूस पहुँच सकती थी।'

'सोवियत रूस क्यों, साइबेरिया [illegible]'---[illegible] पत्नी ने टोका---'[illegible] [illegible] से [illegible] ही तो यहाँ का [illegible] [illegible] आदमी

दुनिया के लिए बन्द हो जाता और यहाँ के लोग जेल के बन्दी बन जाते ! माफ करो, हमें वह हुकूमत पसन्द नहीं।

रूसी सज्जन, अपनी किताब बन्दकर, उठ खड़े हुए थे। उनकी, हमारी ओर से गुजरने की आशङ्का ने, चलनेवाली चर्चा बन्द कर दी।

अगले दो दिनों में हमलोगों का परिचय उस जहाज पर के प्रायः सब यात्रियों से हो गया। विभिन्न देशों से आनेवालों का वह जमघट बड़ी दिलचस्प थी। एक ही चीज को निहारने का उनका दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न था। यात्रा की प्रेरणाएँ, जो उन्हें वहाँ खींच लाई थीं, वह भी भिन्न-भिन्न थीं। उनसे टक्कर लगने से अपने को बचाते हुए उनका परिचय हमारे लिए दृष्टिकोण विस्तृत करनेवाला था।

हम सब का ध्यान आसानी से आकर्षित करनेवालों में एक वृद्ध इटालियन चित्रकार थे, जिनका नाम था—'आलिसान्द्रो'। वे दिनभर अपनी चित्रकारीवाली तख्ती सामने रखे, पहाड़ों की चित्रकारी किया करते थे। उनके चेहरे में औरों की अपेक्षा सिर्फ यह विशेषता थी कि उनकी दाढ़ी बड़ी नुकीली और गले के नीचे तक पहुँचनेवाली थी। वह बकरे की शक्ल की अवश्य दीखती थी, पर उससे डरने की कोई बात नहीं थी। फिर भी सीमोंद उनके पास फटकने से बड़ी घबराती थी। सिग्नोर आलिसान्द्रो ने बड़ी कोशिशें कीं, पर सीमोंद उनके सामने बैठ, अपना चित्र तैयार कराने के लिए तैयार नहीं हुई।

सब किसी से स्वयं परिचय प्राप्त करने आने वालों में फ्रेंच सज्जन मोशिए रैलेक थे। उनकी सज्जनता पूरे पेरीसियन ढङ्ग की थी।

अवस्था उनकी पैंतालीस के लगभग होगी, पर किसी कमसिन लड़की से परिचय प्राप्त करते समय भी उसका हाथ वे अवश्य चूमा करते। वे खुलकर कहा भी करते कि उत्तरी यूरोप के लोग ठीक-ठीक चूमने के तरीके नहीं जानते, इसलिए उन्हें उसी क्षेत्र में शिक्षा देने के लिए, उन्होंने इस यात्रा का कष्ट उठाया है। जहाँ तक सीग्रीद का ताल्लुक था, वह उन्हें देखते ही उल्टे रास्ते लौट पड़ती थी। मोशिए रोलेज इससे बहुत निराश होते और कहते—'उत्तरी यूरोप कभी भी सभ्य नहीं बनेगा।'

ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व करनेवाले मिस्टर बिल-ब्रेनेज थे। वे सबेरा होते ही एक डेक कुरसी पर जा बैठते और अपने सिगार का धुआँ घण्टों उस अंचल में फैलाया करते।

वे उस जहाज पर सब से कम बोलनेवालों में थे। अपने सामने के पहाड़ों से विनिमय करने की कोई भी सामग्री उन्हें नहीं मिली थी, शायद इसीलिए वे, उस जहाज के बाजार में सन्नाटा स्थान ढूँढ़, समय बिताया करते थे। इस यात्रा से वे बड़े निराश दीखते थे।

चहल-पहल, आधी रात के बाद भी, आबाद रखनेवाली अमेरिकनों की जमात थी। उनके बूढ़े भी, स्कूली लड़कों के छुट्टी के समय-जैसा, व्यवहार करते थे। खूबी इस जमात की यह थी कि इन्हें अपने सामने से [illegible] कोई [illegible] नहीं था। उन्हें [illegible] था कि वे नाचने और [illegible] के [illegible]

मजा ध्रुव - प्रदेश में भी उठा रहे हैं। सभ्यता के इस रफ्तार से उन्हें पूरा-पूरा सन्तोष था।

सब से अकेला पड़े यात्री, ओसलो के रूसी दूतावास के एक कर्मचारी, तबारिश कलजोव थे। वे भी मिलनसार प्रकृति के थे, पर बातचीत के सिलसिले में हमेशा राजनीति की ओर खींच ले जाने का उनका ढंग, कोई पसन्द नहीं करता था। खासकर अमेरिकनों से जब कभी उनका सामना होता, तब वे अमेरिकन सभ्यता की दो-एक चुटकी लेने से कभी बाज नहीं आते थे। सौभाग्य था मैंने कभी भी उनकी बातें काटने की धृष्टता नहीं दिखाई; इसलिए वे हमारी सङ्गति अधिक पसन्द करने लगे थे।

संक्षेप में—उस जहाज पर हमारे मन के ऊबने की नौबत कभी नहीं आती थी। इसके लिए हमें फुर्सत भी कहाँ?

बहुत बचाते रहने पर भी आखिर 'रूस' 'अमेरिका' के बीच युद्ध छिड़ ही गया। रूस के स्वाभाविक प्रतिनिधि तबारिश कलजोव थे और श्रीमती जीन अमेरिका का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। बातें नृत्य-सम्बन्धी चल रही थीं। उसी सिलसिले की चर्चा में कलजोव ने कहा—'आप लोगों ने अमेरिका में जो नये ढङ्ग का 'जिटर बग' नृत्य शुरू किया है, वह बड़ा ही भद्दा है।'

'उसमें भद्देपन की कौन सी चीज है?' श्रीमती जीन ने उन्हें टोका।

'आप नाराज न हों, सच्ची बात यह है कि उसमें नाच-गान...

के पाशविक ढङ्ग से नृत्त किये जाने की बेहूदी गति दिखाई जाती है।'

'शायद, अकेला आपको ही ऐसा लगता है।'

'आपको यह स्पष्ट बीभत्सता दिखाई नहीं देती, इसका कारण है।'

'कहिए।'

'आपके देश की राजनीतिक बागडोर चन्द पूंजीपतियों के हाथ में है। ये पूंजीपति ही आप का सामाजिक पसन्द निर्धारित किया करते हैं। ये पूंजीपति स्वयं इतने पतित हो गये हैं कि उन्हें स्वाभाविक नृत्यों से कोई रस नहीं मिलता। वे अब पाशविकता के इतने निकट पहुँच गये हैं कि बन्दर-नृत्य ही उन्हें अधिक पसन्द आने लगा है।'

'आप, बन्दर-नृत्य का नाम दे, सारे अमेरिका का अपमान कर रहे हैं।'—श्रीमती जीन ने उत्तेजित होकर कहा।

'बन्दर-नृत्य नहीं, तो शूकर-नृत्य वह अवश्य है।'—कजलोव ने व्यङ्गयात्मक ढङ्ग से मुसकुराते हुए कहा।

'और स्टालिन रूसियों को कौन-सा नाच सिखाते हैं? यह भी आप मुझे बताएंगे?'

'हमारे यहाँ उस ढङ्ग की कोई बात नहीं।'

'मैं आपको सुझाऊँ। स्टालिन, लाखों आदमियों को खुफिया पुलिस के तहखानों में नचाकर, उनकी खाल खिंचवा, उनका कीट-नृत्य देखा करते हैं।'

'सरासर झूठ'—कजलोव चिल्ला उठे—'यह सरासर झूठ है।'

'आप इनकार करेंगे कि लाखों आदमी आपके यहां के खुफिया पुलिस के तहखानों में कीड़े-मकोड़े से भी बदतर जीवन बिताया करते हैं?'

'क्या आप यही जहर फैलाने नॉरवे आई हैं!'

'और आप, अपने खूँखार तहखानों का दायरा फैलाने, नॉरवे आए हैं?'—इतना कह, श्रीमती जीन कजलोव के बहुत निकट पहुँच गयीं।

'बस-बस'—कहती हुई सीग्रीद, उन दोनों के बीच, आ खड़ी हुई—'आप दोनों निष्पक्ष भूमि पर हैं।'

'अगर यह भूमि निष्पक्ष होती, तो अमेरिकनों को यहां घुसने नहीं देती।'—कजलोव उत्तेजित स्वर में ही कहते गए—'नॉरवे के अतलांतिक पैक्ट में शामिल होने का मतलब ही है कि वह सोवियत-विरोधी अमेरिकन जल्लादों के हाथ की कठपुतली बन गई है।'

'अगर अमेरिकनों ने न बचाया होता, तो स्तालिन का खूँखार पंजा अब तक सारे नॉरवे को अपने बकोटे में ले लिए होता!'—अँग्रेज सज्जन ने अपना फैसला दिया।

और भी बहुत से यात्री, इस बीच, घटना-स्थल पर पहुँच गये थे। मुश्किल से उन्होंने 'रूस' और 'अमेरिका' दोनों को अपने-अपने केबिनों की ओर रवाना किया।

'इस राजनीतिक झगड़े ने हमारी इस यात्रा का सारा सौन्दर्य नष्ट कर दिया।'—एक अमेरिकन युवती ने उलाहने के स्वर में कहा।

'पर हम इसे नष्ट नहीं होने देंगे।'—दूसरी ने दृढ़ शब्दों में कहा—'हम आज ही शाम को सौन्दर्य्य और नृत्य का उत्सव मनाएँगे।'

'बहुत खूब!'—कहते हुए वहाँ इकट्ठे सब लोग, उस युवती के प्रस्ताव पर, राजी हो गए।

'मेरी राय है'—अमेरिकन 'सरदार' ने गरजने के स्वर में कहा—'हम आज इस जहाज पर सौन्दर्य्य की रानी का चुनाव करें और शाम के उत्सव के समय उसे सिंहासनारूढ़ करें।'

चारों ओर से तालियाँ पिटीं और सौन्दर्य्य-पारखियों ने उसी समय अपना काम शुरू कर दिया।

मौसिम पलट गया था। पहाड़ों को घने बादलों ने घेर रखा था। उनका व्यूह सूर्य की किरणें भग्न नहीं कर पाती थीं। ठंढक काफी बढ़ गई थी।

पर इसका कोई असर, सौन्दर्य-प्रतियोगिता में भाग लेनेवाली सुन्दरियों के कार्यक्रम पर, नहीं [illegible] सुन्दरियों को कम से कम वस्त्र धारणकर, डेक पर टहल लगाने के लिए कहा था। वे सुन्दरियाँ इस आज्ञा का अक्षरशः पालन करने लगीं।

निरीक्षकों की टोली, तराजू और फीता लेकर, डेक के एक किनारे आ बैठी। मुझे आश्चर्य होने लगा कि वे सौन्दर्य्य को तौलने और नापने जा रहे हैं। हमारे देखते-देखते ही उन्होंने यह काम शुरू किया। सुन्दरियाँ पहले तराजू पर वजन की गईं, फिर

उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग की माप ली जाने लगी। वे मुस्कुराती हुई बड़े शौक से अपनी जांघ, कमर और छाती की माप देने लगीं।

सीग्रीद भी हमारी ही तरह, दर्शकों की जमात में, आ खड़ी हुई थी। उसे टोकते हुए हालीउड में काम करनेवाले एक अमेरिकन ने कहा—'आप यहाँ अलग आ खड़ी हुई हैं?'

'मुझे सर्दी लग रही है।'—सीग्रीद ने उत्तर दिया।

'पर यह बड़ा अनमोल मौका आप खो रही हैं।'

'जानती हूँ, पर मेरी सेहत ठीक नहीं है।'

'आप और एक बार विचार कर देखिए'-अमेरिकन उसे समझाने लगा—'अभी आपने जीवनक्षेत्र में प्रवेशमात्र किया है। अगर एक बार इस जमात में आप चुन ली गईं, तो फिर हालीऊड का दरवाजा आगे के लिए खुल जायगा।'

'हमारे पेशे से हालीऊड का कोई ताल्लुक नहीं है।'

'हालीऊड की ख्याति के बाद आपको किसी पेशे की जरूरत ही नहीं रहेगी।'

'मैं वह ख्याति नहीं चाहती।'

'जीवन में यह पहला ही मौका है, जब एक वास्तविक सुन्दरी के मुँह से मैं ऐसी बातें सुन रहा हूँ।'

'अरे', दूसरी ओर से आते हुए श्री [illegible] ने सीग्रीद से कहा—'आपको इस यूरोपीय भूमि की लाज रखनी चाहिए। हमें, इन

अमेरिकनों को दिखा देना है कि सुन्दरियाँ अतलांतिक सागर के सिर्फ उस किनारे ही जन्म नहीं लिया करतीं।'

'मैं उस लायक नहीं'—सीग्रीद ने नम्रता दिखाते हुए कहा।

फिर सिनियोर आल्सिांद्रो की बारी आई। उन्होंने भी इटालियन ढङ्ग से भिक्षा माँगने की भंगिमा दिखाते हुए कहा—'आपके सुन्दर गठन को अङ्कित करने का सौभाग्य मेरी कूँची को न मिला।'

'यह मेरा दुर्भाग्य है।'—सीग्रीद ने एक कदम पीछे हटते हुए कहा।

'पर सब से अधिक घाटे में मैं रहा'—मिस्टर बिल-बेनेत ने अपनी कुरसी पर उछलते हुए कहा—'मैं इस बात की बाजी लगा चुका था कि आप ही इस जहाज पर की सुन्दरियों की रानी चुनी जायँगी।'

सीग्रीद अपने निर्णय पर अटल रही। अकेले तवारिश कजलोव ने उसे बधाई देते हुए कहा—'आपने नारी-जाति की मर्यादा रक्षा की। अमेरिका में नारी भी खरीद-बिक्री की सामग्री है, इसीलिए वे उसे माप-जोखकर उसका मूल्य निर्द्धारित किया करते हैं। ऐसे तो ये बर्बर हैं।'

पर, इस नाराजगी के बावजूद वे औरों की ही भाँति डेक पर के अपनी सौन्दर्य से मुँह फेर ले सकने में समर्थ नहीं हुए।

उस रात डेक पर की [illegible] में 'बड़ी सजधज के साथ' नाच शुरू हुआ। शेम्पेन की बोतलों के कॉर्क 'छत से टकराने पर' बन्दूक की

तरह आवाज किया करते। जहाज लहरों के जोर से नहीं, बल्कि नाचियों के पाँव पटकने के ताल पर हिला करता। हँसी-ठहाके की धूम भरमार थी, मानों सारी दुनिया की खुशी वहीं उँडेली आ रही हो।

सौन्दर्य्य की रानी एक अमेरिकन युवती चुनी गई थी। इस समय उसके शरीर पर पतले रेशम की झुलिया और उसके नीचे ओछे घंघरे-सी पोशाक थी। चेहरा पाउडर से पुता था। होंठ टहटहा लाल तथा आँखों की पपनियाँ सँवारी हुई थीं। बाल मर्दों के ढङ्ग पर, पीछे की ओर फिरे हुए थे।

मैं, अनायास ही, उसकी तुलना सीग्रीद से करने लगा। वह मेरी बगल में खड़ी थी। इसकी पोशाक सौन्दर्य्य की रानी से बिलकुल विपरीत ढङ्ग की थी। इस समय उसने कसरत के समय पहनी जानेवाली ऊनी गंजी और उसके ऊपर जाकेट पहन रखा था। इन ऊनी कपड़ों के भीतर से भी उसके शरीर के वास्तविक गठन की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई दे जाती थीं। मालूम पड़ता था, मानों उसकी बनावट कई अर्ध चन्द्राकार रेखाओं द्वारा ही की गई हो।

कजलोव की निगाह एकटक सीग्रीद पर गड़ी थी। उसकी इस निगाह में युवती को अपनी ओर खींचने का प्रयत्न भी जाहिर हो जाता था।

'वाल्ट्स' के नाच का बाजा शुरू होने पर, कजलोव ने सीग्रीद से नाच का आग्रह करते हुए कहा—'यह नाच असभ्य नहीं। क्या आप मेरे साथ नाचेंगी?'

क्षणभर चुप रहने के बाद सीग्रीद ने, सभ्य समाज के नियमानुसार, विनम्रता से कहा—'बड़ी खुशी से···'

वे नाचने लगे। मैं, दर्शकों की जमात में मिल, उन्हें देखने लगा।

'कुछ पीते क्यों नहीं?'—श्री जेन ने 'मार्तीनी' का एक ग्लास मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा। मैंने वह ग्लास ले लिया।

'यह अच्छा नहीं।'—श्रीमतीजी ने धीमे शब्दों में मेरे कान में कहा—'वह रूसी तुम्हारी संगिनी को उड़ा लेगा! रूसी बड़ा खतरनाक है।'

'उड़ा ले जाने की बात' अबतक मेरे खयाल में नहीं आई थी। उनके मुँह से यह सुन, मैं स्तब्ध-सा हो रहा। श्रीमती जीनने दुहराया—'वह बड़ी भली लड़की है। तुम स्वयं क्यों नहीं उसके साथ नाचते?'

'यहाँ की इस गरमी में मैं नाचना नहीं चाहता!'—कहता हुआ मैं शुद्ध हवा में जाने का बहाना कर, वहाँ से बाहर निकल आया।

खुले डेक पर कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि सीग्रीद ने पीछे से मेरा हाथ पकड़ लिया, कहा—'कहाँ भागे जाते हो?'

'उस सैलून के धुएँ से मेरी आँखें दुखने लगी हैं।'

'मुझ पर नाराज तो नहीं?'

'कोई वजह नहीं!'

'जानते हो उस रूसी ने क्या कहा? ऑसलो लौटने पर वह

मेरे साथ गाढ़ी मित्रता बढ़ाएगा। पर न जाने क्यों, मुझे उससे भय-सा लगता है।'

सैलून से कजलोव को निकलता देख, हम लोग अपने-अपने केबिनों की ओर चले गये।

ब्रोथेम नगर में, जहाज रुकने पर, उसपर का बाजार खाली हो गया। अधिकांश यात्रियों ने यहाँ से रेल-द्वारा ओसलो का जाना तय किया। दक्षिण यूरोपवालों के लिए यही ध्रुव अञ्चल की सीमा थी। अमेरिकन यात्री, यहाँ पहुँच जाने पर, अपने को नानसेन या आमुण्डसेन जैसे ध्रुव-विजेताओं के प्रतिद्वन्द्वी होने का गर्व-सा अनुभव करने लगे।

'प्रिंस औलोव' के लिए उत्तर की यात्रा यहाँ से प्रारम्भ-मात्र हो रही थी। उसके कप्तान ने मुझसे कहा—'आप हमारे जहाज से ही आगे चलिए। यहाँ से क्रिश्चियान सुंड तक का दृश्य बड़ा मनोरम है। इस अञ्चल के 'फ्यूर्ड' अगर आपने नहीं देखे, तो नॉर्वे के सुन्दरतम अञ्चल से आप अपरिचित ही रह जायँगे।'

मैंने उनकी राय मान ली। सीग्रीद ने और यात्रियों के साथ रेल से ही ओसलो लौटना तय किया।

उसे पहुँचाने मैं रेलवे स्टेशन तक गया। ट्रेन के अधिकांश यात्री हमारे जहाज के परिचित थे; पर फिर भी सीग्रीद ने अपने लिए अकेले का छोटा-सा डब्बा चुना। गाड़ी खुलने में कुछ देर थी, इसलिए मैं भी उसकी जगह पर साथ जा बैठा।

जिस कमीज और पेण्टवाली पोशाक में, वह उस दिन जहाज पर सवार हुई थी, आज भी उसका वही लिबास था। अपनी इस पोशाक में वह बड़ी चुस्त और फुर्तीली दिखाई पड़ती थी।

मुझे सूझ नहीं रहा था कि उस से क्या बातें करूँ। 'कॉरीडोर' की ओर से भीतर झाँकते हुए मोशिए रोलेन ने कहा—'क्या गजब की सुन्दरी है!'

'धन्यवाद!'—सीग्रीद ने खुलकर हँसते हुए उत्तर दिया।

'पर विदाई के समय शिष्टाचार नहीं भूलना चाहिए!'

'यह पेरिस नहीं है, मोशिए रोलेन!'

'पेरिस न सही, यूरोप तो है!'—कहते हुए उन्होंने उस दर्जे का दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया।

रंगे काँच के भीतर से छिटककर आनेवाले प्रकाश में उसका चेहरा और भी सुन्दरतम दीखने लगा।

दरवाजा फिर से खोलने के लिए उसने हाथ बढ़ाया, पर इसी समय, गाड़ी में इञ्जिन के आ जुड़ने के कारण, एक धक्का-सा लगा। उसका हाथ मेरे गले पर आ पड़ा और फिर छाती पर। तुरन्त सम्हल जाने की उसने कोशिश नहीं की।

'इस यात्रा में हम दोनों अकेले रहते, तो हमारी यात्रा कितनी सुन्दर होती!'—उसने मुझे अपने निकट लाने की कोशिश करते हुए कहा।

इञ्जिन ने सीटी दी। उसने मेरा गला अपनी ओर खींचकर

कहा—'ओसलो, आना। वहाँ हम दोनों अकेले नाव की सैर करेंगे।'

जल्द-जल्द मैं गाड़ी से नीचे उतरा। उसने खिड़की का शीशा नीचे गिराने की कोशिश की, पर सफल नहीं हुई। इस बीच उसका डब्बा, प्लैटफार्म के बाहर निकल, कुहासे में विलीन हो गया।

जहाज पर मैं अकेला वापिस लौटा।

चपेट में

प्रकृति हर घुमाव पर नए-नए रूप में आ खड़ी होती है। उसका उतने कम दायरे में उतने प्रकार के रूप धारण कर लेना हमें आश्चर्यचकित कर देता है। समुद्र और पहाड़ के मिलन से बनी कितने ही प्रकार की उसकी काया अद्वितीय है।

अब मैं अधिकांश समय कप्तान के सञ्चालन-स्थान पर बिताने लगा हूँ। यहाँ से ही प्रकृति का पूरा मुखड़ा दिखाई देता है। साथ ही उसके सम्बन्ध में कप्तान की टीकाएँ भी बड़ी सुन्दर हुआ करती हैं।

'जानते हो' एक बार उन्होंने कहा—'मैं बचपन से ही, नॉर्वे के दक्षिणी छोर से लेकर उत्तरी छोर तक की, यात्रा किया करता हूँ। यहाँ के इस इक्कीस सौ मील लम्बे समुद्र-तट के पत्थर-पत्थर से मैं

परिचित हूँ ; फिर भी वे हर बार मुझे एक नया आवरण धारण किए दिखाई देते हैं। इस अंचल की प्रकृति का मिजाज तुम्हारे मानव-जगत् के किसी भी कोने की नारियों से कहीं अधिक तेज गति से पलटा खाता है।

'प्रकृति की नारियों से तुलना !'

'तुम बिना एक के समझे, दूसरे को नहीं समझ सकते।'

'आप की बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं।'

'तुम निरे अबोध हो। हमारे इस अंचल की नारियाँ यहाँ की प्रकृति की ही तरह सुन्दर हैं, फिर भी तुम साधुओं की तरह यात्रा कर रहे हो—इस में कोई तुक है ? जीवन सुखी बनाने के बजाय तुम इसे जान-बूझकर नीरस बनाए रखते हो। फिर तुम्हें अपने सामने के सौन्दर्य्य का रहस्य कैसे समझ में आए ?'

जहाज-सञ्चालन का काम अधिकतर दूसरे अफसर ही किया करते हैं, कप्तान ने एक ढङ्ग से छुट्टी ही ले रखी है। समय पर्याप्त रहने के कारण वे एक साथ ही बहुत-सी पीने की सामग्री ले अपने केबिन के सामने के खुले डेक पर आ बैठते हैं। हर बार जब नयी बोतल खोलते हैं, तब हमारा ग्लास भी भर देते हैं और अपना ग्लास होंठ के पास ले, अपने सामने के दृश्य की ओर निगाह दौड़ा कहते हैं—'नॉरवे की सुन्दरी नारियाँ आबाद रहें।'

उनकी बातें बड़े दिलचस्प ढङ्ग की और बेतरतीब होती थीं, पर उन्हें सुनते-सुनते, बिना पता चले ही, समय निकल जाता था।

बातें वे अपने नाविक-जीवन और जवानी में किए उत्पातों की बड़े गर्व से किया करते थे।

'तुम अगर कभी नाविक नहीं रहे, तो तुम्हारा जन्म लेना ही बेकार हुआ।' वे कहते—'नाविक ही सब लोगों की अपेक्षा अपने देश को अधिक समृद्ध बनाया करते हैं और देश-रक्षा के कार्य में भी वे ही सब से आगे रहते हैं। इसीलिए उन्हें ही जीवन-उपभोग का अधिकार भी मिला रहता है। मैंने अपनी जवानी में कोई भी उद्यम बाकी नहीं रखा है, वह सब सुनोगे?'

'हां, क्यों नहीं!'

'उसमें तुम्हारे सीखने की भी बहुत-सी बातें हैं। अगर तुम मेरे तजुर्बों से फायदा उठा सके, तो तुम अपना जीवन भी बहुत सुखी बना लोगे। तुम्हारा क्या ख्याल है?'

'आप का कहना बिलकुल ठीक है।'

'जब से तुम मेरे जहाज पर सवार हुए, मैं तुम्हें बड़े ध्यान से देखता आ रहा हूँ। तुम औरतों से बहुत डरते-डरते-से दिखाई पड़ते हो! आखिर मामला क्या है? तुम्हें कोई बीमारी तो नहीं?'

'नहीं, मैं पूरा स्वस्थ्य हूँ।'

'और अगर कोई बीमारी हो भी, तो यह समुद्री हवा तुम्हें पूरी तरह चङ्गा कर देगी। यह भी तुम्हें बता दूँ—इन बोतलों से बढ़िया दवा भी तुम्हें और कहीं नहीं मिलेगी। चलो, उठाओ ग्लास!'

अजाने रास्ते

'तो मैं तुम से क्या कह रहा था ?' एक दिन शाम की बैठक में वे कहने लगे—'हाँ, जवानी में मज़ा तभी है, जब मिज़ाज भी नाविकों का हो ! हिसाब-किताब करते रहने से आदमी जल्द बूढ़ा हो जाता है। लुटाते चलो ! जो भी मिले, लुटाते चलो ! तभी जवान बने रहोगे। और जितना लुटाओगे, उतना ही तुम्हें मिलता जाएगा !'

'आप की सलाह बहुत दुरुस्त है।'

'यह मैं अपने तजुर्बे से कह सकता हूँ। रुपया या रमणी दोनों के मुतल्लिक एक ही कानून है। तुम उन्हें जकड़कर बैठे नहीं कि पड़े बीमार। फिर उनके उपभोग करने के बदले वे ही तुम्हें चबाने लगती हैं। तुम इस जहाज पर उस नार्वेजियन लड़की को इस प्रकार जकड़कर अपनाना चाहते थे कि तुम्हारे बारे में मुझे सचमुच डर होने लगा था।'

'वह खतरनाक लड़की नहीं थी।'

'लड़कियाँ कोई भी खतरनाक नहीं होतीं। उनमें चिपटकर आदमी स्वयं खतरा बुलाया करता है।

'इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें अपने जीवन की एक घटना सुनाऊँगा। बात यहाँ की नहीं, ध्रुव-अञ्चल की है। तुम उस ओर और पहले कभी जा चुके हो ?'

'नहीं।'

'तो हमारा तजुर्बा जान लेना तुम्हारे लिए और भी जरूरी है।

दक्षिण की हवा से यहाँ की हवा में तुम्हें कोई अन्तर दिखाई देता है ?'

'इधर की हवा में बड़ा अकेला-अकेला महसूस करता हूँ ।'

'यह यहाँ की खास खूबी है । और उत्तर जाने पर यह अकेलापन और भी विकट रूप धारण करने लगता है । मैं भी उसका शिकार बन चुका हूँ । सुनो—हमारे नॉरवे का सब से उत्तरी प्रदेश फिनमार्क कहलाता है । वहाँ लापलैण्डर निवास करते हैं । हमारे इस जहाज पर और कई दिन रहोगे, तो देखोगे कि तुम्हारे सामने का दृश्य और भी बदल गया है । उधर तुम्हें समुद्र-किनारे नंगे-काले पहाड़ एक-व-एक सीना तानकर लम्बे हो खड़े हो गए-से दीखेंगे । बस, समझ लेना यही ध्रुव-अञ्चल की शुरुआत है । उन पहाड़ों की चोटियों पर सफेद रंग के हजारों समुद्री तथा उत्तरी अञ्चल में पाए जानेवाले पक्षी मिलेंगे । आदमियों की बस्ती तुम्हें विरले मिलेगी । वहाँ का अकेलापन, असली अकेलापन है ।'

'वहाँ तो और भी विचित्र लगता होगा ।'

'बिलकुल विचित्र ! मैं उसके फेर में, एक बार, बुरी तरह पड़ा था । हमारे देश के सब से उत्तरी सीमे पर, नारविन के पास, हमारा जहाज पत्थरों से टकरा गया था । उसकी मरम्मत में कई सप्ताह लगनेवाले थे । वह समय, काटे नहीं कटता था । [illegible] में नाविकों के मन बहलानेवाली रमणियों की खोज में । पर उस अञ्चल में वे कहाँ मिलें ! [illegible] लापी से । वह देखने

में बुरी नहीं थी। पर जिन्दगीभर 'रेनडियर' का माँस खाते और उसी का खाल पहने रहने के कारण, उसके सारे शरीर में 'रेनडियर' की-सी बदबू आती थी।'

'छिः-छिः।'

'छिः-छिः न करो। सुन्दरी वह गजब की थी। मैंने सोचा—यदि नहला-धुलाकर उसे अपने यहाँ की नारियों-जैसा वस्त्र पहना दूँ, तो वह ओसलो की सब सुन्दरियों को मात कर जाएगी। उसके लिए मैंने कौन-कौन-सी तकलीफें नहीं उठायीं! मैं, मीलों दलदल भूमि में, उसके साथ भटकता रहा, 'रेनडियर' की खाल में लिपट, बरफ पर सोया। पर उत्तर की ठण्ड के कारण उसका दिल भी जमा हुआ-सा था। बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठा, उसे जहाज पर लाया; पर दोस्त, यहाँ की कोई भी चीज उसे पसन्द नहीं आई।'

'सैलून का आराम भी नहीं?'

'तुम सैलून की बातें करते हो? सीढ़ियों पर बिछी कालीन भी वह बर्दाश्त नहीं कर पाती थी। उसने मुझ से कहा—'मेरे साथ अगर रहना चाहते हो, तो चलो उस बरफ के मैदान पर!' देखते हो, औरतें जिस प्रकृति में पली रहती हैं, चाहे वह कितनी भी कठोर क्यों न हो, वही उन्हें प्रिय लगती है। लापी को मेरा सब समझाना बेकार रहा। आराम नहीं बर्दाश्त कर सकने के कारण ही वह एक दिन यहाँ से रात में भाग निकली। संयोग से उस समय तक हमारा जहाज मरम्मत हो चुका था, हमारा दक्षिण का

रास्ता खुल गया था। पर उस लापी ने मुझे जो शिक्षा दी, वह मैं कभी न भूल सका—औरतों का अगर पूरा-पूरा प्यार पाना चाहते हो, तो उन्हें उनके प्राकृतिक अंचल में ही रहकर अपनाओ। उन्हें जहाँ तुम ने उनके वातावरण से अलग किया कि वे तुम्हारी पकड़ में, फिर नहीं रह सकतीं। इसीलिए तो कहता हूँ कि अगर तुम यात्रा करो, तो अपनी औरत ढोते न चलो। जिस अंचल में पहुँचो, वहाँ एक नई लो, तभी तुम सुखी रहोगे। देखते नहीं, अगर सुन्दर-से-सुन्दर फूल तोड़कर साथ लेते चलो, तो वह कितने दिन टिकेगा?'

'सिर्फ दो-चार···।'

'ठीक कहा, और फिर कुम्हला जाएगा। उससे क्या फायदा। फूलों को उनके स्थान पर ही रहने दो। उन्हें सूंघो, प्यार करो, फिर आगे बढ़ो। वहाँ तुम्हें और भी दूसरे फूल मिलेंगे। बताओ, अब तो तुम्हें अपनी उस नारवेजियन संगिनी से अलग होने का कोई दुःख नहीं?'

'नहीं।'

'तब उठाओ ग्लास।'

एक घूंट में ही उन्होंने अपना ग्लास खाली कर दिया और आँखें मूँद, एक आराम-कुरसी पर लुढ़क गए।

वे पूर्णतया परितृप्त दिखाई दिए।

कप्तान की बातें सुनते और पहाड़ी-समुद्री रास्ते पार करते एक

दिन जहाज क्रिश्चियानसुंड नगर में आ लगा। यहाँ, जहाज के पते पर दिया, मुझे एक तार मिला। उसमें लिखा था—'बखेड़े में पड़ी हूँ। जल्द आओ।—सीग्रीद।'

मैंने मोटर किनारे उतरवाई। बिदाई देते समय, कप्तान ने कहा—'देखना, स्वयं न कहीं बखेड़े में पड़ जाना!'

'इसका ख्याल रखूँगा,'—कह कर मैं ने मोटर आगे बढ़ाई।

हमारा रास्ता पहाड़ों के ऊपर होकर जाता था। यहाँ से बरफ से ढँके गिरिशृङ्ग बहुत पास दीखते थे। अनमन हो, मैं उनसे ही बातें करता चलता था।

और आगे का रास्ता, पहाड़ी नदी के किनारे-किनारे जाता था। नक्शा देखने पर पता चला कि इस नदी का नाम है—'हिमशिखा।'

यह नाम मुझे बहुत पसन्द आया। हमारे चारों ओर निर्जन था। पर मैं अपनी कल्पना में एक अद्भुत सुन्दरी का चित्र देख रहा था। वैसी सुन्दरी, भूमि पर और कभी मुझे दिखाई नहीं पड़ी थी।

मुझे ऐसा भान हुआ, मानों वही मुझे आगे-आगे रास्ता दिखाती चल रही है। रफ्तार वह मेरी गाड़ी के ही समान रखती है, पर इसके लिए उसे पाँव उठाने की आवश्यकता नहीं। अपने दोनों हाथ उसने, डैनों की तरह, फैला रखे हैं और मधुर गति से हवा में तैरती जा रही है। मुझे लगता है, वह मुझे अपने घर लिवाती जा रही है।

उसका घर अवश्य ही पहाड़ की चोटी पर होगा। चारों तरफ बरफ जमी होगी, पर भीतर कमरे में मन के लायक ताप होगा। रहेंगे हम दोनों बिलकुल अकेले। वह तरह-तरह के खाद्य-पदार्थ हमारे सामने ला रखेगी। मुझे शर्माता देख, मेरे कन्धे पर हाथ रख, कहेगी—'यह भोजन पसन्द नहीं ?'

उसकी बोली कितनी मीठी है। उसे सुनते ही पुलकित हो उठता हूँ। पर ठीक इसी समय मोटर एक घुमाव पर की चट्टान से टकराते-टकराते मुश्किल से बचती है।

'बेवकूफ' मैं झुँझलाकर अपने आप से कहता हूँ—'हेमशिला तुम्हें खड्ड में जा गिराएगी !'

मैं सचमुच ही रास्ता भूल गया हूँ। अँधेरी रात और फिर पानी बरसते रहने के कारण मुझे कुछ दिखाई नहीं देता। आस-पास भी कोई दिखाई नहीं देता, जिससे रास्ता पूछूँ। 'हेमशिला' किलकारी भर, मेरा मजाक उड़ा रही है।

बहुत देर के बाद, किनारे के एक मकान में रोशनी दिखाई पड़ी। दरवाजा खटखटा, मैं भीतर घुसा। एक बूढ़े सज्जन मुँह में पाइप लटकाए एक किताब पर नजर गड़ाए थे। मैंने उनसे पूछा—'मैं ओसलो जाने के सही रास्ते पर हूँ ?'

उन्होंने उत्तर दिया—'अच्छा रास्ते निकल आए हो !'

और भटकने की उस रात तबीयत नहीं थी। मजबूर हो बूढ़े सज्जन का आतिथ्य-सत्कार ग्रहण करना पड़ा।

कहीं, तीसरे दिन शाम को जाकर, मैं ओसलो शहर में दाखिल हुआ।

'आ गए!'—सन्तोष और आश्चर्य के साथ उसने दरवाजा खोलते-खोलते कहा। अपने दोनों हाथों से कसकर, उसने मेरा हाथ दबाया। कमरे में जाते-जाते मुझे दिखाई दिया, मानों वह काँप रही है।

सोफे पर वह मेरी बगल में बैठी। अपनी बाँहें फैला, मुझे आलिङ्गन-सा करते हुए, उसने कहा—'मैं बड़ी विपत्ति में आ फँसी हूँ!'

'मामला क्या है?'

'उस रूसी ने मुझे बरबाद कर दिया!'

'तुम्हें ही उसने अपना शिकार बनाया?'

'किस बुरी तरह! अब मैं यहाँ मुँह दिखाने लायक न रही!'

'हुआ क्या है?'

'ओसलो पहुँचकर वह बुरी तरह मेरे पीछे पड़ा। एक बार सिनेमा से लौटते समय, वह मुझे यहाँ तक पहुँचाने आया। मैं उसे घर के भीतर आने देना नहीं चाहती थी, पर उसने कहा—'डरती क्यों हो? हम रूसी वहशी नहीं होते!' अपमान न करने के ख्याल से मैं उसे इस कमरे तक ले आई। उस दिन दफ्तर में मेरा बहुत-सा काम बाकी रह गया था। टाइप करने के लिए मैं उसे घर लेते आई थी। उन सरकारी कागजों में एक, उन अमेरिकन

पनडुब्बियों की फेहरिस्त थी, जो आजकल नारवे-तट के समुद्री-प्रयोगों में हिस्सा ले रहे हैं। मैंने वह कागज असावधानी से वहाँ मेज पर खुला छोड़ दिया था। रूसी तो अकेला बैठा रहा। उसके लिए मैं चाय तैयार करने गई।'

'तुमने उसका बहुत दूर तक विश्वास किया !'

'मैंने यह ख्याल नहीं किया था कि वह मेरे यहाँ रखे कागजों में से कुछ चुरा ले जायगा। पर उसका पता मुझे अगले दिन दफ्तर वापिस जाने पर लगा। उस वक्त तक, रूसी दूतावास से नॉरवेजियन सरकार के पास, उसके समुद्री-प्रयोगों में अमेरिकन पनडुबियों के हिस्सा लेने की बात के खुलासा करने की माँग आ चुकी थी। फिर, इस बात की खोज होने लगी कि रूसियों को इस प्रयोग की खबर [illegible] लगी ? गुप्तचर-विभाग का शक मेरे ऊपर गया, क्योंकि अकेले मैं ही एक रूसी के साथ देखी गई थी।'

'यह बड़ा खराब हुआ !'

'खराब ? मेरा तो सर्वनाश हो गया। अब मैं देशद्रोहिणी गिनी जाने लगी हूँ। एक सूत्र से यह भी पता चला है कि आज-कल ही मेरी गिरफ्तारी होनेवाली है।'

'फिर ?'

'इसीसे बचने का रास्ता निकालने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है। तुम अपने साथ मुझे विदेश भगा ले चल सकते हो ?'

'मैं यहाँ स्वयं विदेशी हूँ।'

'यह मैं भी समझती हूँ कि यह काम तुम्हारे बस का नहीं। फिर, उस रूसी के बताए रास्ते पर ही मुझे चलना होगा?'

'उसने कौन-सा रास्ता बताया है?'

'आज आधी रात को कोई रूसी जहाज यहाँ से बाहर जा रहा है। उसने कहा है कि मैं यदि ऑसलोफ्योर्ड के मुहाने के पास अपनी नाव पर रहूँ, तो वह मुझे वहाँ से जहाज पर ले लेगा।'

'वे तुम्हें कहाँ ले जायँगे?'

'कमलीव का कहना है कि जहाज रूसियों के अधीन के किसी जरमन बन्दरगाह में जाकर लगेगा। वहाँ से कप्तान मेरे बर्लिन पहुँचने का इन्तजाम कर देंगे।'

'फिर?'

'उसके आगे देखा जायगा। अभी यहाँ की मुसीबतों से तो बचूँ!'

कुछ देर विचार करते रहने के बाद, उसने पूछा—'तुम बर्लिन में मुझ से मिल सकोगे?'

'कोशिश करूँगा!'

'इनकार न करो। मैं बड़ी असहाय अवस्था में आ पड़ी हूँ।'

'बर्लिन आऊँगा।'—मैंने वादा किया।

'वहाँ के सदर पोस्टऑफिस के पते पर मैं तुम्हें अपना पता लिखूँगी।'

'तुम बड़े भले हो।'—कस कर आलिंगन करते हुए, उसने कहा—'कभी मैं भी तुम्हारा ऋण चुका दूँगी!'

मैं उसके साथ उसकी नाव तक गया। ओसालो टॉवर की बत्तियाँ जगमगाकर, समुद्र में अपना प्रतिबिम्ब देख रही थीं।

पर उस ओर, क्षितिज के पास की हवा तूफानों के बादल इकट्ठी करती आ रही थी। वे बादल, समुद्र की सतह तक पहुँच, हमारी ही ओर आ रहे थे।

टिपटाप, बूँदा-बूँदी भी शुरू हुई। सीग्रीद ने ऊपर की ओर देखकर कहा—'हाँ, हाँ, बरसो!'

नाव की पाल ठीक कर लेने पर, उसने मुझसे पूछा—'आते हो मेरे साथ?'

मेरे पाँव किनारे पर गँथ गए-से दीखते थे। फिर भी साहस कर मैंने पूछा—'अभी?'

उसने समुद्र की ओर इशारा किया। मैं आते तूफान की ओर देखने लगा।

'छिः! डरते हो!'—उसने तिरस्कारभरी निगाह मेरी ओर फेरी और किनारे से नाव को बाँध रखनेवाली रस्सी खोल दी।

'आओ तूफान'—उसने फिर से ऊपर की ओर देखकर कहा—'जितने गुस्से में आना हो, आओ। अब मुझे कोई परवा नहीं!'

नाव तीर की तरह समुद्र की ओर बढ़ चली।

०
० ०

जर्मन पार्लामेंट—युद्ध के पहले

अजन्ता गिरिगुहा—दूर से दृश्य
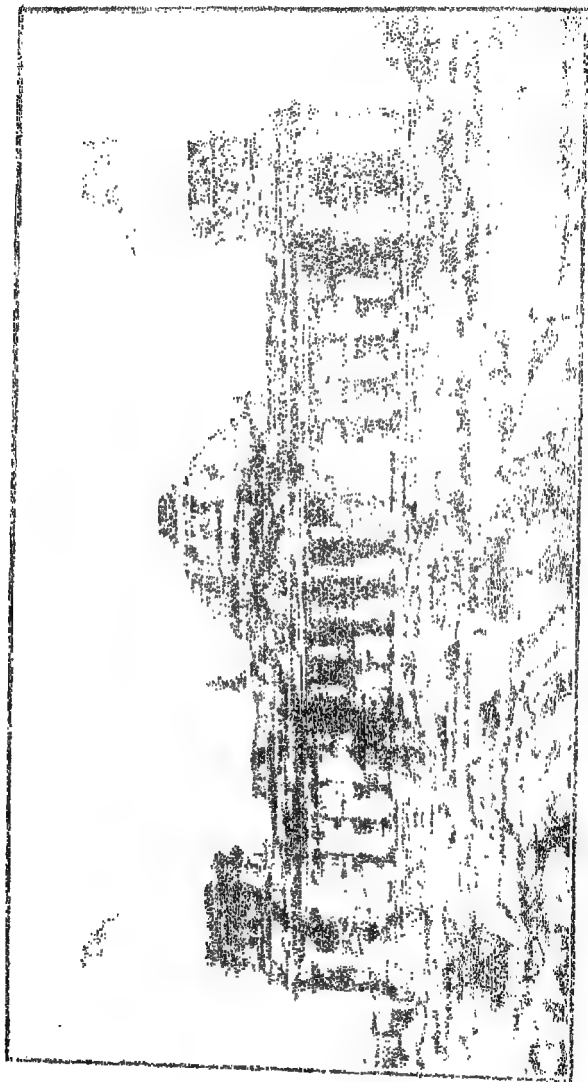
अजाने रास्ते

द्वितीय खंड

[बर्लिन]

हेलगा

बर्लिन से मैं, विद्यार्थि-जीवन के समय से ही, परिचित था। उन दिनों हमलोगों ने इस नगरी का नाम दे रखा था—सुन्दरी-निकेतन। यही कारण था कि इसकी भूमि पर आते ही पाँव काँपने लगे।

एक सहपाठिनी से मेरी बड़ी घनिष्ठता थी। बर्लिन के थियेटर, काफे, झील, उपवन—उसीने मुझे दिखाए थे। बरफ पर के खेलों की मेरी वही प्रिय संगिनी थी, जिसका साथ रहने पर, हर प्रतियोगिता में, हमारी जीत होती थी। पर, सब से अधिक गर्व मुझे उसके सौन्दर्य्य का था।

चेहरा उसका 'वेनस' की संगमरमर की मूर्ति-सा गढ़ा दीखता था, आँखें बड़ी-बड़ी और स्वच्छ नीले रंग की थीं। होंठ पतले थे, बाल सुनहले रेशम से चमकते हुए।

उसने, बहुत से युवकों को अपने पीछे, पागल बना रखा था। हमारे सहपाठियों में वैसा कोई नहीं था, जिस पर उसका जादू खाली गया हो।

उसका नाम था—हेल्गा।

सात साल बाद, मैंने आज उसके घर की घण्टी बजाई और उत्सुकतापूर्वक दरवाजा खुलने की प्रतीक्षा करने लगा।

'आप किसे ढूँढ रहे हैं?'—एक स्त्री ने खिड़की से झाँकते हुए पूछा। उसके बाल लाल थे और चेहरे पर बिखर पड़ने के बावजूद भी वे उस पर के धब्बे छिपा नहीं पाते थे। मुझे बड़ी निराशा हुई। झुँझलाहट भी आई कि आखिर उस घर में रहने का उसे क्या अधिकार है?

'कुमारी हेल्गा की तलाश में हूँ।'—मैंने उत्तर दिया।

'यहाँ कोई कुमारी नहीं रहती।'

'क्या यह कुमारी हेल्गा का घर नहीं है?'

'नहीं, इस घर की मालकिन हैं श्रीमती शूल्त्स।'

'यह नहीं हो सकता।'

'आप जरूर गलत ठिकाने पर आ निकले हैं।'

'यहाँ हेल्गा नाम की कोई नहीं?'

'हाँ, श्रीमती हेल्गा शूल्त्स।'

'तो, दरवाजा खोलिए।'

'पहले यह तो बताइए—आप हैं कौन?'

'कोई चोर या डाकू नहीं !'

'आप नाराज क्यों होते हैं ? मैंने आपको कोई जिप्सी तो कहा नहीं !'

'फिर, आप दरवाजा खोलने में हिचकती क्यों हैं ?'

'बिना आपको जाने दरवाजा कैसे खोल दूँ। आप कोई सैनिक तो नहीं ?'

'सैनिक होता तो वर्दी पहने न रहता ?'

'रूसी ?'

'नहीं, मैं रूसी भी नहीं हूँ।'

'आप समझते नहीं—आजकल, बर्लिन में, हम स्त्रियों को कितना चौकन्ना रहना पड़ता है। यहाँ आजकल सारी दुनिया के औरत-शिकारी आ इकट्ठे हुए हैं।' तब भी मुझे हिलते न देख उसने कहा—'कहीं आप उन बाघ-भालुओं के देश के तो नहीं, जिनकी याद श्रीमती ग्लूच अक्सर किया करती हैं ?'

'हाँ, हमारे देश में बाघ-भालू जरूर हैं।'

'आपने शुरू में ही क्यों नहीं कहा ? अब मैं दरवाजा खोले देती हूँ।'

घर के भीतर प्रवेश करते समय उसने मुझसे कहा—'नहीं, आप खतरनाक नहीं दीखते !'

'आपको पूरा भरोसा हो गया ?'

हँसते हुए उसने मुझे बगीचे की ओर का रास्ता दिखा दिया।

हेल्गा कसीदा किए तथा पेवन लगे लिबास में, घास पर लेटी थी। उसके शरीर का गठन पुराना ही था ; पर चेहरे पर की रौनक गायब हो रही थी। उसके यौवन की ताजगी, अब मुरझाने लगी थी।

मेरी आहट पा, उसने सिर फिराया और मुझे पहचान लिया। एक झटके में उठ खड़े होने की उसने कोशिश की, पर समर्थ नहीं हुई। उसके बदन की पहली फुर्ती और लचक उससे विदा हो रही थी।

उसने हँसने की कोशिश की, पर इसमें भी पहले जैसी लापरवाह खुशी नहीं थी। मेरा हाथ पकड़, उसने अपने पास घास पर मुझे बैठा लिया।

ध्यान से और एक बार मैंने उसका चेहरा देखा। अपनी कल्पना में अब तक उसका जो चित्र लिए चलता था, उससे वह बहुत दूर जा पड़ी थी।

'तो' चर्चा मैंने ही शुरू की—'तुम अब श्रीमती श्लुच हो!' वह जानती थी कि उस नाम से मुझे बड़ी नफरत थी। हिटलर के जमाने में वह एक नात्सी अफसर था और उसने मुझे बहुत तंग किया था।

'प्यारे दोस्त'—उसने मेरा हाथ अपनी गोद में ले, दबाते हुए, कहा- 'मेरी कहानी बड़ी दर्दनाक है।'

'ऐसा तो नहीं होना चाहिए। नात्सियों के जमाने में तो तुम्हारा सौन्दर्य आदर्श गिना जाता था।'

'मैं तुम्हें अपनी पूरी आपबीती बताऊँगी। तुम देखोगे कि मैं घृणा की नहीं, बल्कि करुणा की पात्री हूँ।'

सेब के एक पेड़ के नीचे बैठ, उसने कहना शुरू किया—'लड़ाई के जमाने में, मेरे पिता का पुस्तक-व्यवसाय नष्ट हो गया। रूसी कथाकारों की कीर्त्तियाँ छापे में रहने के कारण, नात्सी सरकार उनसे बड़ी असन्तुष्ट थी। उन्हीं दिनों, गोयबेल्स के दफ्तर से, शुल्त्ज यह समाचार ले कर आया कि यदि हमने हिटलर के प्रति राजभक्ति का पक्का सबूत न दिया, तो हमारी खैरियत नहीं। कुछ दिन बाद, उसने और भी स्पष्ट रूप से हमारे सामने रखा कि या तो मैं उसकी होकर रहूँ, नहीं तो सारे परिवार को अपनी आँखों चौपट होते देखूँ!'

'शादी तो तुम्हारी बहुत धूमधाम से हुई होगी?'

'धूमधाम का वह मौका नहीं था। पूर्वी मोर्चे पर, घमासान लड़ाई चल रही थी। शादी के तीसरे ही दिन, शुल्त्ज स्तालिनग्राद भेज दिया गया।'

'वहाँ से उसने तुम्हारे लिये बहुत-सी भेंट भेजी होगी।'

'हाँ, एक बार उसने एक हार जरूर भेजा था।'

'खूब सुन्दर?'

'मामूली, जैसा कि गाँव की औरतें, अक्सर, पहना करती हैं।'

'फिर?'

'एक दिन, बहुत से कैद रूसी सैनिक, हमारे सामने की सड़क

से ले जाये जा रहे थे। मैं, रास्ते के किनारे खड़ी हो, उन्हें देख रही थी। एक कैदी की नजर मेरे गले की हार पर पड़ी। उसने अपने एक साथी को दिखाते हुए कहा—'यह हार जरूर हमारे बीच की किसी माँ-बहन का गला काटकर छीना गया है।'

'हाँ, बहुत से जरमन सैनिकों ने ऐसा किया था।'

'मैंने वह हार टुकड़े-टुकड़े कर फेंक दिया।'

'पर, इससे तो हार छीनने के पाप का प्रायश्चित्त नहीं हुआ?'

'वह प्रायश्चित्त सब से पहले शुल्च को ही करना पड़ा। स्तालिनग्राद की लड़ाई चल ही रही थी, उन्हीं दिनों किसी गोरिल्ला ने उसका खात्मा कर दिया।'

'वह खत्म कर दिये जाने के ही लायक था!'

'पर, असली प्रायश्चित्त तो हम बर्लिन की औरतों को करना पड़ा। जिस दिन रूसी सैनिक हमारे घरों में आ घुसे थे, उस दिन की याद कर, आज भी मैं काँप जाती हूँ। उनका बरताव हमारे साथ जानवरों से भी बदतर हुआ है।'

'सच?'

'बम से बचने के लिए, हमारे इस घर में, एक खास तहखाना बना हुआ था। रूसियों को इस सड़क पर आते देख, आस-पास के घरों की भी बहुत-सी औरतों ने हमारे इस तहखाने में आश्रय लिया था। हमारी [illegible] बीस के करीब रही होगी। हम सबको [illegible] रूसी सैनिक अपने [illegible] जाने के लिए,

बाध्य करने लगे। एक ने कहा भी—'तुम्हारे मर्दों ने हमारी औरतों के साथ भी यही बर्ताव किया था।' मैं उनसे बचने के लिए आत्म-हत्या करने को तैयार होने लगी।'

'था उसका मौका?'

'क्यों नहीं? मैंने अपने बेग से एक छोटी-सी छुरी निकाली। पर, उस समय तक रूसियों ने मेरा हाथ पकड़ लिया था। छीना-झपटी में मेरी एक ऊँगली कुछ कट गयी। खून निकलने लगा। उसमें अपनी रूमाल भिँगो, मैं उसे अपने मुँह के पास ले गयी। जब रूसी सैनिकों ने बलपूर्वक मुझे अपने बस में लाने की चेष्टा की, तो मैं चिल्ला उठी—'मुझे टी० बी० है!' देखते नहीं, मैं खून उगल रही हूँ। तब मैं बच पायी। पर, और सब.........'

उसने अपना मुँह फेर लिया। कुछ देर बाद उसने कहा—'हमारे मर्दों ने जो किया, उसका प्रायश्चित्त हम जरमन औरतों को सूद-दर-सूद करना पड़ा है। रूसियों के अधिकार-क्षेत्र की बहुत कम ही जरमन औरतें भ्रष्ट होने से बच पायी हैं।'

इस बार उसने अपना मुँह घास में छिपा लिया।

पानी बरसने जैसा दीखने लगा। मैंने कहा—'चलो, घर के भीतर चलें।'

'यह घर अब मेरा नहीं रहा'—उसने कहा—'तुम जानते नहीं, नात्सियों से कुछ भी ताल्लुक रखनेवाले लोगों तक के घर, जब्त कर लिए गए हैं।'

'तुम रहती फिर कहाँ हो ?'

'वर्तमान अधिकारियों ने मेरे साथ बहुत दया का व्यवहार किया है। उन्होंने इस बगीचे के उस काठवाले मकान में, जहाँ मेरे बचपन के वक्त, मुर्गियाँ रखी जाती थीं, मुझे रहने की इजाजत दे रखी है।'

'वहाँ तुम रह कैसे पाती हो ?'

'सरदी का मौसम जब बहुत सख्त था, उन दिनों मुझे अपने सब बचे-खुचे कपड़े पहन, अधिकांश समय लेटे रहना पड़ता था ; पर, अब जब से गरमी आई है, प्रकृति भी दयालु बन गयी है।'

'और भोजन ?'

'मेरे कुछ जेवर बच रहे थे, उन्हें बेच-बेचकर आलू खरीदा करती हूँ। वे आलू भी मुझे शहर के बाहर से लाने पड़ते हैं। रास्ते में रूसी नाका पड़ता है, वहाँ बहुत बार आलू छिन जाने का डर रहता है, इसलिए थोड़ा ही थोड़ा खरीदा करती हूँ।'

'आलू पकाती कहाँ हो ?'

'इस घर की लाल बालोंवाली औरत बड़ी सज्जन है। उसे मैंने दो-एक ऊनी कपड़े भेंट किये हैं, तब से वह मेरे लिए अक्सर खाना पका दिया करती है।'

'पर, उसी से कैसे गुजारा होता होगा ?'

'हम सब [illegible] शरणार्थी बन गए हैं। हमारा काम बहुत थोड़े में चल जाता है।'

'तुम्हारा जीवन बड़ा सख्त बन गया है।'

'मेरे अकेले का नहीं, यहाँ बर्लिन में सब किसी का एक सा हाल है। जो यह सख्ती बर्दाश्त नहीं कर पाते, खुदकशी कर लिया करते हैं।'

'बहुतेरे ?'

'बर्लिन में रूसियों के आगमन के बाद से हजारों की तायदाद में औरतों ने खुदकशी की है। कुछ दिन पहले तक लोग कहा करते थे—'बर्लिन की सुन्दरियों ने इस शहर के सब पुल अपनी खुदकशी के लिए अपना रखे हैं,—मर्दों के लिए शायद ही कोई बच रहा है।'

'इस सीमा तक·········'

'फिर भी हम जिन्दा हैं !'—उसने रूखी हँसी दिखाते हुए कहा।

पॉकेट में पड़े कुछ चाकलेट निकाल, मैंने उसके सामने रखे। उसमें से एक को हाथ में लेते हुए उसने [illegible] हमारे लिये सपना बन गयी हैं। कहीं सचमुच ही मैं [illegible] तो न देख रही हूँ !'

'मेरे साथ शहर चलती हो ?'—मैंने उससे पूछा।

'शहर जाने लायक मेरे पास कपड़े नहीं हैं।'

'तुम मेरी गाड़ी में बैठी रहोगी !'

'यह अलग बात है !'

'पर क्या सचमुच तुम्हारे पास बाहर निकलने के और कोई कपड़े नहीं ?'

'आखिरी जो था, उसे एक पोल उठा ले गया। उसे भी बदनाम करने का मेरा हक नहीं है। हमारे मर्दों ने भी अपने अधीन आए देशों में ऐसे ही किया होगा !'

उसने फिर, शिर नीचा कर लिया। मैंने उसे ऊपर उठाते हुए कहा—'जरमनी ने जो भी अपराध किये, उन सब के लिए तुम अकेले अपने-आपको जिम्मेवार नहीं मान सकती ?'

वह मेरे साथ गाड़ी में आ बैठी।

लड़ाई के पहले, बर्लिन की सड़कें और वहाँ की सजावट यूरोप भर में अव्वल गिनी जाती थीं, पर आज वे सब विध्वस्त अवस्था में थीं।

'देखो न !'—उसने कहा—'कौन कहेगा कि हम तीयरगार्तेन के रास्ते गुजर रहे हैं। इस ओर देश-देशान्तर के राजदूत रहा करते थे, आज इस खण्डहर में लकड़बग्घों को भी डर लगेगा।'

'और इधर एक सुन्दर उद्यान था न ?'

'हाँ किसी एक जमाने में। बम और गोलों की मार से यहाँ के सब वृक्ष उखड़ गए। लकड़ी के अभाव में लोग उनकी जड़ें भी खोद ले गए। अब ऐसा दीखता है, मानों यहाँ बर्लिन शहर की कब्र खोद रखी गई हो !'

हम लोग 'पोत्सदाम के चौराहे' पर आ पहुँचे। किसी जमाने में मोटरों की यातायात के कारण, यहाँ सड़क पार करना मुश्किल था। अब फासले पर से एक चूहा निकलता भी दिखाई दे जा सकता था। यहाँ के मशहूर सत मंजिले चाय घर—'काफे फातर लॉंड' की सिर्फ लोहे की ठठरी बाकी बच गई दीखती थी। जिस सड़क से हम जा रहे थे, वहाँ का एक मकान भी साबित नहीं बचा था। ऐसा मालूम पड़ता था मानो हम मोहेनजोदाड़ो के खण्डहरों में आ निकले हैं।

एक गली से हमें एक रूसी सिपाही निकलता दिखाई दिया। उसकी सारी छाती तगमों से भरी थी। सीना तना था और चाल में ऐंठ थी।

उसे देखते ही हेलगा चौंक पड़ी। मुझे जकड़ते हुए उसने कहा—'जल्दी ! जल्दी से गाड़ी बढ़ाओ ! यहाँ रूसी हैं।'

'तुम्हें तो जंगली शेरों से भी अधिक रूसियों का भय लगता दीखता है।'

'मेरे भय का कारण है ! जब ये बर्लिन शहर में घुसे थे, उन दिनों की याद कर, मैं आज भी काँप जाती हूँ। शराब के नशे में क्रूर विजयी सिपाही, औरतों के लिए, बाघ-भालुओं से कहीं अधिक खूँखार साबित होते हैं।'

सदर पोस्टऑफिस के सामने मैंने गाड़ी खड़ी की। डाक देने के लिए नीचे उतरते समय, उसने कहा—'अधिक देर न लगाना।'

रूसी सिपाही के भय से वह अब भी काँप रही थी।

फ़्लश

आमीर ने एक नैश-विहार में जाने के लिए लिखा था, जिसका नाम था—'स्वर्ग'। उस स्वर्ग के पट अन्धकार होने पर ही खुला करते थे। इसमें अभी कई घण्टों की देर थी।

गाड़ी, मैंने विलहेल्म स्ट्रासे की ओर घुमाई। इसी रास्ते के एक किनारे हिटलर और दूसरी ओर गोयबेल्स के दफ्तर थे। उन दोनों दफ्तरों के सामनेवाले चौराहे पर मैंने गाड़ी खड़ी की।

'तुम्हें याद है, जब हम आखिरी बार यहाँ आए थे?'—मैंने हेल्गा से पूछा।

'भूली नहीं हूँ!'—गाड़ी के कोने में मुँह छिपाते हुए उसने उत्तर दिया—'आज वही अभिशाप फल रहा है।'

जंग छिड़ने के पहले की थी। हम कॉलिज से लौट आ रहे थे।

हिटलर की अभ्यर्थना में निकला, विद्यार्थियों का मशालोंवाला जुलूस हमारे आगे-आगे जा रहा था। इस चौराहे तक पहुँचने पर भीड़ इतनी इकट्ठी हो गई थी कि उसे पार कर, आगे निकलना मुश्किल था। हम रास्ते के एक किनारे जा खड़े हुए।

जुलूस और भीड़ के लोग तरह-तरह के नारे लगा रहे थे। हिटलर भी दर्शन देने के लिए बालकोनी पर आ निकले। उनके जयजयकार से सारा इलाका गूंज उठा।

जुलूस द्वारा रास्ता रुका रहने के कारण, बहुत से राहगीर हमारे आसपास इकट्ठे हो गये थे। उन लोगों में एक हमारे पुराने प्रोफेसर थे, जो अब कॉलेज से निकाल दिए गए थे। अब उनकी छाती पर एक तख्ती लटक रही थी, जिस पर लिखा था—'यहूदी।'

बहुत कोशिशें करने पर भी प्रोफेसर अपने को भीड़ में छिपा नहीं पाए। जुलूस से मशाल लिए उनका एक पुराना विद्यार्थी, उनके सामने खड़ा हो, उन्हें फटकारने लगा—'तुझे इस आर्य सड़क पर आने की कैसे हिम्मत हुई ?'

'भूल से इधर निकल आया हूँ।'—प्रोफेसर ने क्षमा माँगते हुए कहा।

'पर तुम्हारी इस हिमाकत के लिए मैं तुम्हें सजा दूँगा।'—विद्यार्थी ने कर्कश स्वर में कहा।

प्रोफेसर सिर नीचा कर, उसके सामने, खड़े हो गए।

'मैं तुम्हारी दाढ़ी में आग लगाऊँगा।'—कहता हुआ वह

विद्यार्थी अपनी मशाल प्रोफेसर के मुँह के पास लाने लगा। हेलगा उस विद्यार्थी से कहने लगी—'फ़ितूच! क्या पागलपन कर रहे हो।'

'चुप रह'—डपटता हुआ फ़ितूच आगे ही बढ़ता गया। भीड़ के कई आदमियों ने उसका मशाल छीन लिया। तब भी फ़ितूच प्रोफेसर पर, तमाचे और घूँसे चलाने लगा। बड़ी मुश्किल से हमलोग प्रोफेसर को अपनी आड़ में ला, बचा पाए। उनके चेहरे की कई जगहों से खून निकलने लगा था। बिना उसकी परवा किए, उन्होंने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और कहा—'एक दिन इस मशाल की आग सारे जरमनी को भस्म कर देगी!'

हेलगा को आज उसी अभिशाप की याद आ रही थी। हमारे चारों तरफ़ की इमारतें विध्वस्त हो चुकी थीं। हिटलर की 'बालकोनी' जले कोयले-सी दीख रही थी। उससे भय खाते हुए हेलगा ने गाड़ी में सिमटते हुए कहा—'मैं यहीं रहूँगी।'

मैं हिटलर के दफ्तर की सीढ़ियों की ओर बढ़ा। उसके एक किनारे, गन्दे लिबास में बैठा एक लम्बा जरमन उठ खड़ा हुआ। मेरे सामने आ उसने कहा—'अगर आपकी मर्जी हो, तो मैं यह ऐतिहासिक जगह आपको घुमाकर दिखाऊँ। मेरा नाम है कुर्त। हिटलर के जमाने में मैं यहाँ किरानी का काम कर चुका हूँ, अब यहाँ का 'गाइड' हूँ। मेरी फ़ीस है दो सिगरेट।'

मैंने उसे सिगरेट दिए। उन्हें एक डिबिया में तह के तेवर की

तरह सावधानी से रख, वह आगे बढ़, बयान करने लगा—'इस हॉल में हिटलर के व्यक्तिगत सलाहकार एकत्र हुआ करते थे और इस ओर उसका वह कमरा है, जहाँ से वह हुक्मनामे जारी किया करता था। मैं तीस अगस्त १९४९ को इसके दरवाजे पर खड़ा था। उस दिन तीन बजे दिन को रिबनभाप उत्तेजित हुआ हिटलर के कमरे से निकला था और उसने ऐलान किया था—'इतालियन बैठे रहें, हम लड़ेंगे।' फिर, तीन बजकर पाँच मिनट पर फील्डमार्शल काइटल निकले, जिन्होंने यहाँ खड़े कर्नल को अगले दिन पाँच बजे के पैंतालीस मिनट पर, पोलैण्ड पर हमला करने का हुक्म जारी करने के लिए कहा था।'

कुर्त की आवाज कुछ काँप-सी रही थी, मैंने कारण पूछा। उसने कहा—'वे ही मुहूर्त थे, जब जरमनी ने सत्यानास की ओर पाँव बढ़ाया था।'

हम लोग हिटलर के कमरे में घुसे। कमरा काफी बड़ा था, उसके बीच खड़े हो कुर्त कहने लगा—'इसी जगह वह मेज थी, जिस से हिटलर अपने फरमान निकाला करता था। अब वह मेज रूसी उठा ले गए हैं। मैंने सुना है, उस पर वे स्तालिन की मूर्ति रखते हैं।'

इधर से हम लोग बगीचे की ओर जा निकले। किसी जमाने में शायद यहाँ बगीचा रहा होगा, इस समय चारों तरफ गोलों से बने खड्ड दिखाई देते थे। उन्हीं खड्डों के बीच एक खड़ी गुमटी

की ओर संकेतकर, कुर्त ने कहा—'इसके नीचे हिटलर के छिपने का तहखाना था। इसी गुमटी के दरवाजे पर हिटलर और उसकी बीबी ईवा की लाशें जलाई गई थीं।'

उसने एक लम्बी साँस ली। मैंने पूछा—'क्या हिटलर के जलने का अफसोस है?'

'नहीं'—उसने उत्तर दिया—'जरमनी के जलने के कुछ पहले अगर हिटलर जल चुका होता, तो जरमनी की ऐसी जबर्दस्त बरबादी न होती।'

वह मुझे उस ओर ले गया, जहाँ हिटलर के अङ्गरक्षक रहा करते थे। इस समय वहाँ खण्डहरों के स्तूप लगे थे। उन्हीं स्तूपों में से एक के सामने, अपनी हैट हाथ में लिए, एक आदमी खड़ा था। वह बारबार आगे बढ़ता, सिर झुकाता और हँसा करता। कुर्त ने उसकी पीठ पर हाथ रख कहा—'बस, आज अब बस करो कप्तान! घर जाने का वक्त हुआ।'

'सच?'—कप्तान ने उत्तर दिया—'मैं घर वापिस आया हूँ! कितना खुश हूँ! मुझे अपनी प्रेयसी दिखाई पड़ी है। मैं उसे फौजी सलामी दूँगा।' वह हिटलरगार्ड की तरह ऐंठ-ऐंठ कर मार्च करता आगे बढ़ा।

'यह पागल तो नहीं?'—मैंने कुर्त से पूछा।

'नहीं, सिर्फ उस स्तूप के सामने आने पर वह वैसा व्यवहार करता है।'

'इसकी वजह ?'

'मैं आपको बताऊँगा।' वह स्वयं एक स्तूप पर जा बैठा। मैंने उसे एक सिगरेट और दी। उसे सुलगा, एक कश ले, वह कहने लगा—'उस आदमी का नाम है मितूच। लड़ाई के बहुत से मोर्चों पर उसने बड़ी बहादुरी के कारनामे दिखाए थे। हिटलर ने स्वयं अपने हाथ से उसके सीने पर बहादुरी का तमगा लटकाया था; रूसियों के बर्लिन के फाटक पर, आ पहुँचने पर भी उसने हथियार नहीं रखा। सिर्फ जब उसके पास की सब गोलियाँ खत्म हो गईं, तभी रूसी उसे बन्दी बनाने में समर्थ हुए। फिर बन्दियों के एक गिरोह के साथ वह रूस की ओर रवाना किया गया। रास्ते में उसने भूख, गरमी, सब खुशी-खुशी बर्दाश्त की। पर, एक दिन कुछ पीछे पड़ जाने पर एक कज्जाक ने उसे एक ठोकर लगाते हुए कहा—"चलता क्यों नहीं, तू तो मालिक-जाति का आदमी है न!'

'उस कज्जाक के और सब साथियों ने भी उसे हँसते-हँसते एक-एक ठूँठ जमायी। उसके बाद कई दिन तक मितूच मूक बना रहा। फिर एक दिन वह अपनी सारी शक्ति लगा किसी कदर रूसियों की पकड़ के बाहर निकल आया। लौटा सीधे यहाँ। जहाँ यह स्तूप है, वहीं उसका मकान था, जिसमें उसकी बीबी रहती थी। सब श्मशान बना देखकर भी मितूच रोया नहीं। कुछ देर मूक खड़ा रहा और फिर हँसा। तब से वह रोज एक बार यहाँ
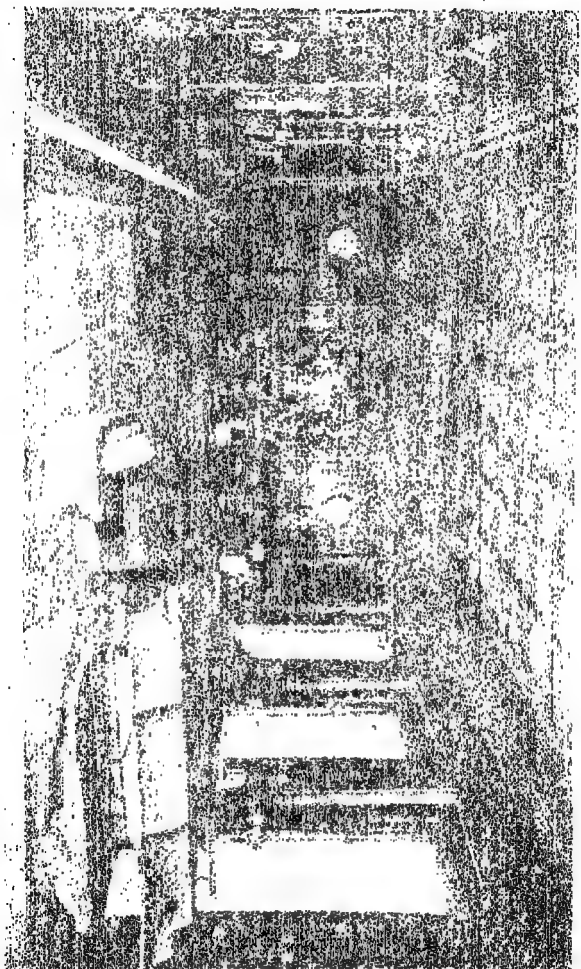
बर्लिन में हिटलर के काम करने का कमरा—जो अब नहीं रहा.

बम-वर्षा के समय—हिटलर का संरक्षण-स्थान—कहा जाता है कि मरने के बाद वहीं वह जलाया भी गया।
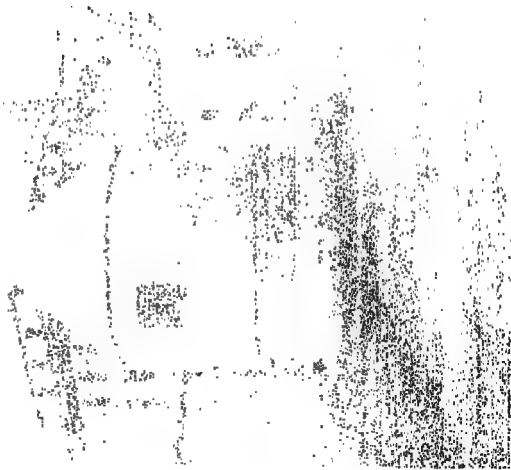
आया करता है। अपनी बीबी से मिलने की भङ्गिमा दिखाता और हँसा करता है।

मुझे और कुछ आगे तक पहुँचा, कुर्त दूसरे लोगों को 'हिटलर-भवन' दिखाने वापिस चला गया।

सड़क पर वापिस आने पर मुझे फिर से फ़ित्च दिखाई पड़ा। उसके हाथ में एक पत्थर था, जिसे उछाल-उछालकर वह एक ही कहानी बार-बार कह रहा था—'जब मैं कुछ छोटा था, तो मैं विदेशियों के साथ और मेरी सङ्गिनी गेंद के साथ खेला करती थी। अब मैं गेंद खेलता हूँ और मेरी सङ्गिनी विदेशियों के साथ! हा, हा, हा!'

मेरे पीछे-पीछे वह मेरी गाड़ी तक आया। आगे बढ़, बड़े अदब से उसने मेरे लिए गाड़ी का फाटक खोल रखा। मेरे भीतर घुस जाने पर, उसकी निगाह हेलगा पर पड़ी। अपना हैट हाथ में ले, बड़े अदब से उसे सलाम करते हुए फ़ित्च ने कहा—'शायद, मैं आपसे परिचित हूँ! आप मेरे एस. एस. सरदार की बीबी साहिबा तो नहीं हैं?'

हेलगा ने झटके से फाटक बन्द कर लिया और मुझे गाड़ी आगे बढ़ाने के लिए कहा। फ़ित्च कहता रहा—'आप डरिए नहीं, रूसी जरूर सुन्दरियों की कदर करते हैं। आपको यदि उनके हवाले करूँ, तो वे मुझे एक बोतल वोदका जरूर भेंट करेंगे। पर आप ही मुझे कुछ पीने के लिए दे दीजिए, मेरी जबान बन्द रहेगी!'

'नीच, पतित'—हेल्गा के मुँह से निकला। मैंने गाड़ी आगे बढ़ाई। वह कहती गई—'अब मैं और कभी घर के बाहर न निकलूँगी!'

कुछ दूर आगे बढ़ने पर उसने मुझे बताया—'यह वही मितृच है, जो उस बार प्रोफेसर की दाढ़ी जलाना चाहता था। इन्होंने किसी भी जरमन को मुँह दिखाने लायक नहीं रहने दिया!'

फिर उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढँक लिया।

○
○ ○

रात्रि-स्वर्ग-विहार

नैशविहार यूरोपीय जीवन में बड़े मार्के की प्रधानता रखते हैं। एक तरह से उन्हें ही हम पश्चिमी सभ्यता का हृदय कह सकते हैं। इसीलिए चाहे लड़ाई हो या शान्ति, वहाँ का बाजार एक-सा ही गुलजार रहता है।

बर्लिन के नैशविहार यहाँ के कुरफुर्सतेनदाम के इलाके में केन्द्रित रहते आए हैं। इसलिए इस इलाके के नाम में ही जरमन लोगों को एक ऐसी ध्वनि सुनाई देती है कि उनका हृदय तीव्र गति से फुदकने लगता है।

बमबाजी के कारण कुरफुर्सतेनदाम के भी बहुत से मकान टूट गए थे। पर सब से पहले मरम्मत किए जानेवाले भी वे ही थे। बर्लिन की और सड़कों की तुलना में यहाँ की सड़कों पर फिर सब से अधिक रोशनी जगमगाने लगी थी।

अजाने रास्ते

लड़ाई के बाद की बर्लिन का हृदय फिर से कुरफुर्सटेनडाम ही बनने लगा था।

'आओ, ताहीती चलें'—सङ्गीत के साथ एक सुन्दरी का यह गान दूर से सुनाई दिया। जिस घर के भीतर से यह आवाज आ रही थी, उसके दरवाजे पर रंग-बिरंगी बिजली चकमक कर रही थी। उसके ही प्रकाश में लाल और नीले अक्षरों में लिखा था—'स्वर्ग'।

राजा-महाराजाओं जैसी चकचक पोशाक पहने एक दरबान आगे आया। उसने बड़े अदब से मेरी गाड़ी का दरवाजा खोल, मुझे नीचे उतारा। फिर उसी तहजीब से 'स्वर्ग' का फाटक खोलते हुए कहा—'हार्दिक स्वागत।'

भीतर के हॉल में फीके रङ्ग की गुलाबी रोशनी छिटक रही थी। चारों तरफ की दीवारों पर पिकासो के ढङ्ग की चित्रकारी में नर्तकियाँ दिखायी गयी थीं। उन्हीं नर्तकियों में एक की भङ्गिमा अपनाते हुए एक दुबली-पतली लड़की घूम-घूम कर गा रही थी—'आओ, ताहीती चलें……।'

एक किनारे, जहां कुछ अँधेरा-सा था, 'बार' की ऊँची मेज लगी थी। उसके पीछे बैठी पुतली-सी दीखनेवाली एक लड़की आँखें दबा-दबा कर लोगों को अपने पास आने और पीने का आमन्त्रण दे रही थी। उसीसे मैंने सीग्रीद के बारे में दरियाफ्त किया।

युद्ध के बाद का कुरफुर्स्तेनदाम !

बर्लिन के नरविहार का केन्द्र—कुरफुर्स्तेनदाम (युद्ध के पहले)
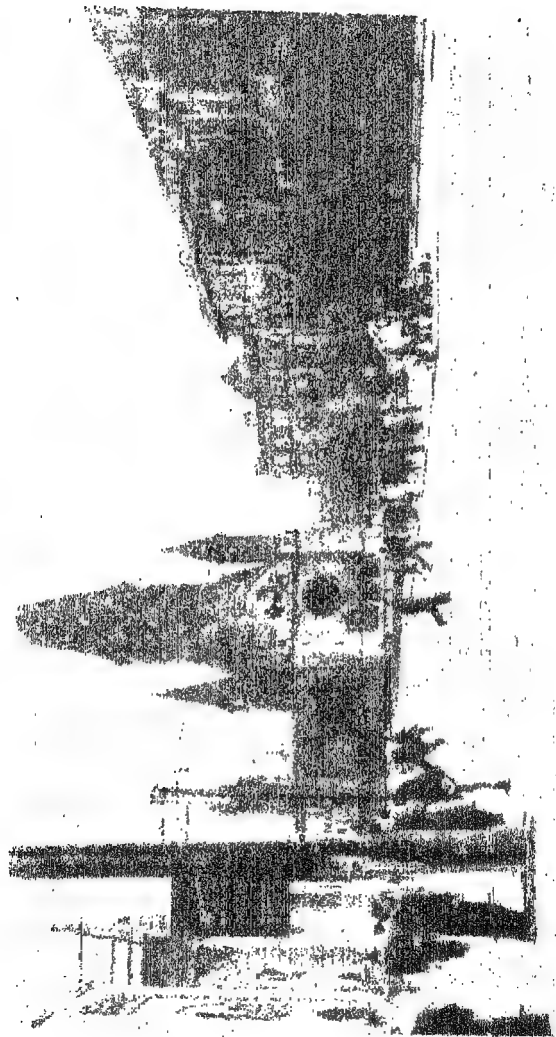
'मैं हूँ उसकी दोस्त सुसाना!'—उसने उत्तर दिया—'आप बैठिए, वह आ ही चली।' फिर अपने सामने की बोतलों की कतार की ओर मेरा ध्यान खींचते हुए पूछा—'कौन-सी किस्म आपको पसन्द आएगी?'

मुझे कोई जवाब न देता देख, उसने स्वयं ही कहा—'यह कॉकेशियन शराब बड़ी लाजवाब है। आप मेरे चुने हुए अतिथियों में स्थान रखते हैं, आपकी मैं उसीसे खातिरदारी करूँगी।' एक चमकती बोतल खींच उसने दो ग्लास भरे और एक अपने होंठ के पास ले जाते हुए कहा—'आपकी अगवानी के उपलक्ष में......'

सीग्रीद जिस समय वहाँ आई, उसे एक-ब-एक पहचान लेना मुश्किल था। इस समय उसके शरीर पर आर-पार दिखाई देनेवाली शाम के समय की रेशमी पोशाक थी। वह भी काफी चुस्त; और, और उसके शरीर के रङ्ग से मिलती-जुलती-सी।

सुसाना ने उसे अपनी बगल में बैठाया और हिसाब लिखनेवाली एक किताब उसके हाथ में देते हुए कहा—'देखा किसी एक के पल्ले पड़े बहुत-से मर्दों का हिसाब रखना ही तुम्हारा शौक है!'

इस बार अपने सामने देखने पर सीग्रीद की निगाह मेरे ऊपर पड़ी। क्षणभर के लिए वह कुछ झेंपती-सी जान पड़ी, पर तुरत ही अपने को सम्हाल, मीठी मुसकान दिखाते हुए कहा—'आ गए, मेरे प्यारे!'

उसके मुँह से वैसे शब्द निकलते देख मुझे आश्चर्य हुआ। फिर

भी उसके चेहरे में अपनापन से भरा खिंचाव दिखाई दिया। मैंने पूछा—'अब तो तुम खुश हो ?'

'नहीं जानती, शायद !'—उसने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया।

'मैं तुम्हारी शुभकामना चाहता हूँ।'—कह, मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया।

'तुम मुझे छोड़े जा रहे हो ?'—उसने चकित हो पूछा।

'तुम्हें मन के लायक काम मिल गया है, अब मुझे भी अपने काम के लिए इजाजत दो !'

'मुझे यहाँ बड़ा डर लगता है।'—मेरी बाँह पकड़, उसने कहा—'यहाँ मुझे बेतरह पीना पड़ता है। मुझे डर लगता है, किसी दिन मैं नीचे न लुढ़क पड़ूँ।'

'नीचे लुढ़क जाना कोई अपराध नहीं !'—सुसाना ने कहा—'सिर्फ यह खयाल रखना कि कोई तुम्हें ठगकर न निकल जाए !'

'अब मैं मदशाला की बाला हूँ।'—अपना चेहरा एक शीशे में देख, उसने कहा और मेरी ओर फिर दोहराया—'मुझे अकेला न छोड़ो, प्या...'

ज्यों-ज्यों रात बीतने लगी, मदशाला के अतिथियों का जमघट बढ़ता गया। नाच-घर की रोशनी धीमीकर संगीत का जोर बढ़ा दिया गया। लोग बहुत आनन्द से, जोड़े-जोड़े बन, नाचने लगे। बाहर-बाहर से जैसा दिखाई पड़ा था, उससे यहाँ का दृश्य बिल्कुल अलग था।

'ये सब जरमन हैं ?'—मैंने सीग्रीद से पूछा।

'हाँ'—उसने उत्तर दिया—'सब के सब !'

'मालूम नहीं पड़ता कि ये लड़ाई में हारे हुए लोग हैं !'

'लड़ाई से इन्हें क्या ताल्लुक ?'

'क्यों ? बम और गोलों की मार से इनके घर भी तो उजाड़ जरूर हुए होंगे, शायद निकट-सम्बन्धी भी मरे होंगे !'

'तो क्या उसी चिन्ता में ये अपना आनन्द भुला दें ? तुम भी कैसी बातें करते हो !'

'फिर, ये हैं किस श्रेणी के लोग ?'

'अधिकांश चोरबाजार के सरदार !'

उसने मुझे एक बड़ी-सी मेज के चारों ओर बैठे लोगों की ओर [illegible] सब के पॉकेट नोटों से भरे हैं। उन [illegible] की ही तरह सुई से सौन्दर्य तक—सब चीजें खरीद सकते हो। देखो, उन्हें ही खुश रखने के लिए, उस ओर, बर्लिन की सुन्दरियों की जमात आ बैठी है। चलो, उनसे तुम्हारा परिचय करा दूँ; इसमें कोई हर्ज नहीं।'

ये चोरबाजार के लोग, अपने-अपने पसन्द की सुन्दरियों को ले, वहाँ से जाने लगे। उस समय कुछ विचित्र ढंग के दीखनेवाले दो आदमी वहाँ शामिल हुए। वे दोनों जोरों से हँसते और बेतरह पाँव पटकते [illegible] आए थे। बिना इधर-उधर देखे, वे सीधे मद बेचनेवाले मञ्च के सामने की तिपाइयों पर जा बैठे। उन्होंने मद

बेचनेवाली लड़कियों से माँग पेश की—'सब से तेज शराब ले हमारे पास आ बैठो !'

'अभी हाजिर हुई, कर्नल !'—कह सुसाना एक खुली बोतल लिए एक की गोद में जा बैठी ।

'और तू क्यों नहीं आती ?'—दूसरे ने सीग्रीद से पूछा ।

'मैं तुम्हें यहीं से जो भी शराब चाहिए, देती हूँ ।'

'नहीं, तुम्हें मेरे पास आना पड़ेगा !'

'वहाँ मैं नहीं आती !'

'मेरा यह अपमान ? तू जानती नहीं, मैं कौन हूँ ?'

'किसी शैतान के बच्चे से दीखते हो !'

'तुमने गलत समझा !' अपनी जबर्दस्त मुट्ठी दिखाते हुए उस आदमी ने कहा—'मैं हिटलर के जमाने में शैतान से भी ऊँचा ओहदा रख चुका हूँ । मैं गेबलिन कैम्प का सरदार था, जहाँ हजारों की तादाद में लोग जिन्दा जलाए जाते थे । मेरा नाम है स्वार्च !'

सीग्रीद अपनी जगह से पीछे हटने लगी । स्वार्च कहता गया —'उस कैम्प में जब कभी तेरी जैसी चुड़ैल आग में झोंकी जाती, तब मैं हँसे बिना नहीं रहता था !' और असल में ही वह डरावनी हँसी हँसने लगा । सीग्रीद मैनेजर के कमरे की ओर भाग निकली ।

स्वार्च हँसता रहा ।

स्वार्च को उठते देख, मैं मैनेजर के कमरे में गया । उस ओर

श्वार्च आया नहीं। मैंने मैनेजर से पूछा—'आपके यहाँ हिटलर के जल्लादों की भी खातिरदारी होती है?'

'हमारा दरवाजा सब के लिए खुला है—चाहे वे जल्लाद हों, या फ़िरिश्ते!'

'फौजी हुकूमतें इसमें कोई दखल नहीं देतीं?'

'क्यों दखल दें? उनके सदस्यों के लिए भी हमारा दरवाजा खुला है। हमारे यहाँ रूसी और अमेरिकन—दोनों ही फौजी हुकूमतों के अफ़सर अक्सर आया करते हैं।'

इसी समय सुसाना कहते आई—'यह श्वार्च अपना बिल नहीं चुका रहा है।'

'क्यों चुकाऊँ!'—श्वार्च ने हॉल के बीच से ही कहा—'तुमने शराब बेचने के लिए एक चुड़ैल रख छोड़ी है!'

'मैं उसे आज ही निकाल बाहर करता हूँ!'

मैनेजर ने उसे विश्वास दिलाया—'आप आज का उसका कसूर माफ़ कर दें।'

श्वार्च अपने साथी के साथ जिस तरह पाँव पटकता आया था, उसी तरह बाहर निकल गया। मैनेजर ने उस मदिरालय में काम करनेवाले लोगों को सुनाते हुए कहा—'जिन्हें हमारे पुराने अतिथियों को पिलाने की तमीज नहीं, वे यहाँ न आया करें।'

मदिरालय बन्द किया जाने लगा। सीग्रीद एक कुर्सी पर आँखें बन्द किए बैठी थी। मैंने उसे उठने के लिए कहा। वह

मेरा सहारा ले उठ खड़ी हुई। हमारे चलते-चलते मैनेजर ने पीछे से टोका—'पर आप लोगों ने मेरा बिल नहीं चुकता किया !'

उसने मेरे हाथ में बिल का कागज दिया। उसे गौर से देख, मैंने पूछा—'तीन हजार मार्क !'

'उसमें 'सर्विस' की छः सौ वाली रकम शामिल नहीं की गई है।'

'यह रकम तो ईमानदारी से कमानेवाले चुकता नहीं कर सकते।'

'उनकी यह जगह भी नहीं! आपको पता नहीं कि आप कहाँ आ निकले हैं ?'

बहस करना बेकार था। सीग्रीद भी बार-बार कह रही थी—'मेरे पाँव लड़खड़ा रहे हैं। अब मैं अपने को और नहीं सम्हाल सकती !'

मेरी जेब में विदेशी नोट थे, जिनकी कीमत जरमनी में सोने के बराबर समझी जाती थी। उन्हें, मैंने मैनेजर को देते हुए कहा—'यह अभी जमा रखिए, हिसाब और एक बार आकर मैं करूँगा !'

वह राजी हो गया। उसका इशारा पा, दरबान ने भी हमलोगों के लिए दरवाजा खोल रखा। उसे बख्शीश देने के लिए, मेरे पास कुछ बचा नहीं था। उसने हमारे पीछे, दरवाजा बन्द करते हुए कहा—'ये विदेशी भी दरिद्र ही हैं !'

बाहर निकलकर मैंने देखा, मेरी गाड़ी का कहीं पता नहीं था। आस-पास कोई था भी नहीं, जिससे कुछ पूछताछ करता। फाटक पर का दरबान भी इस समय तक गायब हो चुका था।

'मेरे पाँवों में और बल नहीं रहा !' सीग्रीद कह रही थी—'तुम मेरा बोझ कहाँ तक ढोओगे ?'

'चलो !'—मुसाना ने पीछे से कहा—'मेरे घर इसे ले चलो !'

'दूर तो नहीं ?'

'नहीं, अगले घुमाव के पास है ।'

उस ओर मैंने देखा, उजाला हो चला था ।

घुमाव के पास, हमें काम पर जानेवाली औरतों की एक जमात दिखाई पड़ी । सीग्रीद की ओर देख, उन्होंने कहा—'रेशमी सौन्दर्य ! काम हम करती हैं और मौज ये···!'

सीग्रीद, मेरी बाँह का सहारा ले, लटक-सी रही थी । उसने मुझसे पूछा—'तुम भी मुझसे घृणा तो नहीं करने लगे ?'

o
o o

सुसाना

सुसाना के घर को कन्दरा कहा जा सकता था। हवाई आक्रमण से ध्वस्त किए गए मकानों के अवशेष से यहाँ ऊँचा टीला बन गया था। टीले के सब से निचले भाग में, जहाँ किसी समय तहखाना-सा बना था, वहाँ का कूड़ा हटाकर, सुसाना ने अपने रहने का घर बना लिया था।

सड़क की ओर झाँकनेवाली खिड़कियों में काँच के बदले कार्ड-बोर्ड लगा था। देवदार के बक्सों से काम ले चारपाई, मेज और तिपाइयाँ तैयार की गई थीं। पुराने अखबारों से काट-काटकर चित्र दीवालों पर साट दिए गए थे, जिनसे कमरे की बदसूरती बहुत कुछ छिप जाती थी।

'तुम्हारे लिए अच्छी काफी तैयार कर लाती हूँ!'—कह सुसाना कमरे के बाहर गई। दरवाजा उसने खुला रहने दिया। उधर से ही कमरे में रोशनी आने लगी।

अपने चारों ओर देख, सीग्रीद ने मुझसे पूछा—'किसने मुझे यहाँ ला पटका?'

'तू तो खुद अपनी मर्जी से यहाँ आई!'

'अपनी मर्जी से?'—रूखी हँसी दिखाते हुए उसने कहा—'गलत! मेरा दुर्भाग्य मुझे यहाँ घसीट लाया है।'

'नात्सियों ने तुम्हारी कोई मदद नहीं की?'

'मदद? उनके पाले पड़ने से बचने के लिए ही मैं उस मदिरालय में घुसी थी।'

'यह काफी पी लो!'—सुसाना ने कमरे में प्रवेश कर कहा—'तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी।'

काफी पीने के कुछ ही देर बाद, सीग्रीद को नींद आने लगी। सुसाना की इजाजत ले, वह उसकी चारपाई पर लेट गई। कुछ ही मिनट बाद, उसे गहरी नींद आ गई।

'मेरी गाड़ी का कैसे पता लगेगा?'—मैंने सुसाना से पूछा।

'बिना पहरे के, बाहर गाड़ी छोड़, तुमने खुद गलती की।'

बाहर से दरवाजा खटखटाकर एक आदमी भीतर घुसा। उसके हाथ में एक सूटकेस था। सुसाना ने उससे कहा—'तुम बेधड़क सामान मेरी चारपाई के नीचे रखो। ये हमारे अपने आदमी हैं।'

उस आदमी ने सूटकेस से तरह-तरह की चीजें निकालीं—सिगरेट, काफी, साबुन, चीनी, चाकलेट, आदि। ये चीजें सारे

जरमनी से लुप्त हुई गिनी जाती थीं। पर सब से अधिक मुझे ताज्जुब हुआ अपना वह चमड़ेवाला बैग देखकर, जिसे मैंने अपनी गाड़ी में छोड़ दिया था।

सूटकेस खालीकर वह आदमी सुसाना के हुक्म की प्रतीक्षा करने लगा। सुसाना ने उसे कुछ देर बाद फिर आने के लिए कहा।

मुझे कमरे में लाए गए सामान पर निगाह गड़ाए देख, वह हँसी। उसकी यह हँसी अनोखी थी, मानों वह मेरे ऊपर अपना जादू फैलाने की कोशिश में हो।

हिम्मत बाँध मैंने कहा—'अपनी गाड़ी की चोरी की बाबत में पुलिस में इत्तिला देने जाता हूँ।'

चौकन्ने होते हुए-से उसने कहा—'तुम हम सब को फँसाना चाहते हो?'

'तुम्हें क्यों डर लगता है?'

'अब तुम जान गए हो कि हमारा ताल्लुक चोरबाजार से है।'

'पर मेरे लिए दूसरा उपाय ही क्या है?'

'चुपचाप बैठे रहना।'

'यह कैसे?'

'मदिरालय की किसी लड़की पर इलजाम लगाना तुम्हें शोभा नहीं देता। उनका सब कुछ पहले से ही लुटा-लुटाया होता है।'

बाहर से दरवाजे पर कई आदमियों के पहुँचने की आहट

आई। सुसाना ने उन्हें भीतर आने के लिए कहा। वे आदमी अच्छे ढङ्ग के नहीं दिखाई दिए।

'आप मेरी गाड़ी मँगवा दें !'—मैंने सुसाना से कहा।

'मैंने आपको पहले ही जवाब दिया है कि आपकी गाड़ी की बाबत मैं कुछ भी नहीं जानती !'

'लेकिन, गाड़ी का सामान आपकी चारपाई के नीचे रखा गया है !'

'यह हिमाकत !'—कह, वह उन आदमियों को साथ लेते बाहर गई। वहाँ वे आपस में राय-मशविरा करने लगे।

कुछ देर बाद, उनके झगड़ने की-सी आवाज आई। एक आदमी घर के भीतर कहते घुसा—'लेकिन, हमें तो अपना हिस्सा चाहिए ही !'

सुसाना तमतमाई हुई-सी आई। उसने अपने सिरहाने की सन्दूक से नोटों का एक बण्डल निकाल, उस आदमी की ओर फेंकते हुए कहा—'चला जा यहाँ से !'

उस आदमी के बाहर चले जाने पर, उसने अपना दरवाजा कसकर बन्द कर लिया।

सीग्रीद जग पड़ी थी। उसकी ओर देख सुसाना ने कहा—'चोरबाजार का सौदा मैं खरीद-बेच सकती हूँ, पर उसीके लिए खून करना—यह मुझसे नहीं हो सकता !'

सीग्रीद ने मुझे अपने पास आ, बैठने के लिए कहा। उसने

मेरा गला अपनी ओर खींचा। सुसाना कहने लगी—'तुम दोनों को सुखी देख, मुझे बड़ी ईर्ष्या होती है।'

'मुझे तू सुखी कहती है?'—सीग्रीद ने उससे पूछा।

'तू जरूर सुखी है।'—सुसाना ने नीची निगाह किए हुए ही कहा।

कुछ देर चुप रहने के बाद, सुसाना ने स्वयं ही मुझ से कहा—'तुम्हें पुलिस को खबर देने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी गाड़ी वहीं खड़ी मिलेगी, जहाँ तुमने उसे कल छोड़ा था।'

उसने हम लोगों की खातिरदारी शराब और केक से की, फिर विनयपूर्वक कहा—'मुझसे घृणा न करना।'

'तुमसे घृणा करने का तो कोई कारण ही नहीं!'

'अगर मेरी पूरी कहानी जान लोगे, तो सचमुच ही तुम मुझे, मेरे अपराध के लिए, क्षमा करोगे।'

कुछ देर अपने आप को कोसते रहने के बाद, सुसाना ने अपने जीवन की कहानी, कह सुनाई। उसकी कहानी लड़ाई के बाद की उन सैकड़ों बर्लिन की युवतियों के ही समान थी, जिन्हें युद्ध-जनित परिस्थितियों ने एक विचित्र ढंग के अंधेरे संसार में उन्हें ला ढकेला था।

लड़ाई छिड़ने के कुछ महीने पहले उसे, हवाई दफ्तर से सम्बद्ध एक विभाग में, टाइपिस्ट का काम मिला था। रूसी फौज के बर्लिन शहर में दाखिल होने के दिन तक, वह उसी दफ्तर में काम

करती रही। रहती वह उस दफ्तर के पास के ही एक मकान में थी। जब रूसी फौज उधर से गुजर रही थी, तब उसपर उस मकान की छत से एक ईंट आ गिरी थी। फिर रूसियों ने उस घर की अच्छी तरह तलाशी ली। रसोईघर का सारा सामान तोड़ डाला, आलमारियाँ जला दीं। घर भर में उन्हें सुसाना के सिवा और कोई जीव नहीं मिला। वे उसे घसीटकर पीछे के बगीचे में ले गए। वहाँ तीन सैनिकों ने उसे भ्रष्ट किया। वे उसे एक तहखाने में बन्द रखने जा रहे थे, पर एक अफसर को कुछ दया आ गई। उसने सुसाना को अपने घर में दाई और रखैलिन की तरह रखा। फिर उस अफसर की बदली हो गई। एक सन्तान को जन्म देने की आशंका से, नए अफसर ने उसे घर से निकाल दिया। तब अपनी बची-खुची खूबसूरती बेचने, वह 'स्वर्ग' में जाने लगी।

'तेरा स्वर्ग से पाला छूटा, यह अच्छा हुआ'—उसने सीग्रीद को विदा देते हुए कहा—'कुछ आदमीयत इस दुनिया में बची देख, मुझे भी खुशी होती है।'

अपने दरवाजे पर आ, हमें विदा दे देने के बाद, उसने एक लम्बी साँस ले, कहा—'फिर भी मैं कैसी अभागिन हूँ!'

○

○ ○

संगीत-अध्यापक

हम खुशी-खुशी बर्लिन की सड़कों पर चलने लगे। इस शहर की आबहवा में निराशा और उदासी भरी थी। हम इससे मुक्त दीखते थे।

एक संगीत-भवन के सामने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—'फुर्तवेंगलर द्वारा बेतहोवेन संगीत।'

'हमें यह संगीत जरूर सुनना चाहिए।'—सीझीद ने सलाह दी। 'जीवन की नीरसता केवल संगीत द्वारा ही दूर की जा सकती है। यह समझकर ही जरमन लोगों ने इस संगीत का आयोजन किया होगा।'

टिकट खरीदने जाने पर पता चला कि वे सब बिक चुके हैं। बेचनेवाली को मैंने सिगरेट का एक पैकेट दिखाया। इसका असर जादू-जैसा हुआ। उसने हमें बहुत अच्छी जगहें दीं।

पर संगीत शुरू होने में देर थी। कपड़े बदलने हम घर आए।

मेरा कमरा बहुत सजा हुआ नहीं था, फिर भी वहाँ आराम की सब चीजें मौजूद थीं। बर्लिन के खँडहरों में रह लेने के बाद यह सीग्रीद को राजमहल जैसा दीख रहा था। सोफे पर लेटते हुए उसने कहा—'मुझे ऐसा दीखता है—मानों जरमनी में पांव रखने के बाद मैं सोई ही न होऊँ। आज मैं आराम करूँगी। तुम्हें अगर वह संगीत अच्छा लगा, तो मैं अगली बार जाऊँगी।'

अकेला मैं संगीत-भवन आया। वहाँ अब भी टिकट खरीदने-वालों की लम्बी कतारें लगी थीं। जरमन-नोटों की कीमत बहुत नहीं थी। सेब और रोटी के बदले टिकट अवश्य खरीदे जा सकते थे। सिगरेटों का महत्त्व अवश्य ही सोने-जैसा था।

कतार में खड़े लोगों में अधिकांश संगीत के वास्तविक प्रेमी दीखते थे। उनके चेहरों पर भूख और सर्दी की मार वर्त्तमान थी। इस संगीत के लिए अपनी हफ्ते भर की कमाई या खुराक दे डालना, उनके लिए वास्तव में बहुत बड़ा त्याग था।

मेरा ध्यान एक कोने में खड़ी दुबली-पतली लड़की की ओर खिंचा। उसके हाथ में कई किताबें थीं, जिन्हें देकर वह टिकट लेना चाहती थी। पर, कोई भी इस तरह के विनिमय के लिए [illegible] था। उसके चेहरे पर की स्वाभाविक उदासी बढ़ती-सी जा रही थी।

संगीत शुरू होने की घंटी बजी। जिनके पास टिकट था, वे

भीतर घुसे, जिन्हें नहीं मिला, वे निराश हो वापिस लौटे। किताबों-वाली लड़की संगीन के विज्ञापन पर दृष्टि गड़ाए खड़ी रही। उसके पास पहुँच, एक पहरेवाले सिपाही ने पूछा—'तेरा पास ?'

'घर पर छूट गया है।'—डरते हुए-से लड़की ने कहा।

'गलत बता रही हो ?'—सिपाही ने डाँट बताई—'तेरी उम्र ?'

'पन्द्रह वर्ष।'

'मैं तुम्हें अस्पताल भेजूँगा।'

'किस लिए ?'

'वहाँ तेरी जाँच होगी।'

'मेरा दुर्भाग्य !'—कहते, लड़की विचार में पड़ गई।

'यहाँ तेरा टिकट है।'—उसके पास पहुँच, मैंने कहा। सिपाही ने मेरे ऊपर नजर दौड़ाई। मैंने दो सिगरेट उसके हाथ में रख दिए। 'ओ······यह आपके साथ है ? माफ कीजिएगा।'—कहते हुए वह वहाँ से चला गया।

'लेकिन इन किताबों से तो टिकट का मोल चुकता नहीं !'—बिना मेरी ओर देखे ही लड़की ने कहा—'पर मेरे पास देने के लिए और कुछ भी नहीं है !'

'यह टिकट मैं तुम्हारे भेंट करता हूँ।'

'नहीं—'

'सच ! मुझे जान पड़ता है, जैसे तुम संगीत की अच्छी समझ रखती हो !'

'हाँ, मेरे पिता अवश्य संगीत-शिक्षक हैं।'—कहते वह मेरे साथ चली। उसने फिर गर्व के साथ कहा—'वे यहाँ के विश्व-विद्यालय में संगीत के प्रोफेसर थे।'

संगीत खत्म होने के बाद, मैं उससे और कई बातें पूछने लगा। उसने मुझे टोका—'आपने आज मुझे बहुत बड़ा आनन्द प्रदान किया है। क्या अपना वह दान, आप वापिस लेना चाहते हैं?'

'नहीं!'

'तो मुझ से और कोई प्रश्न न कीजिए, मैं बड़ी खराब लड़की हूँ।'

'यह हो नहीं सकता।'

'आप मुझे जानते नहीं!'

बाहर आने पर उसने मुझे बहुत-बहुत धन्यवाद दिये। उसने मेरा चेहरा गौर से देखा और फिर कहा—'मैं आपकी बहुत ऋणी हूँ।'

मेरी गाड़ी का रुख, अपने जाने की दिशा में ही देख, उसने मुझसे पूछा—'मुझे कुछ दूर साथ ले चलिएगा?'

'कहिए, आपको घर पहुँचा दूँ!'

'शायद वह आपके रास्ते पर ही है।'

अपने घर के दरवाजे पर आ पहुँचने पर उसने कहा—'आइए, आपको अपना घर भी दिखा दूँ।'

वह मकान किसी जमाने में नौलखा रहा होगा। अब से

उसका अधिकांश नष्ट हो गया था, पर एक ओर का साबुत बच रहा था। उसी में सब से ऊपर की मंजिल पर पहुँच, उसने दरवाजा खटखटाया। एक बूढ़े सज्जन मोमबत्ती लिए बाहर निकले।

'मेरे पिता !'—उसने परिचय कराया। लम्बी दाढ़ीवाले सज्जन के चेहरे से विद्वत्ता टपकती थी।

'देखिए पिताजी !'—लड़की ने कहा—'ये विदेशी हैं, पर इन्होंने मुझे आज पुलिस के चंगुल से बचाया है।'

'मैं आप का बहुत अनुग्रहीत हूँ।'—बूढ़े सज्जन ने कहा—'आप थोड़ा विश्राम कीजिए, मैं अभी अपना काम खत्मकर आपकी सेवा में हाजिर होता हूँ। क्रिस्टेल ! तू, तब तक इन्हें अपना संगीत-पुस्तकालय दिखा !'

वे अपने पिआनो पर गए। उस पर एक खुली कापी रखी थी। उस पर नजर गड़ा, वे पिआनो की पटरियों पर हाथ फेरने लगे।

मेरी आँखों के सामने एक चित्र नाचने लगा। कड़ाके की सर्दी है। बरफ पड़ रही है। हजारों आदमी रास्ते पर खड़े हैं। वे ध्वस्त हुए मकानों की ओर देखते हुए आश्रय ढूंढ़ रहे हैं। बरफ का गिरना बन्द नहीं होता। मकान के भीतर घुसे लोगों के अंग भी बरफ से ढँकते जा रहे हैं। वहाँ से भी उन्हें अपने ऊपर खुला आकाश ही दिखाई देता है। उनके पाँवों के नीचे बरफ की कालीन-सी बिछी है। फिर उसकी सफेद सतह ऊपर उठती जाती

है। कुछ ही देर में वह लोगों को पूरा-पूरा ढँक लेती है। श्मशान की शांति! पर क्षणिक बरफ के स्तूपों के भीतर चकाचक दिखाई देता है। वे स्तूप टूटते हैं, उसके भीतर से संघर्ष करती आदमियों की जमात निकलती है। वे बरफ को पाँवों-तले रौंदते आगे बढ़ते हैं।

'आप हमारा संगीत समझते हैं?'—प्रोफेसर ने हमारी ओर फिरते हुए पूछा।

'हम आज फुर्तवेंगलर कंसर्ट में गए थे, पिताजी!'—क्रिस्तेल ने उत्तर दिया—'मुझे मालूम पड़ा, ये वह संगीत समझ रहे थे।'

'प्रोग्राम क्या था?'

'बेतहोवेन की नवमी सिम्फोनी।'

'अहा'—प्रोफेसर उठ खड़े हुए। वे गेथे का मशहूर वाक्य दुहराने लगे—'त्याग! त्याग में ही जीवन है।' फिर पिआनो की पटरियों पर हाथ ले गए—'बेतहोवेन ने इस संगीत की रचना अपने हृदय के रक्त से की है। इसीलिए वह इस महान विपत्ति के काल में भी जरमन हृदय की तंत्री बजाते हुए कहता है—'तुम जीवित हो!'

उन्होंने मुझे अपने घर में स्वेच्छानुसार आने का स्थायी निमंत्रण दिया।

उनके निमंत्रण का मैंने पूरा-पूरा उपयोग किया।

कुछ आदमी अपने काल के जीवित स्मारक के समान होते

हैं। उनका देश, जिन परिस्थितियों से गुजरता है, उसके घात-प्रतिघात का असर उन पर सब से अधिक पड़ता है। पर, फिर भी वे अपना निजस्व बनाए रखने में समर्थ होते ही हैं। प्रोफेसर मुझे उसी ढङ्ग के एक व्यक्ति दिखाई पड़ते थे।

लड़ाई के जमाने में उनकी सम्पत्ति जाती रही थी। जो कुछ भी कीमती सामान बच रहे थे, उन्हें, लड़ाई के बाद के पहले कुछ महीनों में, उन्हें खाद्यपदार्थों से विनिमय कर लेना पड़ा था। नात्सीकाल में, उन्होंने जरमनी के कई गौरवगान संगीतबद्ध किए थे। इसी अपराध में उन्हें अब अध्यापन-कार्य से हटा दिया गया था। भाग्यवश, क्रिस्तेल को एक किताब की दूकान में, किताब बेचने का काम मिल गया था। अब पिता-पुत्री, दोनों की आजीविका का यही आश्रय था।

उन्हें बड़ी-बड़ी सख्तियों के बीच से गुजरना पड़ता था। पर ये सब कठिनाइयाँ, प्रोफेसर को हिला नहीं पाती थीं। वे अब भी अपने जीवन-काल को सङ्गीतबद्ध करने में लगे थे।

पर, इस काल का जो सबसे कटु अनुभव था, उसे लिपिबद्ध करने का साहस उन्हें भी नहीं होता था। सिर्फ वही एक अनुभव था, जिसके स्मृति पर फिर से आ जाने पर वे बुरी तरह विचलित हो जाते थे।

एक दिन मैंने उन्हें वैसी ही विचलित अवस्था में देखा। कारण पूछने पर उन्होंने कहा—'वह याद, मुझे शूल से भी अधिक

वेदना पहुँचाती है। ऐसे मुहूर्त में, मैं, सचमुच, अपने जीवन का अंत कर लेने की बात सोचने लगता हूँ। सिर्फ सङ्गीत का मोह मुझे रोक रखता है।'

पिआनो का ढक्कन उन्होंने बन्द कर दिया। आँखें बन्दकर कुछ देर सोचते रहे, फिर कहा—'वह वाकया कह सुनाऊँ, तो शायद हृदय कुछ हल्का हो। बर्लिन के लिए ऐसा वाकया कोई बिरला नहीं है। पर मेरी आँखों के सामने गुजरने के कारण वह, मेरे जीवन में, बहुत बड़ा महत्त्व रखता है। विदेशी फौज के बर्लिन में घुसने का वह दिन, मैं भूल नहीं पाता। बहुत अच्छी सुखदायिनी धूप निकली हुई थी। चारों ओर प्रकाश था, उजेला था। वैसे सुन्दर दिन में, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि आदमी ऐसे निष्ठुर कार्य करेंगे। सब से पहले हमें सशस्त्र फौजी गाड़ियों की घड़घड़ाहट सुनाई पड़ी। फिर, गोलियों के दगने की आवाज। मैंने इसी खिड़की से झाँककर देखा, विजयी सैनिक बन्दूकें लिए फौजी गाड़ी से कूद रहे थे। वे हमारे घर में घुसे। अगले मिनट, हमें गोलियों के छूटने की आवाज सुनाई पड़ी और तब औरतों की चीख।'

उनके चेहरे पर की रेखाएँ गहरी होती जा रही थीं, पर वे कहते गए—'पहले महासमर में मैं सैनिक था। लड़ाई के मोर्चों पर मैंने आदमियों को चीखते और मरते देखा था, पर, वह चीख मुझे वैसी भयानक नहीं लगी थी, जैसी इस घर की औरतों की। कुछ देर बाद, सीढ़ियों पर से बूट-जूतों की आवाज आने लगी। मैंने

क्रिस्तेल को पिआनो के पीछे छिपा, उस पर एक परदा डाल दिया सात सिपाहियों को लिए, एक अफसर इस कमरे में घुसा। मेरी ओर निगाह पड़ते ही अफसर ने पूछा—'सूअर! तुम हमारे हुक्म न मानने की हिमाकत दिखाता है?'

'मुझे आपका कोई भी हुक्म मानने से इनकार नहीं!'—मैंने कहा। 'फिर तुम ऊपर क्यों हो? मेरा हुक्म है कि सब जरमन हरामी, नीचे के तहखाने में, हमारे आने की इन्तजार करें।'

'यह पिआनो मुझे प्राणों से भी प्यारा है। डर हो रहा था कि कहीं इसे सैनिक तोड़ न दें।'

'अब, मैं इसे तोड़ डालूं तो?'

'उसके पहले, आप मेरी हड्डियां तोड़ डालें!'

'तेरी हड्डियों से मुझे वास्ता नहीं! उन्हें तोड़ा करते थे तुम्हारे सैनिक, जब उन्होंने कुछ दिनों के लिए, हमारे मुल्क पर कब्जा किया था। तुम्हें पता नहीं, उन्होंने कैसी-कैसी हरकतें दिखाई थीं?'

'वहां वे ऐलान नहीं की गई थीं, पर मैं उनकी कल्पना कर सकता हूँ। वैसी हरकतें दिखानेवालों ने न सिर्फ जरमनी, बल्कि, सारे मानव-समाज के नाम पर कलङ्क का टीका लगाया है।'

'मुझे खुशी है कि तुम उन हरकतों के पक्ष में नहीं? अब तुम्हें खुशी मनानी चाहिए कि हमारी फौज ने तुम्हारा उद्धार किया है, उन फासिस्ट राक्षसों से तुम्हें बचाया है। हमारी अगवानी में, पिआनो पर, कुछ सुनाओ!'

पिआनो के पास जा, मैंने अपनी कॉपी खोली। अफसर ने कहा—'तेरा जल्लादी जरमन सङ्गीत मैं नहीं सुनना चाहता। रिगोलेत्तो ऑपेरा का मशहूर गीत बजा—'ठग होते हैं सब नारी-हृदय।'

'मैं बजाने लगा। उस ध्वनि के साथ वह गुनगुन करता रहा; फिर, एक-ब-एक खड़े हो उसने कहा—'अब हम तुम्हारे घर की तलाशी लेंगे। तुमने किसी को यहां छिपा रखा है?'

'नहीं!'

'फिर, तुम कांपते क्यों हो?' अपने सैनिकों को उसने हुक्म दिया—'इस जरमन कुत्ते का एतबार न करो। तलाशी लो!'

'तलाशी का मतलब था चीजों को तोड़-फोड़ डालना। चीनी और कांच की सब चीजें उन्होंने तोड़ डालीं। तसवीरें और वायलिन भी, फिर, उन्होंने पिआनो के पीछे का परदा फाड़ डाला। क्रिस्तेल चीख उठी। सैनिक हंसने लगे। एक उसे घसीट कर बीच कमरे में ले आया। मैं उसे अपनी आड़ में ले, बचाने की कोशिश करने लगा, तो अफसर ने कहा—'यह सुन्दरी है।'

'बच्ची है!'—मैंने कहा।

'हम उसका कोई नुकसान नहीं करेंगे'—अफसर ने कहा—'पर जांच जरूर करनी पड़ेगी!'

'कैसी जांच?'

'पूछ-ताछ'—अफसर ने कहा और अपने सैनिकों को उसे बाहर

ले चलने का इशारा किया। उस क्षण, मुझे वे सब सैनिक हत्यारे-से दीखने लगे।

'तुम्हारे सैनिक भी, हमारी औरतों के साथ बुरी तरह पेश आये थे।'—अफसर ने कहा।

'आपको उन अफसरों से बदला लेना चाहिए, इन अबला औरतों से नहीं!'

'सभी जरमन खून के अपराधी हैं!'

'हिटलर के कुछ अनुयायियों ने खून जरूर किया है, पर सारी जरमन जनता खूनी नहीं है और यह बची, तो किसी भी हालत में नहीं। हिटलर ने जब लड़ाई का एलान किया था, उस समय यह सिर्फ सात साल की थी। हिटलर के किसी कसूर का दायी आप इसे कैसे ठहरा सकते हैं? फिर, इससे बदला?'

'हम उससे बदला नहीं लेंगे।'—अफसर ने कहा—'सिर्फ, पूछ-ताछ करेंगे।' वे क्रिस्तेल को खींच ले चले। मैं भी उसके पीछे चला; पर, एक सिपाही ने बन्दूक का कुंदा मेरी छाती पर लगा, मुझे वहीं रोक रखा। मैंने उस अफसर का विश्वास किया, यह मेरी गलती हुई, नहीं तो मुझे गोली से उड़ा देने के बाद ही वे क्रिस्तेल को मुझ से अलग कर ले जा सकते थे।

उन्होंने अपना सिर नीचा कर लिया, उन्हें टोकने की मेरी हिम्मत नहीं हुई।

कमरे में अँधेरा घिर आया। खिड़की के बाहर के आकाश की

सूरत रुआवनी-सी लगने लगी। उस ओर देख, प्रोफेसर, अपने आप से बातें करने के स्वर में कहने लगे—'कुछ देर बाद, क्रिस्तेल की खोज में मैं नीचे उतरा। उस ध्वंस-स्तूप के नीचे वह पड़ी थी। खून से तर—बेहोश। उसका सब कुछ लुट चुका था। एक बूढ़ी औरत, जिसने सब कुछ देखा था, कहा—'वे सालों जानवर से भी बदतर थे!'

'कहीं अधम···'—मेरे मुँह से निकला।

'खूँखार जानवर भी ऐसी निकृष्टता नहीं दिखाते, उन्होंने इस बच्ची की अन्तरात्मा तक जहरीली बना दी?'

कुछ देर चुप रहने के बाद, उन्होंने अपने आप से पूछते हुए-सा कहा—'किस अपराध का उसे दण्ड दिया गया?'

पिआनो के ढक्कन से अपना चेहरा छिपाते हुए, उन्होंने दोहराया—'किस अपराध का?'

○
○ ○

कलाकार

बर्लिन पर आधिपत्य रखनेवाले फौजी अधिकारियों ने, इस ढंग के कानून बना रखे थे कि सीग्रीद मेरे मकान में रह नहीं सकती थी। उसके पास, बर्लिन में रहने का अधिकार-पत्र भी नहीं था। डर, हमेशा इस बात का लगा रहता था कि पुलिस जिस किसी समय भी पकड़कर, उसे हवालात में बन्द कर दे सकती थी।

हेल्गा ने इस मामले में, कुछ हद तक, मदद की। उसकी चेष्टाओं से एक जरमन परिवार के यहां सीग्रीद को सोने भर की जगह मिल गई। वातावरण विपरीत होने पर भी वहां वह किसी कदर गुजारा कर रही थी। सारे शहर में, एक मात्र मित्र, वह मुझे ही मानती थी। इसलिए, रोज कम-से-कम एक बार उससे मिलने मैं जरूर जाया करता था।

एक दिन, मैं उसके दरवाजे पर खड़ा हो, उसके बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था कि पीछे से बूट की आवाज आई। पीछे फिरकर मैंने देखा, तो पुलिस की वर्दी पहने, एक आदमी दिखाई दिया। ख्याल आया—यह है उस नैश-विहार का स्वार्च। मेरी ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा—'आप से तो मैं परिचित जान पड़ता हूँ।'

मैं उसकी ओर से मुँह फेर, दरवाजे की ओर देखने लगा। हँसते हुए उसने कहा—'आज सुसाना के यहाँ नहीं चलोगे?'

मेरी ओर से कोई उत्तर न मिलने पर भी वह कहता गया—'मैं किसी औरत का दुत्कार बर्दाश्त नहीं कर सकता। यह हमारी जरमन शान के खिलाफ बात है। शायद, आज उस औरत से फिर मुलाकात होगी।'

'कौन-सी औरत?'—मैंने पूछा।

'वही, जो उस दिन सुसाना की बगल में बैठी थी। पता लगा है, वह यहीं कहीं रहती है।'

दरवाजा खुला। स्वार्च को देखते ही सीग्रीद थमककर खड़ी हो गई। उस की ओर हाथ बढ़ाते हुए स्वार्च ने कहा—'आज मैं आपको निमंत्रित करने आया हूँ। मेरे साथ उस नैश-......'

'मुझे तुम्हारे चेहरे से नफरत है।'—घृणापूर्वक उसने कहा।

'तो आप मेरी वर्दी देख लीजिए। अब आप को गिरफ्तार कर लेने का भी मुझे अख्तियार है। मैं...'

'पहली गिरफ्तारी तो तुम्हारी ही होनी चाहिए।'—मैंने उसे बीच में ही टोकते हुए कहा—'तुम उस नात्सी जल्लाद-घर के सरदार थे न !'

'अब मैं नात्सीयाने के आरोप से बरी कर दिया गया हूँ।'

'यह फैसला फौजी जज करेंगे !'—कह, मैं किसी फौजी पुलिस की फिराक में, एक ओर देखने लगा।

'आ—हा···'—वहाँ से टहलते हुए उसने कहा—'आज वह आपके साथ जा रही है, तो फिर अगली बार······'

'इन्होंने नाकोदम कर रखा है'—वह कहने लगी—'ये पूरे शैतान हैं। मैं ऐसी असहाय अवस्था में आ पड़ी हूँ, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।'

'चलो, मैं आज ही तुम्हें एक नये स्थान पर ले चलता हूँ।'

'मैं, जीवन-भर तुम्हारा आभार मानूँगी !'

उसी शाम, उसे लेकर मैं संगीत-अध्यापक के घर गया। उन्होंने खुशी-खुशी उसे अपने घर में ठहरने का स्थान दिया। क्रिस्तेल ने उसे अपनी चारपाई दी और अपना बिस्तर एक सोफे पर लगाया।

खुद विपत्ति झेले हुए लोग ही किसी आगंतुक की ऐसी खातिरदारी कर सकते थे।

प्रोफेसर के घर रहते-रहते सीग्रीद ने उनसे पिआनो सीखना शुरू किया। यह दोनों के ही मन-बहलाव का अच्छा रास्ता था।

ड्रेस्डेन के उस कलागृह का और एक भाग ।
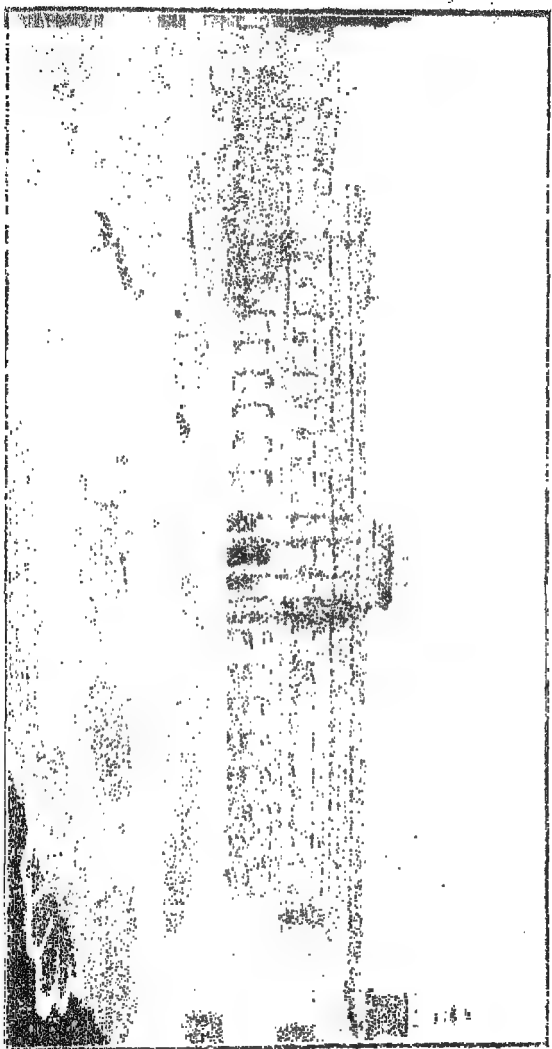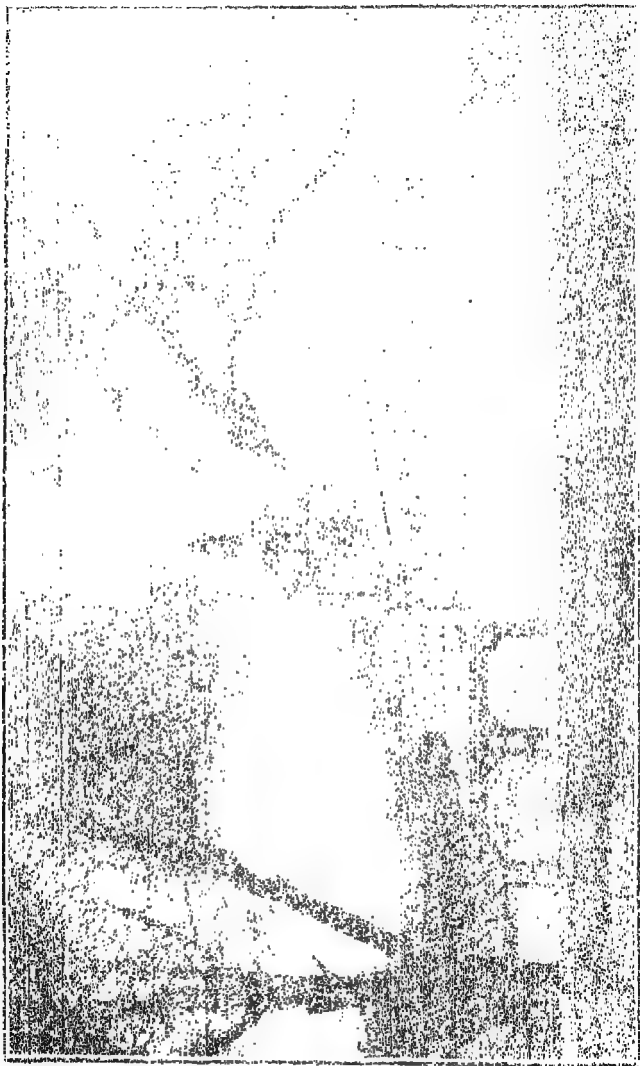
प्रोफेसर उससे कहने भी लगे—'जरमन फौज ने तुम्हारे हृदय पर गहरा घाव लगाया था, उस पर अब मलहम लगाने का काम भी जरमन कलाकारों को ही मिलना चाहिये।'

कलाकारों के कर्त्तव्य के सम्बन्ध में, उनके अपने निजी ढंग के विचार थे। उन्हें व्यक्त करते हुए वे कहते—'कलाकारों को ही जनता का नेतृत्व अपने हाथों में लेना चाहिए, फिर कभी भी दो राष्ट्रों के बीच लड़ाई नहीं छिड़ेगी।'

'पर, उन्हें जनता ही कहाँ पूछती है'—मैंने शंका दिखाते हुए कहा—'उन्हें तो जनता अपने ऊपर लादा गया व्यर्थ का भार समझती है।'

'इसीका आखिर लोगोंको नतीजा भी भुगतना पड़ता है।'

'पर आज तो कलाकारों को ही भुगतना पड़ रहा है। लड़ाई के बाद तो ऐसी परिस्थिति आ गई है, जिससे मालूम पड़ता है, कलाकारों की हस्ती ही मिट जायगी!'

'कभी नहीं, कलाकारों की हस्ती कभी मिट नहीं सकती! जानते हो, विकट परिस्थिति में आ पड़ने पर, उन्हें क्या करना चाहिए!'—वे अपने हर शब्द पर जोर देते हुए कहने लगे—'उन्हें हँस-हँसकर अपने भाग्य से ही बदला लेना चाहिए। अगर उनका हृदय घायल किया गया है, तो उन्हें उस घायल हृदय का ही गीत सुनाना चाहिए। अब तक ऐसी विपत्तियों के जन्म नहीं हुए हैं, जो कलाकारों की हस्ती मिटा सकें। विपत्तियाँ जितनी ही खूँखार

रूप में आती हैं, वास्तविक कलाकार उनका उतनी ही बहादुरी से सामना करते हैं।'

पिआनो पर रखी महान संगीतज्ञों की लिपिबद्ध ध्वनि की ओर दिखाते हुए उन्होंने कहा—'ये अमर हैं। संगीत के ही क्षेत्र में जरमन जाति ने मानव-समाज को महादान दिया है। हमारे बाख-हांडेल और बेतहोवेन द्वारा अर्पित झंकारें हमें कभी कष्ट नहीं होने दे सकतीं। जानते हो, वे मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करनेवाली जीवन की झंकारें हैं।'

एक दिन मैं उनके साथ घूमने निकला। जा निकले हम वहाँ, जिसे पहले कहा जाता था 'विजयपथ'। यहाँ रास्ते के दोनों किनारे महान जरमनों की संगमरमर की मूर्तियाँ खड़ी की गई थीं। इस समय लगभग उन सब मूर्तियों के अंग-भंग हो गए थे। यहीं के प्रस्तर ले जा, रूसियों ने अपने अधिकार-क्षेत्र में विजयस्तम्भ बनाए और स्तालिन की मूर्ति खड़ी की थी।

एक खाई में घास से ढँकी, किसी सुन्दर प्रस्तर-मूर्ति का सिर झाँक रहा था। प्रोफेसर ने उस पर का पड़ा कूड़ा हटा, मूर्ति देखी और कहा—'हमारी गेरमानिया। किसी जमाने में यह महान् थी और अकड़ के साथ यहाँ खड़ी की गई थी। उसके सम्मान में हम गर्व के साथ कितने ही गीत गाया करते थे।'

एक मशहूर राष्ट्रीय गीत का स्वर वे गुनगुन करने लगे। बगल से निकलनेवाले एक आदमी ने उन्हें सचेत किया—'यह स्वर गुन-

गुनाने के लिए आपको हिरासत में भेजा जा सकता है।'—दूसरे ने कहा—'आपको पता नहीं, जरमनी पर इस समय विदेशियों का अधिकार है, जिन्होंने यह गीत गाना मना कर रखा है।' तीसरे ने कहा—'बूढ़े, इसके लिए तुझे मौत की सजा मिल सकती है।'

प्रोफेसर ने सब का कहना अनसुना कर दिया। वे 'थेरमाजिया' के सामने भक्तिभाव से खड़े राष्ट्रीय गीत गाते रहे।

जैसे वहाँ आग लगी हो, वैसे उत्तेजित हुए दो जरमन सिपाही तुरत वहाँ आ पहुँचे। एक ने प्रोफेसर का हाथ पकड़ते हुए कहा—'चुप, चुप!' वे तब भी चुप नहीं हुए। एक राही ने कहा—'बूढ़ा पागल हो गया है।'

'आइए मेरे साथ'—सिपाही ने प्रोफेसर से कहा—'मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ।'

'किस अपराध में?'

'आप नात्सी हैं।'

'मैं हिटलर के जमाने में भी नात्सी-विरोधी गिना जाता था।'

'हम आपका विश्वास नहीं करते। आप अभी-अभी उसके जमाने का गीत गा रहे थे?'

'यह गीत नात्सी जमाने के बहुत पहले का है।'

'यह सफाई, आप कचहरी में देंगे।' दूसरे सिपाही ने दूसरी ओर से उन्हें पकड़ते हुए कहा—'हमारा काम कानून मनवाते रहना है। यह गीत गाना फौजी हुकूमत के हुक्म के खिलाफ है।

आपने इसे सरेआम गाया है, आपको इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।'

'राष्ट्रीय गीत गाने के लिए, आप सजा नहीं दे सकते।'—प्रोफेसर कहते रहे—'अपनी मातृभूमि की आराधना करना अपराध नहीं।'

उनकी सफाई की किसी ने भी परवा नहीं की। वे साक्सेन हाउसेन के जेल में भेज दिए गए, जहाँ खूँखार कैदी ही बन्द किये जाते थे।

○

○ ○

क्रिस्तेल

क्रिस्तेल को हमलोग समझा नहीं पाए। वह बराबर रोती और कहती रही—'अब वे नहीं लौटते। उस रूसी जेल से कोई भी वापिस नहीं लौटता?'

'चलो,'—सीग्रीद ने मुझ से कहा—'किसी अच्छे वकील की तलाश करें।'

'मैं किसी भी वकील को यहाँ नहीं जानता।'

'सुसाना से राय लें, वह चलता-पुरजा है; जरूर किसी अच्छे वकील का पता देगी।'

उस वक्त तक नैश-विहार खुला नहीं था। हमलोग उसके पीछे के रास्ते से भीतर घुसे। सुसाना बोतलें सजा रही थी। हमें घबड़ाया देख, वह हमारे पास आई। सारा किस्सा सुन लेने पर, उसने कहा—'प्रोफेसर को रूसी अधिकार-क्षेत्र के सिपाही पकड़ ले

गए हैं। वहां वकीलों की कोई सुनवाई नहीं होती।' फिर सीग्रीद से कहा—'तू वहाँ जाने का साहस न कर। तेरे पास बर्लिन में रहने का अधिकार-पत्र नहीं है, यह पुलिस जान गई है। श्वार्ज कई बार तेरी तलाश में यहाँ आया था। शायद तेरा नया पता भी उसे मालूम हो गया है। कल रात, वह नशे में कह रहा था कि आज शाम को वह तुझे लेने, प्रोफेसर के घर जाएगा।'

हमारी चिन्ता बजाय कमने के बढ़ती ही गई।

प्रोफेसर के घर के सामने पहुँचने पर हमलोगों ने देखा, वहाँ एक पुलिस की गाड़ी खड़ी है। खुद श्वार्च उनके दरवाजे पर खड़ा, पहरा दे रहा था। रास्ते के दूसरे किनारे, अँधेरे में खड़े हो हम उसकी हरकतें देखने लगे।

कुछ देर बाद, दो सिपाही एक लड़की को टाँगे, भीतर से निकले। लड़की का मुँह एक कपड़े से ढँका था। श्वार्च ने वह ढकान हटाकर देखा और सिर हिलाते हुए कहा—'नहीं।'

'नहीं?'—सिपाहियों ने फिर से पूछा।

'नहीं, यह नहीं है।'

'तब हमें इस लड़की को यहीं छोड़ देना पड़ेगा। फिर भी इसके लिए अस्पताल की गाड़ी मँगवानी पड़ेगी।'

'इसे घर की रखवालिन के हवाले करो'—श्वार्च ने कहा—'हम अंबुलेंस भिजवा देंगे।'

लड़की को फिर से भीतर रख, सिपाही बाहर आए। इस बार

वे खाली हाथ थे। बिना किसी ओर देखे वे अपनी गाड़ी पर सवार हुए और वहाँ से चल दिए।

हमलोगों ने प्रोफेसर के कमरे की ओर देखा। वहाँ अँधेरा था।

हमें ऊपर जाते देख, रखवालिन ने टोका। हम उस से परिचित थे। अपने घर के एक कमरे में हमें ले जा, उसने कहा—'तुम्हें क्रिस्तेल को अकेला नहीं छोड़ना था।'

'क्या हुआ?'—सीग्रीद ने घबड़ाकर पूछा।

'उसने'···इशारे से उसने फाँसी की तख्ती दिखायी।

हम हतबुद्धि हो खड़े रहे। रखवालिन ने अपनी सफाई दी—'जो कुछ भी किया जा सकता है, मैं उसके लिए कर रही हूँ। शायद, अब डाक्टर भी आता ही होगा। पर उम्मीद कम है।'

हमारे पाँव भूमि में गँथ गए-से दीखने लगे। वह पूरा वाकया सुनाने लगी—'दिया जलने के समय वे तीन 'जल्लाद' घर में घुसे। उन्होंने मुझ से कहा कि वे एक नॉरवेजियन लड़की को गिरफ्तार करने आए हैं। मैंने उन्हें कहा कि वैसी कोई इस घर में नहीं रहती। उनमें एक मुस्कुराता हुआ, नीचे पहरा देने के लिए खड़ा हो गया और दूसरे दो को ऊपर जाने के लिए कहा। मैं भी उनके पीछे-पीछे गई। फिर सीढ़ी पर खड़े-खड़े ही मैंने सब कुछ देखा।'

रूमाल से अपनी आँखें पोंछती हुई वह आगे कहने लगी—

क्रिस्तेल ने चकित हो उनकी ओर देखा और पूछा—'मुझे भी पिताजी के यहाँ ले जाने को आए हो ?'

'तुम्हारे पिता को हम नहीं जानते।' एक सिपाही ने जवाब दिया।

'क्यों, कल ही तो तुम उन्हें गिरफ्तार कर ले गए हो ?'

'उनके बारे में हम कुछ भी नहीं जानते।'

'तब तुमने अवश्य ही उन्हें मार डाला है।'

'बहुतों को हमें मारने की जरूरत नहीं पड़ती, वे खुद अपना काम तमाम कर लेते हैं।'

'लड़की का चेहरा फीका पड़ गया। कपड़ा बदलने के बहाने वह बाथरूम में गई और उसने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। जब बहुत देर तक दरवाजा नहीं खुला, तब सिपाही उसे तोड़कर भीतर घुसे। वह परदे की रस्सी से झूल रही थी। वे उसे नीचे उतार, उसका चेहरा ढँक, नीचे ले आये और उसे अपने सरदार को दिखाया। उसने इसे डॉक्टर के आने तक हमारे हवाले करने के लिए कहा।'

'वह है कहाँ ?'—सीग्रीद ने पूछा।

रखवालिन ने इशारे से बगल का कमरा दिखाया और सचेत किया—'तुम्हारा अधिक देर यहाँ रहना ठीक नहीं। पुलिस उसकी हत्या में तुम्हारा नाम शामिल कर दे सकती है। कई बार उन्होंने

ड्रेस्डेन के उस कलागृह का दूसरा भाग

ड्रेस्डेन का एक प्रख्यात कलागृह जो अब नष्ट हो गया

ऐसा किया है। जितना जल्द हो, तुम यह स्थान छोड़ दो।'

हमें ऐसा मालूम पड़ता था, मानों हमारे पाँव किसी काम के रह नहीं गये हैं। बाहर से लोगों के घुसने की आवाज सुन, हम खिड़की के रास्ते बाहर निकल आए। वहाँ हम अँधेरे में चुपचाप खड़े रहे।

त्रिस्तेल को उन्होंने गाड़ी पर रखा। इस समय उसका चेहरा ढँका नहीं था। हमें ऐसा जान पड़ा, मानों वह कह रही हो—

'आ रही हूँ, पिताजी।'

o
o o

पलायन

अँधकार। तूफ़ान के आसार दिखाई देते थे। ठण्ड से अंग सिहर उठता था।

खण्डहरों के बीच सन्नाटा छाया था। ध्वस्त हुए मकानों से बने स्तूप कब्रगाह जैसे दीखते थे। लेकिन, हमें ऐसा वीरान और श्मशान, और कभी, दिखाई नहीं दिया था।

'हम यहाँ रुक नहीं सकते'—चारों ओर देख सीग्रीद ने कहा—'चलते चलो!'

'पर किधर?'

'चलो, हम अपना भाग्य पश्चिम की ओर आजमाएँ।'—उसने कहा।

मैं राजी ही राजी था।

कुछ सवेरा-सा होने लगने पर हम स्टेशन पहुँचे। वहाँ पश्चिम

की ओर जानेवाली एक गाड़ी खड़ी थी—पर खचाखच भरी हुई। उसके पाँवदान पर हमें किसी कदर जगह मिली।

गाड़ी खुली। उसने गति ली। एक घुमाव पर से हमें प्रोफेसर का घर दिखाई दिया। उसकी छत पर धुँए के रङ्ग के बादल छा रहे थे। उनके थोड़े नीचे की दो खिड़कियाँ नीले रङ्ग की दीख रही थीं—क्रिस्तेल की आँखों जैसी।

सीश्रीद ने उधर से मुँह फेर, नजदीक आते क्षितिज की ओर देख, कहा—'वहाँ—उस तूफान में ही—हमारा सौभाग्य जा छिपा दीखता है।'

○ ○
○

अजाने रास्ते

तृतीय खंड

[रूसियों के पाले]

शरणार्थी

बर्लिन के पीछे छूटते ही, जरमनी का, सोवियत प्रभुत्व-क्षेत्र में पड़नेवाला, अञ्चल शुरू हुआ। यहाँ के एक छोटे-से स्टेशन पर हमारी गाड़ी खड़ी हुई। प्लेटफार्म पर बहुत-से रूसी सैनिक खड़े थे। उन सब के कन्धों पर बन्दूक और छाती पर तमगे झूल रहे थे।

सीग्रीद को भय लगने लगा। मेरी बाँह से कसकर लिपटते हुए उसने कहा—'हमलोगों ने बहुत भारी गलती की। हमें यह रास्ता नहीं लेना चाहिए था।'

'उतर पड़ो! गाड़ी के सब लोग नीचे उतरो!'—एक जरमन सिपाही चिल्ला-चिल्लाकर मुसाफिरों को कहने लगा।

'हम क्यों उतरें?'—अपने सामने आने पर मैंने उससे पूछा।

मेरे सवाल से उसे ताज्जुब हुआ। ऐसा सवाल शायद और

किसी ने कभी किया नहीं था। कई बार मुझे नीचे से ऊपर तक जाँच कर लेने पर उसने पूछा—'विदेशी हो?'

'हाँ।'

'इसीलिए ऐसा बे-तुका सवाल कर रहे हो।'

'यह सवाल बे-तुका नहीं। गाड़ी पश्चिम जरमनी जानेवाली है, फिर इसे आधे रास्ते रोक मुसाफिरों को उतर जाने के लिए कहा जा रहा है।'

'यह इस अञ्चल के लिए साधारण बात है।' गार्ड ने बीच में पड़ते हुए कहा—'रूसी सैनिकों को जाना है, जरमन मुसाफिरों को गाड़ी खाली करनी ही पड़ेगी।'

'फिर ये जरमन कैसे जाएँगे?'

'वे अगली गाड़ी के लिए इन्तजार करें।'

'वह कब आएगी?'

'अगर सब कुछ सही-सलामत गुजरा, तो कल इसी समय।'

'यह तो भयानक परिस्थिति है?'

'कुछ भी भयानक नहीं।'—सिपाही ने कहा—'इन जरमनों को जल्दी क्या पड़ी है, ये सब आखिर शरणार्थी ही तो हैं।'

हमलोग मुसाफिरखाने में गए। वहाँ सड़ी-सड़ी गन्ध आ रही थी। कई छोटे बच्चे वहाँ के गन्दे फर्श पर खेल रहे थे। उनके पिता रास्ते से उठाए हुए सिगरेट के अवशिष्ट जला पी रहे थे। माताएँ सूखी काली रोटी के बस्ते सम्हाल रही थीं। सभी

के चेहरों से भूख टपकती थी और मालूम पड़ता था—मानों उन्होंने वर्षों से स्नान नहीं किया हो।

एक युवा लड़की कोने में बैठ, फूट-फूटकर रो रही थी। उसके पास जा, हमलोगों ने उसके रोने का कारण पूछा। उसने बताया —'आज इस मुसाफिरखाने में पहुँचे मेरा पाँचवाँ दिन है। हमारे पास अब रसद-पानी कुछ भी नहीं बचा। पिछले दो दिनों से मैं फाकाकशी कर रही हूँ; पता नहीं, अगली गाड़ी मुझे कब मिलेगी!'

'तुम धीरज रखो'—मैंने उसे आश्वासन देते हुए कहा—'मैं पता लगाता हूँ।'

'तुम्हें कोई भी पता नहीं देगा।'—सीओद ने टोका।

'पर मैं कोशिश अवश्य करूँगा।'

'पर, किसी रूसी के पास न जाना।'

'डरो नहीं!'

'यहाँ सब कुछ घट सकता है। हम रूसी अधिकार-क्षेत्र में आ फँसे हैं—यह ख्याल रखना।'

'मैं अभी वापिस आया'—कहता हुआ मैं मुसाफिरखाने के बाहर आया।

जिससे पूछा, उसीने बताया कि रूसी फौजी कमांडर के सिवा और कोई भी नहीं जानता कि अगली गाड़ी हमें कब मिलेगी। उस कमांडर के डर से लोग शैतान के भय से भी अधिक सिहर

रहे थे। उसके सामने जाने की हिम्मत किसी को भी नहीं थी।

मैं उसके दफ्तर का दरवाजा खटखटाता भीतर घुसा। कमाण्डर को मेरी धृष्टता पर ताज्जुब-सा हुआ। वह ठिगना-सा आदमी था, उसकी आँखों से उसकी धूर्तता और क्रूरता झलकती थी।

'कॉमरेड कमाण्डर'—मैंने पूछा—'पश्चिम जानेवाली अगली गाड़ी हमें कब मिलेगी?'

'तुम आम गाड़ी से सफर करोगे?'

'हाँ।'

'जरमन सूअरों के लिए आज कोई गाड़ी नहीं है।'

'आप बहुत नाराज दीखते हैं, कॉमरेड!'

'मैं बहुत नम्र हूँ। अगर मेरा चले, तो मैं एक क्षण में सब जरमनों को जहन्नुम भेज दूँ।' फिर प्रत्येक रूसी द्वारा दी जाने-वाली आम दलील उसने दुहराई—'तुम्हें पता नहीं, उन्होंने हमारा देश किस भाँति बरबाद कर दिया है?'

'पर, वह लड़ाई का जमाना था, अब···।'

'जबतक एक भी जरमन धरती पर जिन्दा रहेगा, यहाँ शांति नहीं रह सकती!'

'आप जरमनों के प्रति बहुत सख्त दीखते हैं, कमाण्डर!'

सख्ती के सिवा दूसरी कोई जबान जरमन समझ भी नहीं सकते!'

'मैं आप से सहमत नहीं!'

'सहमत नहीं, क्योंकि तुम जरमन लोगों को नहीं जानते। एशियायी हो न ?'

'हाँ !'

'तो तुम मेरे सामने आकर बैठ सकते हो। लुच्चे जरमनों के सिवा मैं और सब किसीसे बातें करता हूँ।' अपना मोटा-सा रजिस्टर बन्दकर, मेरी ओर घूम, वे कहने लगे—'जरमन से बढ़कर भ्रष्टाचारी और कोई जाति तुम्हें पृथ्वी पर नहीं मिलेगी। साथ ही ये भारी नमकहराम भी हैं। देखो न, हमारी सोवियत सरकार इन जानवरों को सुखी रखने की चेष्टा कर रही है; फिर भी ये हरामी हमारे प्रभुत्व-क्षेत्र से भागे जा रहे हैं।'

'ये भागकर कहाँ जा रहे हैं ?'

'पश्चिमी प्रभुत्व-क्षेत्र में, जहाँ पूँजीपतियों का राज्य है। वहाँ सिर्फ भूख और दरिद्रता निवास करती हैं। पूँजीपति अपने मजदूरों को जंजीरों में बांध, कोड़े लगाते, और उन्हें गोलियों का निशाना बनाया करते हैं।'

'ये बातें अतिरंजित हैं।'

'क्या कहा ? अतिरंजित ! तब मैं जरूर कहूँगा कि तुम पूंजीपतियों के प्रचार के शिकार हो। कल के ही अखबार में मैंने पढ़ा है—रूर इलाके में, जहाँ कोयले की खानें हैं, पांच सौ मजदूर खान में जबरदस्ती नीचे उतारे गए थे और फिर वह खान डिनामाइट से उड़ा दी गयी थी।'

'मुझे इस खबर पर एतबार नहीं होता।'

'यह सच्ची खबर है। इस पर अगर तुम एतबार नहीं करते, तो मुझे तुम्हें साक्सेनहाउसेन के चिकित्सालय में इलाज के लिए भेजना पड़ेगा। हमारे प्रभुत्व-क्षेत्र में आ जाने पर तुम्हें पूँजीपति-प्रचार-रोग से चङ्गा होना ही पड़ेगा।'

'कॉमरेड कमांडर, अगर आपका इलाका स्वर्ग है, तो फिर यहाँ के लोग, जिसे आप नरक बताते हैं, पूँजीपतियों के उस प्रभुत्व-क्षेत्र की ओर क्यों भागे जा रहे हैं?'

'वही तो कहा, ये नमकहराम हमारे दुश्मन अमेरिकनों के झूठे प्रचार के शिकार हो रहे हैं!'

'पर अमेरिकनों का प्रचार इन लोगों तक पहुँचता कैसे है? अमेरिकन आधिपत्य-क्षेत्र के अखबार पढ़ने या रेडियो सुनने की आपके यहाँ सख्त मनाही है और उसके लिए कड़े-से-कड़े दण्ड दिए जाते हैं।'

'इन जरमन शैतानों के खून में ही कुछ ऐसा जहर भरा है कि ये अमेरिकनों के ही पीछे दौड़ते हैं। पर हम सोवियत के लोग इनका यह जहर दूर करके ही रहेंगे। इनके जहरीले दाँत हम उखाड़ कर ही दम लेंगे। इसमें.........'

बाहर से लोगों के चिल्लाने की आवाज सुन वे रुके। वाकया देखने के लिए हमलोग बरामदे में आए।

स्टेशन के बाहर पुलिस की तीन लारियाँ आ खड़ी हुई थीं।

उन पर से जरमन सिपाही और रूसी सैनिक कूद-कूदकर नीचे आते और सामने पड़नेवालों को खदेड़ रहे थे। कुछ लोगों ने स्टेशन के भीतर आश्रय लिया। पुलिस ने उनका वहाँ भी पीछा किया।

'मामला क्या है?'—मैंने कमांडर से पूछा।

'कोई खास बात नहीं, यह मामूली 'रजिया' है।'

'वे औरत और बच्चों को भी खदेड़ रहे हैं।'

'क्योंकि वे सब चोरबाजार के लोग हैं। उन्हें पकड़कर बन्द करना ही पड़ता है। अगर उन्हें हम बन्द न करें, तो शरीफ लोगों का यहाँ एक मिनट भी रहना मुश्किल हो जाए। हमारे सैनिक जरमनी का बहुत बड़ा कल्याण कर रहे हैं। तुम्हें अभी खड़े-खड़े दिखाई देगा—वे चोरबाजार किस कदर खत्म करते हैं।'

मैं फिर से मुसाफिरखाने वापिस जाना चाहता था, पर उधर जाने का दरवाजा बन्द कर रखा गया था। उस दरवाजे पर खड़े रूसी सैनिक ने कहा—'पुलिस का छापा खत्म होने के पहले यह दरवाजा नहीं खोला जा सकता।'

मैंने कमाण्डर से इसकी शिकायत की। हँसते हुए उसने कहा—'तुम शांतिपूर्वक यहीं बैठे रहो, पुलिस का काम खत्म हो जाने पर उधर जाना। या इधर आओ, इस खिड़की से तमाशा देखो।'

सिपाही और सैनिक दोनों ही मुसाफिरखाने के लोगों का सामान लिए बाहर आ रहे थे और वह सारा सामान लारियों पर लादा जा रहा था।

'यह सब माल जब्त किया गया है'—कमाण्डर ने कहा—'यह सारा सामान चोरबाजार का है।'

'लेकिन वह फटा कोट तो मैंने एक जरमन माँ के शरीर पर देखा था, वह तो चोर-बाजार का नहीं हो सकता।'

'वह जरूर है, नहीं तो उसे हमारे सैनिक छीनते ही क्यों? किसी भी हालत में वह हमारे सोवियत अधिकार-क्षेत्र की सम्पत्ति तो है ही, उसे पश्चिमी अधिकार क्षेत्र में ले जाने का उस औरत को कोई हक नहीं।'

'अपने शरीर के फटे कपड़े भी नहीं?'

'हाँ, वैसे कपड़े भी नहीं।'—कमाण्डर ने अपना अधिकार बतलाते हुए कहा—'हमारे सोवियत प्रभुत्व-क्षेत्र को उस सामान से वञ्चित करने का उसे कोई हक नहीं है। अगर उसे हमारे यहाँ से जाना ही है, तो वह नंगी जाए। पूँजीपतियों को वह अधिक अच्छा लगेगा। क्यों?' वे हँसने लगे।

फिर हमलोगों ने आदमियों को घसीटकर लारियों पर लादे जाते देखा। मर्दों के बाद औरतों की भी बारी आई। वे सैनिकों की पकड़ से अपने को छुड़ाने की कोशिश कर रही थीं, पर बेकार।

'वे मुसाफिरों को क्यों घसीट रहे हैं?'—मैंने पूछा।

'इसके बहुत-से कारण हो सकते हैं'—कमाण्डर ने कहा—'उनके पास पासपोर्ट नहीं है, अथवा गलत ढंग का है, या वे पूंजी-पतियों के प्रचारक या जासूस हैं।'

'बेचारे !'—मेरे मुंह से निकला।

'मालूम पड़ता है, तुम्हें बड़ी दया आ रही है।'

'इन लोगों में से कुछ निरपराध भी तो हो सकते हैं।'

'एक भी नहीं, सब जरमन पाजी और लुटेरे होते हैं।'

'मैं विश्वास नहीं करता।'

'तुम सोवियत न्याय में विश्वास नहीं रखते !'—कमाण्डर ने डाँटते हुए-सा कहा—'तुम्हारा नाम मुझे विशेषज्ञों के दफ्तर में भेजना पड़ेगा !'

मुझे पता लग गया कि यह निरी धमकी नहीं थी।

मैं फिर रास्ते की ओर देखने लगा। इस बार मैंने सीग्रीद को एक लारी पर चढ़ाए जाते देखा। दो रूसी सिपाही सङ्गीनें ताने उसके दोनों ओर खड़े हुए थे। वह अवाक थी।

दरवाजे के पास आ मैंने फिर से धक्का दिया। रूसी संतरी ने इतमीनान दिखाते हुए कहा—'कुछ देर और रुके रहो। अब पुलिस का काम खत्म ही हो रहा है।'

मोटरों के चालू होने की आवाज आई। जब तक मैं बाहर निकला, वे दूर की एक मोड़ पर पहुँच विलीन हो चुकी थीं।

उनकी बाबत पूछने मैं फिर से कमाण्डर के पास पहुँचा। इस समय उसके हाथ में वोदका की एक बोतल थी। उससे एक गलास ढाल, मेरी ओर देख, उसने कहा—

'तुम्हें यह सब बड़ा अजीब दीखता है, क्यों ? हम कम्यूनिस्ट

अजीब धातु के ही बने लोग होते हैं। पर, हम जनता के रक्षक जो हैं, जनता हमारे ऊपर भरोसा और विश्वास रखती है, हमें भी तो उसका पात्र बने रहना है।'

इस बार मैंने उनकी किसी भी बात का विरोध नहीं किया। इससे वे कुछ खुश-से हुए नजर आए और मेरे काम की बातें बताई—'इन पश्चिम की ओर भागनेवाले जरमन नराधर्मों को इसी भांति लारियों पर भर मैं पोत्सदाम-स्थित सदर दफ्तर रवाने करता हूं।'

'फिर वहां क्या होता है?'

'जहां तक मुझे पता है, वहां वे तीन श्रेणियों में बांटे जाते हैं। जो सबसे अधिक पतित होते हैं, जिनके सुधरने की कोई उम्मीद नहीं, उन्हें साक्सेनहाउसेन की जेल में भेज दिया जाता है। जो मध्यम श्रेणी के होते हैं, उन्हें साक्सोनी की उरानियम की खान में काम के लिए भेजा जाता है। और; जो हमारे लिए जल्द उपयोगी साबित हो सकते हैं, उन्हें हम शिक्षा के लिए बाल्टिक तट के श्वेरिन नामक स्थान पर भेजते हैं।'

उन्हें धन्यवाद दे, मैं, उनके दफ्तर के बाहर निकला।

उसी दिन तीसरे पहर एक माल ढोनेवाले लारीवाले ने मुझे अपने साथ लिया और मुझे भी पोत्सदाम पहुँचा दिया।

○
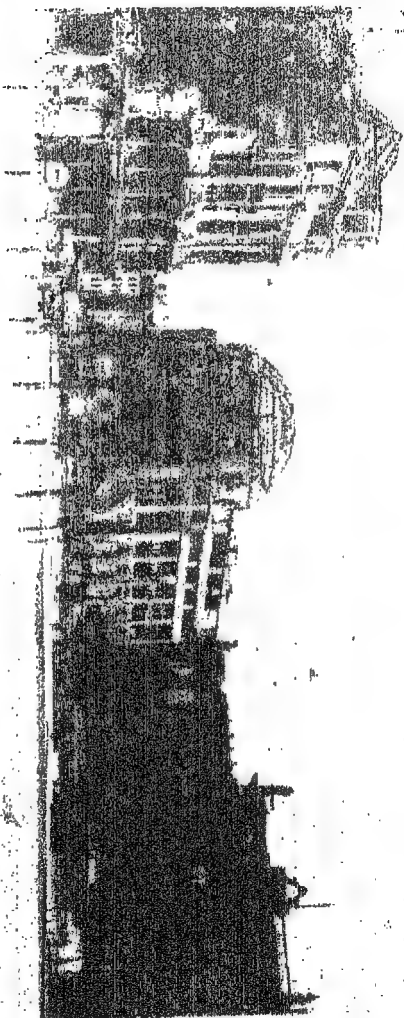
पोत्सडामर प्लात्स—युद्ध के बाद ।
(बर्लिन के रूसी, अमेरिकन और ब्रिटिश अधिकार-क्षेत्र का यही सन्धि-स्थल है)

युद्ध के पहले—पोत्सदामर प्लात्स
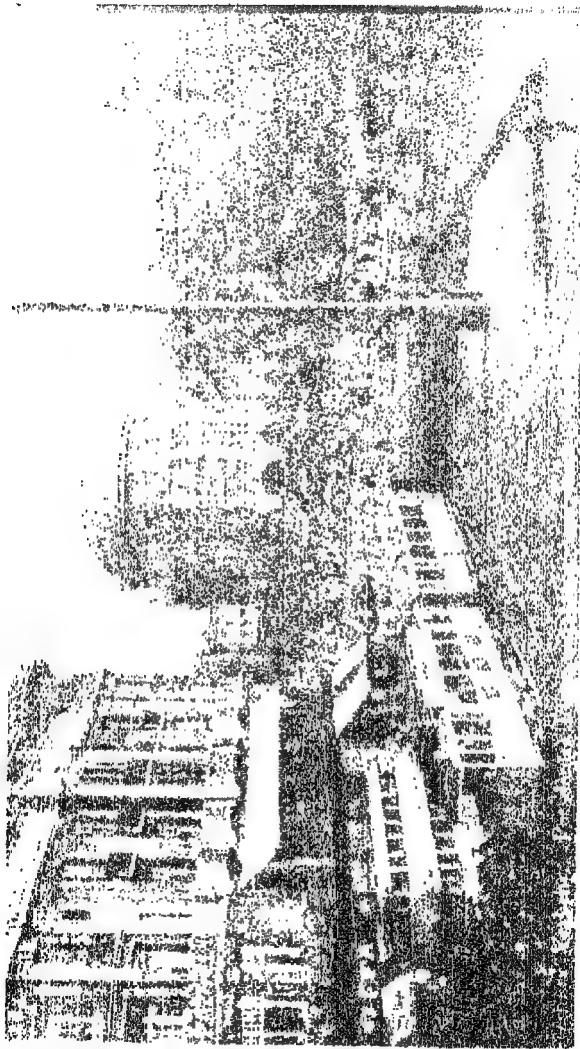
पोत्सदाम

बर्लिन से थोड़ी ही दूरी पर बसा, पोत्सदाम, लड़ाई के पहले तक सुन्दर शहर था। यहाँ बहुत बड़े-बड़े पार्क थे और उस ऐतिहासिक महल का, जिसका नाम था—'साँसूसी' (चिन्ताविहीन), अब बहुत-सा अंश नष्ट हो गया था और पार्क वीरान हो रहे थे। उनमें अब रूसी सैनिक विचरण किया करते थे।

महल के ही पास के एक मकान में, रूसियों का, पूछताछ का, दफ्तर था। वहाँ पहुँच, मैंने शरणार्थी दफ्तर के बारे में पूछा। अफसर ने जवाब दिया—'शैतान जाने !'

'कॉमरेड', मैंने कहा—'अपने दफ्तरों की बाबत तो आपको शैतान की अपेक्षा अधिक वाकफियत रहनी चाहिए।'

'तुम्हारा कहना जायज़ है'—उसने उत्तर दिया—'लेकिन यह

पोत्सदाम मास्को से बिलकुल अलग चीज है। पता नहीं, रूस से यहाँ बेवकूफ ही बेवकूफ क्यों भेजे गए हैं। ये बेवकूफ सिर्फ जरमन चुड़ैलों के पीछे दौड़ना जानते हैं, और किसी बात से इन्हें वास्ता नहीं।'

मेरे मामले में उन्होंने काफी दिलचस्पी ली। टेलीफोन उठा कई जगह दफ्तर को तलाश किया। जब उन्हें उसका पता न चला, तो टेलीफोन जमीन पर पटकते हुए उन्होंने कहा—'नागरिक! आपको अब मैं राय यह दूँगा कि आप इस रास्ते पर सीधे चले जाइए। रास्ता कोई ढाई मील लम्बा है। इसके दोनों किनारे बहुत से सोवियत दफ्तर हैं। उनमें ही कोई एक दफ्तर आपको मिल जाएगा, जो शरणार्थियों के भाग्य का निपटारा करता होगा।'

उन्हें धन्यवाद दे, मैं बाहर निकला। कई दफ्तर पार करने के बाद, एक के सामने, कुछ अनोखापन देख, मैं खड़ा हो गया।

और; दफ्तरों की ही भाँति इस दफ्तर की रक्षा, संगीन ताने एक रूसी सैनिक कर रहा था। पास खड़ी एक लड़की को डाँटता हुआ, वह कह रहा था—'भग, चल यहाँ से टल; तुझे मैं भीतर नहीं जाने दूँगा।'

'मिहरबानी करो!'—लड़की गिड़गिड़ाकर कह रही थी। थोड़े फासले पर खड़े एक सैनिक ने कहा—'तू इसके भीतर गई, तो फिर वहाँ से कभी बाहर न निकल पाएगी!'

'मैं शरणार्थी अफसर को अपना सारा मामला कह सुनाऊँगी! वह दया करेगा!' लड़की ने कातर स्वर में कहा।

'तो यहाँ भीतर घुसने का पास क्यों नहीं ले आती?' संतरी ने लड़की से कहा।

'वे पास मुझे देते ही नहीं!'

'तो शैतान के घर जा!'—संतरी ने फटकारते हुए कहा—'पर इस दरवाजे से दूर जा खड़ी हो।'

लड़की डरी-डरी-सी मालूम हुई। वह जमीन की ओर निहारने लगी। मैंने उससे पूछा—'क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ।'

'यह शरणार्थी है'—फासले पर खड़े रूसी सैनिक ने कहा।

'तो इसमें इसका क्या कसूर?'

'यह फैशिस्ट जरमन-अफसर की लड़की है।'

'झूठ' लड़की गुस्से में चिल्ला उठी—'सरासर झूठ! मैं लाटविया की रहनेवाली हूँ।'

'पर तेरे कागजों से यह साबित नहीं होता!' संतरी ने कहा।

'मैंने [illegible] किया है, इस दफ्तर से ही मुझे लाटविया लौटने के कागज मिलेंगे।'

'शरणार्थी दफ्तर क्या यहीं है?'—मैंने पूछा।

'[illegible], यहीं है!'—लड़की ने उत्तर दिया।

'तो शायद मैं [illegible] से [illegible] तुम्हें बुलवा लूँगा।'

'तुम अपना काम क्यों नहीं देखते'—दूर खड़े सैनिक ने कहा। बिना उसकी बातों का ख्याल किए मैंने संतरी से भीतर जाने की इजाजत माँगी।

'पास दिखाओ!'—संतरी ने कहा।

बर्लिन शहर में रहने के लिए मुझे जो अधिकार-पत्र मिला था, उस पर रूसी जबान में भी कुछ लिखा, मैंने उस संतरी को दिखाया।

'तुम बेशक भीतर जा सकते हो'—रास्ता छोड़ते हुए संतरी ने कहा।

'तो मेरी जिम्मेवारी पर इस लड़की को भी जाने दो न!'

'खैर, उसे भी लेते जाओ!'

'मैं आपकी बहुत अनुगृहीत हूँ।'—लड़की ने कहा। उसकी आवाज मुझे क्रिस्तेल की याद दिलाती थी। मैंने वादा किया—'मुझ से जो भी बन पड़ेगा, आपके लिए करूँगा।'

'आपने उस सैनिक से मेरा पीछा छुड़ाकर, मेरा उद्धार किया है। पर यहाँ से सही-सलामत फिर बाहर ले चलिएगा न!'

'जरूर!'

शरणार्थी अफसर खाली नहीं थे। हमें एक बगल के कमरे में इन्तजार करने के लिए कहा गया। लड़की ने कहा—'मुझे अभी भी डर लग रहा है।'

'घबराओ नहीं'—मैंने उसे भरोसा दिलाया—'रूसियों में भी बहुत से अच्छे आदमी होते हैं।'

'तुम भी अच्छे रूसी हो!'

'मैं रूसी नहीं!'

'फिर?'

'एशियाई!'

'तो मैं तुम से खुलकर बातें कर सकती हूँ?'

'जरूर!'

'तुम्हें हमारा सफेद चेहरा कुछ अजीब-अजीब लगता होगा?'

'अजीब क्यों? तुम्हारा चेहरा सुन्दर लगता है।'

'मजाक तो नहीं करते?'

'नहीं! सच कहता हूँ।'

'पर मैं शरणार्थी जो हूँ!'

'उससे क्या हुआ?'

'सब लोग शरणार्थियों से घृणा करते हैं।'

'यह बेमुनासिब है।'

'मैं भी यही समझती हूँ।'—वह कहने लगी—'देखो न, शरणार्थी बनने में मेरा अपना कसूर क्या है। मेरा जन्म हुआ है रीगा में। बचपन में रूस से भागी। तब आई लड़ाई। फिर पिता का देहान्त बम से और माता का भूख से हुआ। एक अमरीकन अफसर को दया आई, तो वह मेरा पिता बना। पर लड़ाई के आखिरी दिनों में उसे रूसी कैद कर ले गए। मेरे लिए शरणार्थी के सिवा और नाम ही क्या रहा?'

'इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं।'

'पर मुझे लोग प्लेग-सा समझते हैं। इसीलिए मैंने तय किया है कि फिर रीगा लौटूंगी। वहां कम-से-कम अपने आदमी तो हैं, वे मुझसे घृणा नहीं करेंगे।'

शरणार्थी अफसर के कमरे में हमारी बुलाहट हुई। अफसर बड़े सज्जन थे। उस लड़की का बयान सुन लेने पर उन्होंने कहा—'तुम्हारा जन्म रीगा में हुआ है तो वहां लौटने की मैं व्यवस्था किए देता हूँ। कल ही वहां के लिए एक काफिला रवाना हो रहा है। मैं तुम्हें उसी के साथ भेजे देता हूँ।'

अपने सेक्रेटरी को बुला उन्होंने उस लड़की के लिए जरूरी कागज तैयार कर देने का हुक्म दिया।

उनकी सज्जनता से प्रोत्साहित हो, मैंने सीग्रीद का भी मामला, उनके सामने रखा। उस मामले में अपनी लाचारी दिखाते हुए उन्होंने कहा—'स्टेशन-कमाण्डर ने आपको भ्रम में डाल दिया है। हमारा शरणार्थी-दफ्तर सिर्फ रूसी अथवा अब रूस में शामिल किए गए प्रदेशों से सम्बन्ध रखता है। जरमन शरणार्थियों से हमें कोई मतलब नहीं।'

'फिर उन शरणार्थियों के मामले की कहां सुनवाई होती है?'

'मेरा जहां तक खयाल है, उसके लिए कोई खास दफ्तर नहीं है। उनमें अधिकांश का मुकदमा खुली कचहरी में भी नहीं लाया जाता। वे सीधे किसी-न-किसी श्रम कैम्प में भेज दिए जाते हैं।

आपको अपनी संगिनी की तलाश वैसे ही किसी कैम्प में करनी चाहिए।'

'उन कैम्पों में वे मुझे घुसने देंगे?'

'अगर आपके पास 'पास' होगा, तो क्यों नहीं?'

'वैसा पास मुझे मिलेगा कहाँ?'

'ठहरिए, मैं पूछे देता हूँ।'—कह, वे अपने बगल के कमरे में गए। कुछ देर बाद एक रूसी में लिखा कागज मेरे हाथ में देते हुए कहा—'मैंने कैम्प-कमाण्डरों से आपकी मदद करने की सिफारिश की है। इससे अधिक और कुछ मैं इस मामले में नहीं कर सकता।'

उन्हें धन्यवाद दे हम बाहर निकले।

मुझे चिन्तित देख, उस लड़की ने कहा—'अगर मेरे लिए किसी ने इस तरह की चिन्ता की होती, तो मैं अपने को बड़ी भाग्यशालिनी मानती।'

हमारे साथ रास्ते पर और भी एक रूसी सैनिक आ निकला। उसने मुझे टोका—'आपकी यह संगिनी अवश्य ही सुन्दरी है।'

'धन्यवाद!'—मैंने उत्तर दिया—'आपको ईर्ष्या तो नहीं हो रही है?'

'... ऐसी ही है।'

'मैंने सुना है, रूसी अधिकार-क्षेत्र में सुन्दरी लड़कियों का अकेले निकलना खतरे से खाली नहीं होता।'

'इसमें सन्देह नहीं कि नए मुल्क की लड़कियाँ सब किसी का

'ध्यान अपनी ओर खींचती हैं। हम रूसियों की भी जरमनी में यही हालत है, पर यह बात बहुत बतानी नहीं चाहिए।'

अगले चौराहे पर हमलोगों ने उससे अलग रास्ता लिया।

जा निकले हमलोग एक झील के किनारे। यहीं से ड्रेसडेन की ओर जाने का सदर रास्ता था। सब से पहले मैं वहीं के श्रम-कैम्प में शहीद की तलाश करना चाहता था।

उधर जानेवाले एक लारीवाले ने एक पाकेट सिगरेट पर मुझे जगह दे दी।

लाटवियन लड़की मुझे वहां तक पहुंचाने आई थी। अलग होते समय उसने मुझे बर्लिन के पते पर लिखने का वादा किया और कहा—'जिस भांति आपने मेरी मदद की है, उसी भांति औरों की मदद कर मैं आपका ऋण चुकाऊंगी।'

वह राजकुमारी

कुछ दूर आगे चलने पर हमें मोटरों के लिए बनाया गया 'राजपथ' मिला। जहां से वह शुरू होता था, वहां दो रूसी सैनिकों ने हमारा ट्रक रोका। उन्होंने ड्राइवर और फिर मेरे कागजात देखे। उनकी यह जांच सिर्फ बहाने-जैसी मालूम पड़ी। एक ने अपना मकसद खुलासा करते हुए कहा—'इस ट्रक पर तुम्हें कुछ शरणार्थियों को ले चलना पड़ेगा।'

उनका इशारा पाते ही रास्ते के किनारे बैठे लगभग एक दर्जन औरत-मर्द हमारे ट्रक पर आ सवार हुए। रूसी सैनिकों ने टार्च जला, उन्हें बैठने की जगहें दिखाईं और उनकी गिनती की। मैं अब उन शरणार्थियों के ही बीच आ गया था।

मेरे सामने जो सज्जन बैठे थे, उनका चेहरा स्कूल-मास्टर-सा लगता था। मेरी बगल में बैठी लड़की ऊँचे खान्दान की दिखती

थी। सिरे पर बैठी औरतों के चेहरे पाउडर से पुते लगते थे। रूसी सैनिक उनकी ही बगल में दरवाजे के पास रक्षक की भाँति आ बैठे।

ट्रक 'राजपथ' पर बिना किसी बाधा के आगे बढ़ने लगा।

'नागरिक!'—एक रूसी सैनिक ने मुझ से रूसी जबान में पूछा—'आप भी अकेला-अकेला महसूस कर रहे हैं?'

'हाँ'—मैंने उत्तर दिया—'कुछ उचाट-उचाट-सा जरूर लग रहा है।'

'तो बगल में बैठी औरतों से क्यों न मेलजोल बढ़ाया जाय?'

'यह सलाह मैं नहीं लूँगा।'

'डरो नहीं, ये बड़ी साफ-सुथरी हैं। पोत्सदाम में हमारे रूसी डाक्टरों ने इनकी जाँच की है।'

'ये असहाय हैं?'

दोनों रूसी सैनिक हँस पड़े। एक ने कहा—'हम इनके असली सहायक बनें?'

'तुम तो लेखक हो न, नागरिक?'—दूसरे ने मुझ से पूछा।

'यह आपको कैसे मालूम?'

आपके कागजों की जाँच से। देखिए, मैं आपको एक बड़ी अच्छी सलाह देता हूँ। आपकी बगल में बैठी लड़की बड़ी दिलचस्प है। वह अपने को राजकुमारी बताती है। बोर्जुआ प्रेम की अद्भुत कहानियाँ उसे मालूम हैं।'

'मैं वैसी कहानियाँ नहीं सुनना चाहता।'

'तो तुम शैतान के घर जाओ !' झुँझलाकर उसने कहा—'हम तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठे नहीं रहेंगे !'

अपनी बगल में बैठी औरत की ओर फिर उसने जरमन में कहा—'तू औरत। वाकई सुन्दरी है।'

'अच्छा'—औरत हँसने लगी।

'और; मैं दावा करता हूँ, तेरे दाँत भी बड़े खूबसूरत हैं।'—अपनी टार्च जला वह कहने लगा—'अपना मुँह खोलो तो सही, देखें, तुम्हारा सौन्दर्य !'

औरत ने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया। सैनिक ने मुझ से कहा—'तुम्हारी लड़की से हमारी यह औरत ज्यादा खूबसूरत है। हम सोवियत नागरिकों को राजकुमारियों से स्वाभाविक नफरत है। देखो न, हमारी इस औरत के कंधे कैसे सुडौल हैं और कितने ताजे और नरम ! इस जगह टटोल कर देखो !' औरत का कंधा दबाते हुए उसने कहा—'यह जरमन बड़ी रसदार है।'

'चलो, हटो यहाँ से'—औरत उसे डाँटने लगी—'तुम्हारे पंजे मुझे भालुओं-से लगते हैं।'

'सिर्फ यही एक बात इन बोर्जुआ औरतों में बुरी है। ये बड़ी नजाकत और नखरेवाली हैं। जरा छुआ नहीं कि ये चीखने लगती हैं। क्यों, यह पसन्द नहीं ?'

'फिर मुझ से लगते हो, क्यों हो ?'—औरत ने अपना कंधा छुड़ाते हुए कहा।

'कैम्प में एक हफ्ता रह लेने पर तू हमारे पसन्द लायक हो जाएगी!'—रूसी सैनिक ने कहा—'हम रूसी तेरा इलाज जरमन लोगों से ज्यादा अच्छा कर सकते हैं।'

'अपनी भद्दी जबान बन्द करो!'—औरत ने सख्त हो कहा।

'जरा इन जरमनों की गुस्ताखी तो देखो—' सैनिक मुझ से कहने लगा—'रूसी सैनिकों का प्रेम-प्रसंग इन्हें भद्दा लगता है, ये भूल गई हैं कि जब इनके सैनिकों ने कुछ अरसे के लिए हमारे प्रदेशों पर आधिपत्य जमाया था, तब हमारी महिलाओं के साथ वे हैवानों से भी बदतर पेश आए थे।'

'हाँ,'—संग की जानेवाली औरत ने कहा—'आप जरूर हमारे साथ फरिश्ते जैसे पेश आया करते हैं! अगर मैं सब साफ-साफ कहूँ—'

'मुझे उसकी परवाह नहीं—' सैनिक ने कहा—'तुम रूसियों की हजार शिकायतें करो, मैं खुद यूक्रेनियन हूं, वे शिकायतें मुझ पर लागू नहीं!'

'अगर आप इस रूसी आधिपत्यवाले जरमनी की हकीकत देखें'—स्कूल अध्यापक ने कहा—'तो जरमन फौज ने रूस में जो भी हरकतें कीं, सब भूल जाएँगे।'

'यह मैं नहीं मानता।'—सैनिक ने कहा—'जरा याद तो कीजिए, जरमनों ने गैस से आदमियों को मारने के लिए खास तरह के मकान और मशीनें तैयार की थीं।'

'ये बातें बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कही जाती हैं ।'—एक कोने से आवाज आई ।

'सोवियत इनसाफ की पोल तो इसी से खुल जाती है कि हमारे-जैसे बेकसूर लोग गुलामी के कैंपों में भेजे जा रहे हैं ।'—स्कूल अध्यापक ने दोहराया ।

चारों तरफ से रूसी आधिपत्य की ज्यादतियाँ गिनाई जाने लगीं । सब लोगों के बयान अपने आप अथवा दोस्त रिश्तेदारों द्वारा झेले गए अत्याचारों से ताल्लुक रखते थे । एक ने प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए कहा—'जरमनों के जमाने में कम से कम पता लगता था कि लोग गैस के घरों में झोंके जा रहे हैं । पर आज सैकड़ों नहीं, हजारों आदमी रूसियों द्वारा एक-ब-एक लापता कर दिए जाते हैं । कौन कह सकता है कि वे गैस-घर से भी बदतर बधस्थली पर नहीं ले जाए जा रहे हैं ।'

'मैं नहीं समझता कि उन लोगों की जान ली जाती होगी ।'—सैनिक ने कहा ।

'साइबेरिया की बरफ पर उनकी स्वाभाविक मौत हुआ करती होगी ।'—एक और औरत ने कहा—'जो भी एक बार रूसियों द्वारा लापता किया गया, वापस नहीं लौटता ।'

'तुम सब के सब खौफनाक बोर्जुआ प्रचार के शिकार हो ।'—अब तक चुप बैठे सैनिक ने कहा—'तुम बदजातों से बहस करना बेकार है ।' अपनी बगल की औरत के कंधे पर सर टेक उसने आँखें बन्द कर लीं ।

कुछ ही देर में दोनों रूसी सैनिक खुर्राटे भरने लगे।

ट्रक का इञ्जिन एक सुर में फुँफकारता भागा जा रहा था। भीतर बैठे लोग ऊँघते-ऊँघते लुढ़कने लगे थे। मुझे नींद नहीं आ रही थी।

हम एक शहर के बीच से गुजरने लगे। रास्ते के दोनों ओर बिजली जल रही थी। ट्रक की खिड़कियों के बीच से भी थोड़ी रोशनी भीतर आई। उस प्रकाश में मुझे अपनी दायीं ओर बैठी लड़की का चेहरा दिखाई दिया।

उदास, गहरी चिन्ता में निमग्न, बड़ी-बड़ी नीली आँखें आश्रय की खोज में निकली जान पड़ती थीं। वैसा चेहरा मैंने किसी कला-भवन में देखा था। याद आई—राफायेल की 'सिस्तिने मादोना' जिसे बहुत साल पहले ड्रेस्डेन के चित्रागार-भवन में देखा था।

'आप क्यों गिरफ्तार की गईं?'—मैंने उससे पूछा।

'मेरा दुर्भाग्य!'

'यहाँ बैठे लोगों में आपके और साथी हैं?'

'नहीं, मैं अकेली हूँ।'

'रूसियों का व्यवहार आपके साथ कैसा रहा है?'

'बहुत खराब! उन्होंने ही मेरा जीवन बरबाद किया है।'

कुछ देर हमलोग चुप रहे। ट्रक एक जंगल से गुजरने लगा। यहाँ गहरा अँधेरा छाया था। एक लम्बी साँस ले उसने कहा—'अब मेरा कोई बचाव नहीं!'

उसे सांत्वना देने के लिए मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रख पूछा—'मुझ से जहाँ तक बन पड़ेगा, आपकी मदद करूँगा।'

'आप रूसियों के कैदी तो नहीं हैं?'

'नहीं।'

'रूसी आधिपत्य के बाहर के इलाकों में जाएँगे?'

'मुझे हर हालत में वापस लौटना है।'

'तब आप मेरे पिता के पास मेरा संवाद पहुंचा दीजिए। वे अभी हामबुर्ग में हैं।'

'जरूर पहुंचा दूँगा।'

'बड़ी मिहरबानी।'—उसने मुझे हामबुर्ग का एक ठिकाना याद कर लेने के लिए कहा।

उसकी बातों से पता लगा कि वह साक्सोनी के राजघराने की कन्या है। रूसियों के ड्रेस्डेन शहर में घुसने के काल तक वह अपने राजमहल में रहती थी। माता-पिता ठीक समय पर भाग निकले, पर वह अपने एक भाई के साथ पिछड़ गई थी। जिस समय साइबेरियन फौज की एक टुकड़ी महल में घुसी, वह उसके भीतर ही थी। मंगोल-से दीखनेवाले एक रूसी ने बैठकवाले कमरे में उसके भाई पर गोली चला दी। ऊँचे घराने में जन्म लेना ही शायद उसका कसूर था। राजकुमारी रूसी अफसरों के हवाले कर दी गई।

मगर खुदा जाने क्या। शपांगेल, गोरींजयो, ड्यूरर जैसे

महान कलाकारों की कीर्ति से रूसी सैनिक अपने जूतों का कीचड़ साफ करने लगे। लकड़ी पर की सुन्दर कारीगरी कमरा गरम करने के लिए आग में झोंक दी गई। हीरे-जवाहरात की तलाश में छत और दीवार कुरेदे जाने लगे।

'खजाने की खोज अब भी जारी है।'— उसने कहा—'मुझे पता नहीं वह कहां छिपा रखा गया है, पर रूसी मुझे उसे ढूंढ निकालने के लिए कहते हैं। इसी जांच के सिलसिले में मैं पोत्सदाम-स्थित बड़े रूसी अफसरों के पास ले जाई गई थी। अब उन्होंने यह धमकी दी है कि अगर एक हफ्ते के भीतर उन्हें महल का खजाना न मिला, तो वे मुझे उरानियम की खान में गुलाम की तरह काम करने के लिए भेज देंगे।' चारों तरफ सन्नाटा देख, मेरे कान के निकट मुँह ला, उसने कहा—'पर उसके पहले मैं इनके पंजे से भाग निकलना चाहती हूं।'

सवेरा होते-होते हम ड्रेस्डेन शहर में दाखिल हुए। यहां खँडहर और ध्वस्त हुए मकानों का तांता खत्म होता नहीं दीखता था। एल्ब नदी की भी ठठरी निकल गई-सी दीखती थी।

'यह सारी ध्वंस-लीला १३ और १४ फरवरी १९४५ को समाप्त की गई थी।'—स्कूल अध्यापक ने कहा—'किस अपराध में, यह बम बरसानेवाले भी नहीं जानते।'

हमारी कतार में दरवाजे के पास बैठे रूसी सैनिक ने हमलोगों की ओर सिर घुमाकर कहा—'इन खंडहरों के नीचे अब भी दस हजार सूअर जरमनों की लाशें दबी ।'

युद्ध के पहले—ब्रान्डेन बुर्गर टोर

युद्ध के बाद का ब्रान्डेन बुर्गर टोर (इस द्वार के उस पार ही सोवियत संसार है)
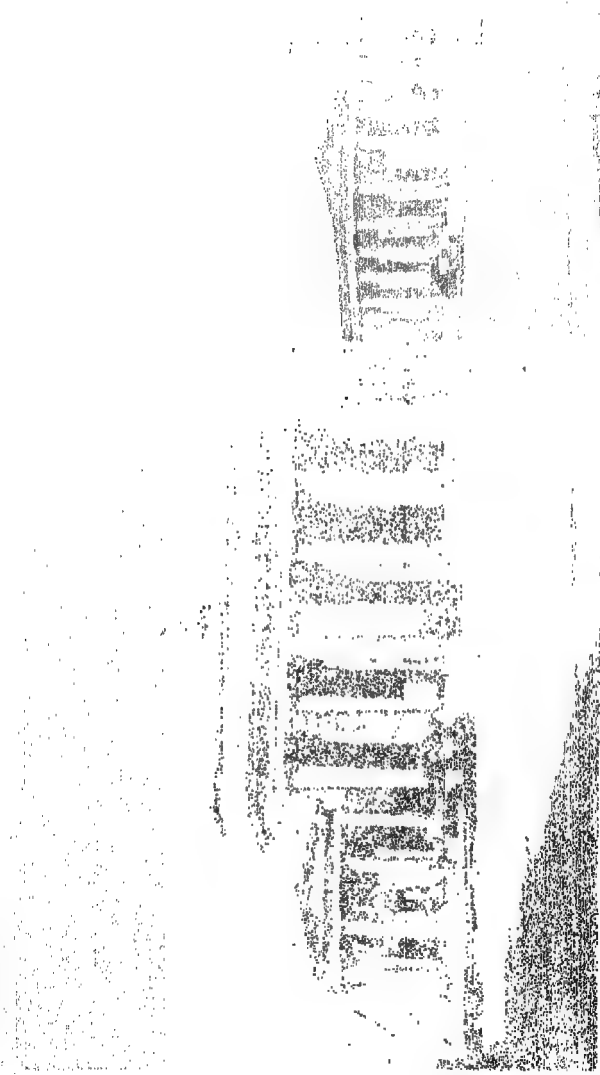
दूसरे सैनिक ने हुंकारी देते हुए कहा—'यह ऐतिहासिक सत्य है।'

ट्रक पहाड़ी भूमि पर बढ़ने लगा। उसकी चोटी पर साक्सोनी का राजमहल था। महल और एल्ब नदी के बीच झोपड़े-सी दीखनेवाली मकानों की कतारें थीं। उनकी ओर दिखाते हुए राजकुमारी ने कहा—'बेगार का कैंप।'

हमारे बीच के सब जरमन कांपते-से नजर आए। रूसी सैनिकों ने फिर से उनके कागजों की जांच की और एक-एक कर उन्हें कैंप के फाटक के भीतर रवाना किया। मुझे रोकते हुए उसने कहा—'इसके भीतर जाने के लिए आपको शहर कमाण्डर से इजाजत लेनी पड़ेगी।'

मैं ट्रक के पास खड़ा रहा। जरमनों की कतार, कैंप के मकानों की ओर बढ़ने लगी। वे मकान कसाईखाने-से लगते थे।

सबसे पीछे राजकुमारी जा रही थी। वह अपने पांव इस भांति घसीट रही थी मानो उसे किसी वधस्थली पर ले जाया जा रहा हो।

०
० ०

राजमहल

बेगार-कैम्प में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त करना सहज नहीं था। इसके लिए मुझे बहुत से सोवियत दफ्तरों में पूछ-ताछ करनी पड़ी। आखिर एक वैसे दफ्तर में जा घुसा, जहाँ उन्होंने मुझे गिरफ्तार कर लिया। वहाँ के अधिकारियों का कहना था कि मेरे कागजात दुरुस्त नहीं थे। उनके कथनानुसार मेरा पासपोर्ट भी दुरुस्त नहीं था, क्योंकि वह रूसी भाषा के सिवा और एक जबान में लिखा था।

मैंने अपना प्रेस-कार्ड उन्हें दिखाया, जिस पर कुछ रूसी अक्षर छपे थे। लाल फौज के एक मेजर ने बताया—'तब तो आपको जेनरल के पास जाना ही पड़ेगा।'

'बड़ी खुशी से!'—मैंने उत्तर दिया।

टेलीफोन करने पर पता चला, जेनरल से तत्काल ही मिला जा

सकता है। मेजर मुझे उनके पास ले चले। एक रूसी जेनरल से मिलने का यह मेरा पहला मौका था।

सौभाग्यवश जेनरल बड़े सीधे-सादे आदमी नजर आए। उन्हें खुशी इस बात की हुई कि बिना किसी दोभाषिए के वे मेरे साथ बातें कर सकते थे। विस्तार-पूर्वक उन्होंने मुझे जरमन सम्बन्धी सोवियत नीति बताई। यह अक्षर-अक्षर वही था, जो हम हमेशा सोवियत अखबारों में पढ़ा करते थे। मैंने उन्हें न टोका और न उनसे कोई प्रश्न किया, इस बात की उन्हें बेहद खुशी हुई। उन्होंने कहा—'आप जैसे समझदार आदमी मुझे बहुत कम मिले हैं। बातूनी आदमी मुझे पसन्द नहीं।' फिर, मेरे साथ आये मेजर को हुक्म दिया—'इनके ठहरने का इन्तजाम साक्सोनीवाले राजमहल में किया जाय।'

इस भाँति की खातिरदारी की मैंने कभी आशा भी नहीं की थी।

महल के मेरे कमरे, नदी की ओर, बड़े सजे-सजाए थे। यहाँ का रहनेवाला अनायास ही अपने को 'राजकुमार' मान ले सकता था।

पर सामने का दृश्य दुखमय और उदास दीखता था। टूटे-फूटे मकान खुले हुए घाव-से लगते थे। कारखाने के बिगुल बजते तो मालूम पड़ता जैसे स्वयं शहर ही कराहने लगा हो। नदी गदली लगती और आकाश का रङ्ग धुँए-सा दीखता था।

मेजर मुझे भोजन-गृह में ले गए। वहाँ का ठाट राजसी था।

मुसकुराते हुए मेजर ने मुझसे पूछा—'शायद, राजकुमारी-द्वारा परोसा भोजन आप अधिक पसन्द करेंगे ?'

'यह अवश्य ही बहुत बड़ा सत्कार होगा !'

मेजर ने घण्टी बजाई। 'राजकुमारी' हाजिर हुई। उसका चेहरा पहले की अपेक्षा अधिक फीका पड़ गया-सा दीखता था। आँखें उसने ऊपर की ओर नहीं उठाईं। मेजर ने टिप्पणी की—'यह प्रोलेतारियन नहीं, इसलिए इसे सुन्दरी नहीं कह सकता; पर, औरत के काम की तो है !'

राजकुमारी का चेहरा गुस्से और लज्जा से लाल हो आया। वह दरवाजे से उठंग, खड़ी हो गई। मैंने मेजर को सलाह दी—'बिना वजह किसी को चोट पहुँचाना अच्छा नहीं !'

'पर, इन नागिनों के लिए हम सोवियत निवासियों को कोई ममता नहीं होती !'

इस राजकुमारी के भीतर कैसा द्वन्द्व चल रहा होगा, इसका मैं अन्दाज लगाने लगा। शत्रुओं-द्वारा वह अपने ही महल में अपमानित की जा रही थी। उसने अपना सिर फेर लिया मानो किसी के वार से वह अपना बचाव कर रही हो। मुझे लगा, वह अवश्य ही मुझ से भी घृणा करने लगी होगी।

भोजन खत्म करते-करते मेजर ने उसे हुक्म दिया—'सुन बदजात ! आज शाम को हम कुछ देर से लौटेंगे। तू इन्तजार करना, बेशरम !'

बिना ऊपर की ओर आँखें उठाए, वह मेज साफ करने लगी।

शाम को मुझे मेजर ऑपेरा दिखाने ले गये। पुराना ऑपेरा-गृह नष्ट हो गया था, इसलिये अभी एक और जगह तात्कालिक व्यवस्था की गई थी। हॉल में बैठते-बैठते, बड़े गर्व से, मेजर ने कहा—'देखते हो, हम रूसी किस भाँति जरमनों को सङ्गीत-शिक्षा दे रहे हैं। जब तक इन निकम्मों को सिखाओ नहीं, ये गाना भी नहीं जानते।'

'क्यों, ड्रेस्डेन तो गान और सङ्गीत के लिये मशहूर रहा है।'

'इनका सङ्गीत-गान क्या हमारे मास्को जैसा विकसित था?'

'क्यों नहीं?'

'तुम नहीं जानते। संसार का कोई भी ऐसा देश नहीं है जो रूस की बराबरी कर सके। सभी कलाओं का आरम्भ हमारे ही यहाँ से हुआ है, संगीत का भी। हमारा संगीत हमेशा सारे संसार में श्रेष्ठ रहा है।'

'दूसरे देशों ने संगीत-संस्कृति के विकास में जो हिस्सा लिया है, उसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता!'

'और देशों का हिस्सा बहुत नगण्य रहा है, हर क्षेत्र में।'

अबतक मुझे सोवियत अफसरों के दिमाग की बनावट का काफी परिचय मिल चुका था। किसी बखेड़े में न पड़ने के ख्याल से मैं चुप रहा।

मेजर को अपनी जीत की खुशी हुई।

'वोद्का ला—शैतान की बच्ची !' खाने के कमरे में प्रवेश करते ही मेजर ने 'राजकुमारी' को हुक्म दिया—'वोद्का और सारडीन मछली, बदजात !'

'क्या पग-पग पर उसे अपमानित करना जरूरी है ?'—मैंने मेजर से पूछा ।

'दोस्त, मालूम पड़ता है तुम्हारे दिल में इन खूंखार बोर्जुआ औरतों के लिये बड़ी ममता है । तुम्हें मालूम नहीं, ये सब की सब परले सिरे की हरामजादी हैं ।'

राजकुमारी वोद्का के ग्लास ठीक करने लगी । मेजर कहता गया—'हम रूसी इन जरमन पिशाचों के प्रति रहम करना नहीं जानते । ये उसके काबिल नहीं । अगर मेरा वश चले तो इन सब जरमनों को एक मुहूर्त में खत्म कर दूँ । दरअसल, मैंने इन्हें खत्म करना शुरू किया था, पर हमारे ऊंचे अधिकारियों ने रोक दिया । ठीक इसी कमरे के दरवाजे पर, मैंने इस महल में घुसते ही, एक जवान जरमन जल्लाद को गोली से उड़ा दिया था । सिर्फ इसीलिए कि वह बेहूदा हमारे सामने सीना ताने खड़ा था !'

राजकुमारी के हाथ कांपने लगे । ग्लास उसके हाथ से छूट, नीचे जा गिरा । मेजर गुस्से में आ उसे डांटने लगा—'तू, डायन ! ठीक से परोस, नहीं तो अभी तेरी खोपड़ी उड़ा दूँगा ।'

राजकुमारी त्रासग्रस्त-सी कांपने लगी—पता नहीं डर या अत्यधिक गुस्से के कारण ।

कई ग्लास वोद्का ढाल चुकने पर, मेजर के मिजाज में पलटा आया। राजकुमारी के कंधे पर हाथ रख, वह कहने लगा—'एक रात में तू मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती, बल्कि मैं ही तुझे मोलैनारी बना दे सकूँगा।' अपने वोद्का का ग्लास, वह उसके होंठों से लगा, समझाने लगा—'तू सिर्फ बिच्छू नहीं, बल्कि जहरीली नागिनी है, यह मैं जानता हूँ। पर, फिर भी मैं यहाँ के मैनेजर से तेरे लिए सिफारिश करूँगा कि वह तुझे हमारा जूठा खाने दिया करे। देखती नहीं बदसूरत! मैं कितना नम्र हूँ। आ, थोड़ा वोद्का पी!'

मेजर का हाथ एक ओर हटा, राजकुमारी वहाँ से भाग निकली।

मैं अपने कमरे में वापिस गया। वह मेरा बिस्तर ठीक कर रही थी। अपनी समवेदना दिखाते हुए मैंने उससे कहा—'मुझे बड़ा अफसोस है!'

वह बिना कुछ कहे दरवाजे के पास गई और उसे खोलने के पहले कहा—'मैंने अपने भाई का प्रतिशोध लेना तय किया है, चाहे जान जाए या रहे। मेरे पिता से कह देना।'

'राज······'—मैं उसे वापिस बुलाना चाहता था, पर तब तक एक झटके में दरवाजा बन्द कर वह गाएब हो चुकी थी।

सूर्योदय के पहले ही कुछ खटपट सुन, मैं नीचे आया। मेजर का चेहरा उतरा हुआ था। उसने कहा—'पक्के शैतान की छोकड़ी

थी वह। मैंने जरा-सी ढिलाई दिखाई कि वह छुरा तान खड़ी हो गई। घंटा भर हुआ, मैंने उसे यूरेनियम की खान में भिजवा दिया।'

एब नदी की ओर मेरी निगाह गई। उसके बांए किनारे, काले रंग का ट्रक दौड़ा जा रहा था, अंधेरे क्षितिज की ओर !

विश्राम-गृह

मैंने यूरेनियम-खान को देखना निश्चय किया। इसके लिए मैंने जेनरल से इजाजत माँगी। आश्चर्य प्रकट करते हुए उन्होंने कहा—'क्या हमारे सोवियत जोन में कोई वैसी खान है?'

'यह तो सारी दुनिया जानती है कि आपके इलाके से बहुत-सा यूरानियम सोवियत स्थित एटम बम के कारखानों में भेजा जाता है।'

'मैं ये बातें पहले पहल ही सुन रहा हूँ।'

'लोगों का कहना है कि वे खान जरमन-चेकोस्लोवाकियन सीमा के पास-पास हैं।'

'मुझे जहाँ तक पता है, उस ओर बहुत से विश्राम-गृह हैं।'

'तो मैं उन विश्राम-गृहों को ही देखना चाहता हूँ।'

'बड़ी खुशी से! आपके साथ के मेजर आपको वहाँ ले जायेंगे।'

मेजर का साथ जाना, मुझे अच्छा नहीं लगा। अब तक मुझे पता चल गया था कि वे सोवियत खुफिया विभाग के कर्मचारी थे और उनका काम, जिन लोगों से मैं बातें किया करता, उनके सम्बन्ध में रिपोर्ट करते जाना था।

उनकी संगति में मैं अपने को कैदी-सा अनुभव करने लगा था। पर, फिर ख्याल आया—जो स्थान बाह्य जगत की पहुँच के बाहर रखे जाते हैं, एक बार उनका निरीक्षण तो किया जाय—कैदी की भाँति ही सही।

मेजर मुझे गाड़ी में बिठा, उस 'निषिद्ध-प्रदेश' की ओर ले चले।

पहली दृष्टि में, मुझे यूरानियम पहाड़ियों में कोई विशेषता नहीं दिखाई पड़ी। उनके सम्बन्ध में, अमेरिकन अखबारों में पढ़े ब्यौरे भी सत्य नहीं निकले। गौर से देखने पर भी वहाँ मुझे न तो मुर्दों की लाशें और न उन पर मचलते रूसी सैनिक ही दिखाई दिए।

चारों ओर का दृश्य, स्विटजरलैंड के सुन्दर प्रदेशों के समान सुन्दर था। उनकी ओर दिखाते हुए मेजर ने बताया—'इस इलाके में चारों ओर विश्राम-गृह बने हैं, जहाँ हमारे सोवियत सैनिक बारी-बारी से कुछ समय बिताने आया करते हैं।'

कुछ दूर आगे जाने पर, हमारी मोटर का इंजन गड़बड़ होने लगा। मेजर उसे खोल कर देखने लगे। मालूम पड़ा, उसे दुरुस्त

करने में कुछ देर लगेगी। तब तक पैदल आगे बढ़, मोटर का इन्तजार करना मैंने तय किया। पहाड़ियों में भी मुझे अकेला छोड़ना, मेजर को पसंद नहीं था। पर, वे मोटर छोड़, मेरे साथ आ भी नहीं सकते थे।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर, मुझे डिनामाइट चार्ज किए जाने के शब्द सुनाई पड़े। दाएँ हाथ की ओर, कुछ आदमी पत्थर तोड़ते भी नजर आए। जो पगडण्डी उस ओर जाती थी, उस पर धूलि भरी थी।

मैं उस पगडण्डी पर ही आगे बढ़ा। पर, उधर का रास्ता तार से घेर, बन्द कर दिया गया था। भीतर जाने का छोटा-सा दरवाजा था जिसके आगे एक संतरी पहरा दे रहा था।

उसकी ओर बिना निगाह फेरे ही मैं आगे बढ़ता गया। उसने मुझे अवश्य ही खान का कोई कर्मचारी समझा होगा। बेतरह धूलि उड़ते रहने के कारण, मेरा चेहरा भी उसे साफ-साफ दिखाई नहीं दिया होगा।

एक खाई के किनारे, कुछ आदमी ट्रॉली के डब्बों पर, पत्थर लाद रहे थे। उनमें निरीक्षक की भाँति लगनेवाले एक आदमी ने आगे आ, मुझ से पूछा—'आप जरमन बोलते हैं?'

मैंने हुँकारी दी। उसने दूसरा प्रश्न किया—'क्या आप रूसी अधिकारियों द्वारा यहाँ भेजे गए हैं?'

'नहीं, मैं अपने देश से यहाँ की हालत देखने आया हूँ।'

वे अवाक् हो, मेरी तरफ देखने लगे। उन्हें ऐसा जान पड़ा मानो मैं और किसी लोक से यहाँ आ टपका हूँ। पर साथ ही इससे उनके जबान की सारी रुकावटें दूर कर दीं। वे रूसियों के खिलाफ की अपनी-अपनी शिकायतें खुलेआम जाहिर करने लगे। मुझे घेर कर लगभग एक दर्जन आदमी आ खड़े हुए।

'हम उन लोगों में हैं'— एक युवक ने कहा—'जिन्हें बाहर की दुनिया मरे हुओं में गिना करती है।'

'हमारी हालत मरे हुओं से भी बदतर है'— दूसरे ने कहा— 'रूसी हमें इन पत्थरों के नीचे कुचल, हमारी हालत मरे चूहों से भी बदतर बना रहे हैं।'

कंकाल से दीखनेवाले एक बूढ़े ने कहा—'हम भूखे रहते हैं, बिल्कुल भूखे। पानी-सा पतला 'सूप' और दो छटाक काली रोटी देकर दस से बारह घण्टे रोजाना काम लिया जाता है। इस खूराक से हम कुछ महीनों से ज्यादा जिन्दा नहीं रह पाते। जो मर जाते हैं, उन्हें पुराने खानों में फेंक दिया जाता है, उनकी जगह फिर नए बेगार पकड़ कर लाए जाते हैं और यह पत्थर का कारखाना चालू रहता है।'

'आप कल्पना भी नहीं कर सकते'— एक मध्यवयस्क ने कहा —'ये रूसी कितने झूठे हैं। वे हमें यह कहकर यहाँ लाए थे कि हमें विश्रामालयों में काम करना पड़ेगा। यह अच्छा विश्रामालय है! नात्सियों के बंदी कैंप तो क्या, दांते का नरक भी इसके

सामने फीका पड़ जाता है। यहां हम अपने जीवन से ही विश्राम लिया करते हैं।'

एक रूसी सन्तरी को आता देख, वे काम में लगने लगे। निरीक्षक-से खड़े व्यक्ति से मैंने पूछा—'आखिर किस कसूर की सजा आपको यहाँ भुगतनी पड़ रही है?'

'कसूर?'—उसने उत्तर दिया—'सब से बड़ा कसूर हमारा यह है कि हमने पोलैण्ड और चेकोस्लोवाकिया की सीमा पर जन्म लिया है। हमें इन खानों में खदेड़, पोलिश और चेक कम्युनिस्टों-को हमारे घरों में बसाने की व्यवस्था की जा रही है।'

'आप लोग पहले फॅसिस्ट अथवा हिटलर के कट्टर समर्थक तो नहीं रहे?'

'यहाँ जिन लोगों को आप देख रहे हैं, इनमें एक भी हिटलर का समर्थक नहीं था। हम साधारण मजदूर-किसान रहे हैं। असली हिटलर के समर्थक वे धनी लोग थे जो रूसियों के राज्य में आज भी उनकी मददकर, मौज पा रहे हैं।'

'ऐसी बात है?'

'यही तो मजदूर-किसानों का स्वर्ग है जिसका ढिँढोरा, रूसी सारी दुनिया में, पीटा करते हैं।'

'तुम यहाँ कैसे घुस आए?'—मेजर अपनी व्यग्रता छिपाए-बिना कहने लगे—'जेनरल ने तो तुम्हें यहां आने की अनुमति नहीं दी थी।'

'रास्ता भूल, इस ओर आ निकला था !'

'इन जरमन शैतानों ने जरूर तुम से सोवियट हुकूमत की शिकायतें की होंगी !'

'आपका अपना अन्तःकरण ही काला दीखता है।'

'तुमने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया। हमने तुम्हारे साथ मित्रता का व्यवहार किया, तुम उसी का एहसान अदा कर रहे हो !'

'आप घबड़ाएँ नहीं'—मैंने उन्हें भरोसा दिलाया—'मैंने कोई अनुचित कार्य नहीं किया है।'

'यहाँ से मुझे खींच ले जा, मेजर ने कहा—'पर असली विश्राम-गृह तो तुम्हें दिखाना बाकी ही रहा !'

एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर वह जगह थी जिसका नाम था—बास्ताई। मुझे पेरिस-स्थित फ्रेंच बास्ताई की स्मृतिएँ याद आने लगीं।

लेकिन, यह बास्ताई देखने में खतरनाक नहीं था। गाड़ी चढ़ाई के कुछ नीचे ही छोड़, हम पैदल ऊपर चढ़े। चोटी पर एक चाय-घर था। इसमें घुसने के पहले, मैं अपने सामने की ओर के एक और चोटी की ओर देखने लगा। गौर से उधर निहारते देख, मेजर ने कहा—'वहाँ पहले जरमन अपने कैदियों को क्रूरतापूर्ण सजा दिया करते थे। ये जरमन हमेशा से ही बड़े क्रूर रहे हैं।'

'अब वहाँ क्या है ?'—मैंने पूछा।

'इस चाय-घर में काम करनेवाली कुछ लड़कियाँ यहाँ रहा करती हैं।'—इतना कह, वे मुझे चाय-घर के भीतर खींच, ले चले।

यह चाय-घर पूरा रूसी दीखता था। वहाँ बैठे लोग भी रूसी ही थे। मैंने मेजर से पूछा—'यहाँ एक भी जरमन दिखाई नहीं देता!'

'इस स्थान पर कोई जरमन रहा ही नहीं! सिर्फ धनी जरमन यहाँ रहा करते थे जो हमारे इधर आते ही यहाँ से भाग गए!'

'वे कहाँ चले गए?'

'शायद, पश्चिम के अपने पूँजीवादी दोस्तों के यहाँ अथवा किसी शैतान के घर, हम उनका हिसाब नहीं रखते!'

हम एक किनारे की जगह पर जा बैठे। एक दूसरे कोने में, मेजर को अपने कुछ परिचित दिखाई दिए। तुरत वापिस आने का वादाकर वह अपने दोस्तों के पास चला गया।

एक खानसामा मेरे पास आ, रूसी जबान में फरमायश माँगने लगा। मैंने उससे पूछा—'तुम तो जरमन दीखते हो!'

'जरमन जरूर हूँ, पर यहाँ जरमन बोलने की मनाही है।'

'यह जगह रूस का ही एक टुकड़ा बन गया दीखता है।'

'है ही दरअसल! क्या आपको यह अधिक अच्छा नहीं लगता?'

'मेरा पसन्द कुछ दूसरे ढङ्ग का है।'

'पर, मैं जरूर बदल गया हूँ। मैं पन्द्रह साल से कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर हूँ।'

'रूसी यहाँ जो कुछ भी करते हैं, आपको अच्छा लगता है ?'

'आप पार्टी के सदस्य नहीं हैं ?'

'नहीं !'

'आजाद विदेशी ?'

'हाँ, मैं आजाद विदेशी हूँ !'

'तब मैं खुलकर कहता हूँ । रूसी यहाँ बहुत-से अच्छे काम कर रहे हैं, इसमें सन्देह नहीं । पर, हमारी औरतों के साथ उनका व्यवहार अच्छा नहीं है ।'

'यह दुर्व्यवहार क्या आम बात है ?'

'हाँ, वैसा सरेआम नहीं, पर जो है वह भी कम नहीं है । सब से अधिक अखरनेवाली बात यह है कि इसकी फरियाद कहीं भी सुनी नहीं जाती । उस सामने की चोटी पर के यन्त्रणा-गृह का ही हाल लीजिए ! वहाँ कई सोवियत अफसर जरमन लड़कियों को उनकी मर्जी के खिलाफ बन्द किए रखते हैं ; पर, यह शिकायत कहीं भी सुनी नहीं जाती । कुछ दिन हुए, मेरी बहन को भी वे वहाँ पकड़ ले गए थे, बड़ी मुश्किल से उसे मैं छुड़ा पाया !'

'फिर भी तुम उन्हीं रूसी अफसरों के खानसामा बने हुए हो !'

'क्या किया जाए ? मैं इसलिए भी यहाँ टिका हूँ कि मेरे जरिए कितने जरमनों का थोड़ा-बहुत कल्याण होता है । मैं उस यन्त्रणा-गृह से भागनेवाली लड़कियों की छिपे-छिपे मदद करता हूँ ।'
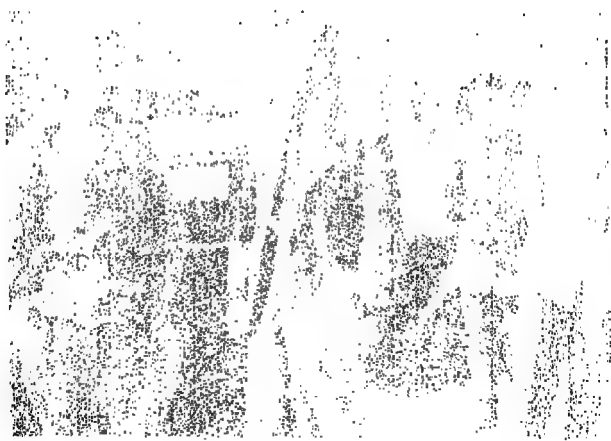
मेजर को अपनी ओर आते देख, खानसामे ने मुझसे कहा—'यहाँ का लेमनेड अच्छा है, वही मैं आपके लिए लाता हूँ।'

'मैं एक अच्छी खबर ला रहा हूँ—' मेजर ने कहा—'राजकुमारी यहीं है। एक साथी अफसर से उसे बगल के कमरे में ले आने के लिए मैंने कहा है। तुम्हारी सलाह वह जरूर मानेगी। उससे अपना झगड़ालू स्वभाव त्याग देने के लिए कहो, मैं उसे फिर से महल में काम देने के लिए तैयार हूँ।'

'मैं उसे सलाह देनेवाला कौन होता हूँ?'

'मैंने देखा है, वह तुम्हारी इज्जत-सी करती है। उसके आते ही मैं तुम्हें बुलाऊँगा।'

वह फिर अपने दोस्त के पास चला गया।

खानसामे के वापिस लौटने पर मैंने उसे अच्छे सिगरेट की एक डिबिया दी। बहुत खुश हो, उसने पूछा—'मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?'

'मैं एक जरूरी खबर चाहता हूँ।'

'कहिए, अगर मेरे बस का हुआ, तो मैं आपको सब खबरें दूँगा।'

'बर्लिन की कोई लड़की हाल में इधर लाई गयी है?'

'नहीं।'—सिर हिलाते हुए उसने कहा—'बर्लिन की कोई लड़की आज तक यहाँ नहीं लाई गई। खुफिया अफसरों की बातों से मुझे पता लगा है, बर्लिन की लड़कियों के लिए, बाल्टिक तट के श्वेरिन नगर में एक खास कैम्प खोल रखा गया है।'

'यह खबर सही है ?'

'इसमें मुझे सन्देह नहीं।'

'और, उस यन्त्रणागृह की एक लड़की को बाहर निकालने में तुम कौन-सी मदद पहुँचा सकते हो ?'

'वहाँ से निकाल लाना कुछ कठिन नहीं है, कठिन है उन्हें रूसी अधिकार-क्षेत्र के बाहर ले जाना। इसकी व्यवस्था आपको करनी पड़ेगी। रूसी सन्तरियों के उपहार के लिए घड़ी या चमकती हुई कोई चीज आप अगर मुझे भेज दें, तो मैं आपकी परिचित लड़की को एल्ब नदी में चलनेवाले किसी जहाज पर छिपा दूँ। और जब वह जहाज अंग्रेजी अधिकार-क्षेत्र में प्रवेश कर जाय, तो वहाँ का मामला आपको खुद समझ लेना पड़ेगा।'

मेजर मुझे अपने साथ बगल के कमरे में ले गया।

राजकुमारी, खिड़की से, एल्ब नदी की ओर झाँक रही थी। मुझे जान पड़ा, मानों वह प्रार्थना में निमग्न है। मैंने वैसी तल्लीनता सिर्फ चित्रों में ही देखी थी।

'इसके छुटकारे के सम्बन्ध में मैं जेनरल से बातें करूँगा'—मैंने मेजर से कहा। बिजली लगने की भाँति वह चौंक पड़ा और बोला—'हरगिज नहीं!'

'इसे यन्त्रणा देना भयानक अपराध है।'—मेजर की ओर घृणापूर्वक देखते हुए मैंने कहा।

'इसे यन्त्रणा देने ही कौन जा रहा है?'—मेजर सफाई-सी

देने लगा—'सिर्फ यह एक सबक लेने यहाँ आई थी, अब वह महल में वापिस लौट चलेगी, इतना मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ।'

उस कमरे में पाँव रखे ही बिना मैं वापिस लौट चला।

पहाड़ी के नीचे उतरते समय मैंने पीछे फिर कर देखा।

आकाश में रुआवनी सूरतवाले मेघ मँडल रहे थे। उनके नीचे की पगडण्डी पर कुहासा नजदीक पहुँच रहा था। उसी रास्ते वह, एक सन्तरी के पहरे में, ऊपर चढ़ रही थी। पाँव वह इस भाँति उठा रही थी, मानों वे भारी जञ्जीरों से जकड़े हों।

उनसे बहुत नीचे—एल्ब नदी में—एक जहाज चलता दिखाई दिया। वह भी मन्दगति से जा रहा था; शायद, बोझ के आधिक्य से।

जब तक सम्भव था, मैं उधर देखता रहा। फिर, उस ओर भी घना कुहासा घिर आया।

श्वेरिन

मैं श्वेरिन जाने की योजना तैयार करने लगा। रेल से जाना नहीं चाहता था; क्योंकि उसमें बहुत बखेड़ा था। रूसियों द्वारा इतने स्थानों पर जाँच की जाती थी कि श्वेरिन के बजाय बड़ी आसानी से आदमी साइबेरिया पहुँच जा सकता था।

मैं ट्रक की खोज में निकला। सौभाग्यवश राजमहल में मुझे काफी वोद्का और सिगरेट सस्ते दामों पर मिल गये थे। इन चीजों की कद्र ड्राइवर, और खास कर रूसी, काफी किया करते थे। मैं रूसी अथवा उनके हितैषी देशों के किसी ड्राइवर के साथ सफर करना अधिक अच्छा समझता था; क्योंकि रास्तों में उनकी जाँच नहीं होती थी। आने-जाने के कानून में भी उन्हें बड़ी आजादी थी। जरमनों का खून कर देना, उनके लिए, कोई खास गुनाह नहीं समझा जाता था।

यह भी मैंने सुन रखा था कि बाल्टिक तट के इलाकों पर रूसियों का बहुत सख्त पहरा है। वहाँ पकड़े जाने पर, छुटकारा पाना आसान नहीं था। पर, उस क्षेत्र में पहुँचने के भी कई बहाने मैंने सोच निकाले। मैं रूसियों से कह सकता था कि मेरा विदेशी जहाज छूट गया है। फिर, किसी जहाज-खलासी के कागज, थैली या उसके हृदय तक को खो देने में कोई नवीनता नहीं थी। और नहीं, तो वोदका की झोंक में तो मैं अवश्य जाँच-केन्द्र पार कर जा सकता था। शराब के नशे में मस्त सन्तरी, हमेशा से मस्त जहाजियों की कदर करते आए हैं।

सदर रास्ते पर, मुझे एक हंगेरियन ट्रकवाला मिला। गाल उसके लाल थे और एक आँख फूटी हुई थी। वह मार्गदेबुर्ग जा रहा था, जो श्वेरिन के मेरे रास्ते पर ही पड़ता था। इस समय, अमेरिकन लाइसेंसप्लेट पलटकर वह रूसी प्लेट लगाने में था। मैंने उससे उसका कारण पूछा। मुसकुराते हुए उसने बताया—'अमेरिकन जनता के शत्रु होते हैं, इसलिए उनकी गाड़ियों की बहुत जगह जाँच की जाती है। मैं हमेशा से समाजवादी रहता आया हूँ, इसलिए इस समाजवादी आधिपत्य-क्षेत्र में अपना नम्बर बदले डाल रहा हूँ।'

'लेकिन, आपको अमेरिकन नम्बर मिला कहाँ था?'

'अमेरिकन प्रभुत्व-क्षेत्र में।'

'तो आप अपनी मर्जी से गाड़ी का नम्बर जब चाहे बदल लिया करते हैं?'

'मैं सिर्फ विदेशी नम्बर के बदले रूसी नम्बर ले लिया करता हूँ।'

'और जब आप अमेरिकन क्षेत्र में वापस होते हैं?'

'हमेशा बिना गाड़ी के लौटता हूँ। वहाँ हर बार कोई-न-कोई गाड़ी मिल जाती है, वहाँ बहुत-सी गाड़ियाँ खाली जो पड़ी रहती हैं। यही तो मेरा व्यवसाय है।'

वोदका या सिगरेट लेने से इनकार करते हुए उसने कहा—'यह आप अपनी आगे की यात्रा के लिए रख लीजिए। मुझे अगर आप, हरे पीठवाले अमेरिकन दे सकें, तो दीजिए, मैं उनका अच्छा व्यवहार करना जानता हूँ।'

मैंने उसे कई डालर दिए। उसने सब तरह से मेरी मदद करने का वादा किया।

उजड़े हुए शहर और गाँव पार करते, हम आगे बढ़े। बम के मारे मकान भूखे कङ्काल-से दीखते थे। मालूम पड़ता था, जैसे इन सारे इलाकों में जिन्दा प्लेग भ्रमण कर रहा हो।

'जरमनों को बड़ी सही सजा मिली है—' हंगेरियन ड्राइवर ने कहा—'ये सब-के-सब लुटेरे हैं।'

'अब उन जरमनों के पास लूट का सामान रखने की जगह नहीं, इसलिए वे आपको लूट भी नहीं सकते।'

'ठीक-ठीक ऐसी बात नहीं है, दोस्त! जरमनी अब भी बड़ा धनी मुल्क है। गल्त मामला [illegible] ये जरमन अपना धन खर्च करना नहीं चाहते। ये परले सिरे के कंजूस हैं। देखो

न, मैं अमेरिकनों के यहाँ से अच्छी-से-अच्छी गाड़ियाँ ला उनके सामने हाजिर करता हूँ, पर उनकी वे कीमत क्या लगाते हैं—भीख की सामग्री जैसी। वे सोचते हैं कि अमेरिकनों की गाड़ी चुराने में मुझे कुछ खर्च ही नहीं करना पड़ता। मैं अपने तजुर्बे से कह सकता हूँ कि यह बड़ा खर्चीला पेशा है। नासमझ अमेरिकन सैनिक, हमारे सोवियत सैनिकों-जैसे वोदका का मूल्य नहीं समझते। अगर तुम्हें उन्होंने एक बार अपनी पकड़ में ले लिया, तो वे तुम्हें शैतान के घर भेज कर ही दम लेंगे। पर यह हिसाब-किताब, ये नमकहराम जरमन, नहीं समझते। ये कभी भी हमारी लाई हुई गाड़ियों की ठीक-ठीक कीमत नहीं लगाते। ऐसे तो ये पाजी हैं।'

तीसरे पहर हम लोग मागडेबुर्ग शहर में दाखिल हुए। डालरों की खुशी में हंगेरियन ने वहाँ से मेरे लिए एक और दूसरे ट्रक का इन्तजाम कर दिया।

इस बार मैं चोरबाजार के पोलैण्ड-निवासी सरदारों के पाले पड़ा। सरदार सब तरह के नाजायज मालों की खरीद-बिक्री रूसी और ब्रिटिश अधिकार-क्षेत्रों के बीच किया करते थे। आदमियों को आरपार उतारना उनका पेशा था। उनका व्यापार इतना विस्तृत था कि वे अपनी ट्रक लाइनें और बाल्टिक सागर में अपने अपने जहाज चलाया करते थे। मेरे ट्रक के ड्राइवर ने बड़े गर्व के साथ मुझे बताया—'हम तुम्हारे लिए सब तरह का काम कर सकते हैं—सुई

लाने से लेकर किसी का खून तक तुम्हारे लिए ला दे सकते हैं। सब तरह के कामों की अलग-अलग फीस है। सिर्फ, हम राजनीतिक मामलों में हाथ नहीं बँटाया करते !'

'राजनीतिक मामलों से आप क्यों हिचकते हैं ?'

'हिचक का कारण है, रूसी इसे अच्छी शराफत नहीं समझते। उन्होंने इसके लिए अपना अलग सिलसिला बना रखा है, वे नहीं चाहते कि उनके एकाधिपत्य में और कोई दखल दे। साथ ही, राजनीतिक मामले आमदनी के अच्छे जरिये भी नहीं हैं।'

रास्ते में, हम लोग साथ-साथ, काफी वोद्का ढालते रहे। इससे हमारा पारस्परिक सम्बन्ध बहतर होता गया। एक पोल ने फिर वादा किया--'तुम्हें, हम अपने दल में, इन रूसियों की जाँच के पार निकाल ले जाएँगे।'

पर रूसियों ने उस दिन जाँच ही नहीं की। एक पोल सरदार ने कहा--'पिछली बार, हम लोगों ने जो वोद्का उनके भेंट चढ़ाया था, वह काफी तेज साबित हो रहा है।'

शाम के समय हम श्वेरिन में दाखिल हुए। इसी शहर में, रूसियों ने अपने बाल्टिक क्षेत्र का मुख्य केन्द्र स्थापित किया था। मैंने पोलिश सरदार से बर्लिन की औरतों के रखे जानेवाले कैम्प का पता लगाने के लिए कहा। वह रूसी दफ्तर में इस भाँति घुसा, मानों वह उसका कोई बड़ा अफसर हो। कुछ ही मिनटों में मेरे

काम की सारी बातों का पता लगा, वह बाहर आया। मैंने उसकी चातुरी की प्रशंसा की। उसने कहा—'यह तो कोई बड़ी बात नहीं थी। मैंने रूसियों से कहा कि मुझे उस कैम्प में कुछ सामान उतारना है और तुरन्त ही उन्होंने उसका ठीक-ठीक पता मुझे दे दिया।'

'क्या वह जगह यहाँ से दूर है?'

'नहीं, वह हमारे रास्ते पर ही पड़ता है। वह कैम्प एक मछुओं के गाँव में बसा है, मैं तुम्हें वहाँ तक साथ ले चलूँगा।'

निश्चित स्थान पर पहुँचने पर, हमें तार से घिरा एक इलाका दिखाई दिया। मछुओं की टोली उसके बाहर बसी थी। मैंने उस टोली में ही रात बिताना तय किया।

मैंने एक घर का दरवाजा खटखटाया। एक बूढ़ी ने बाहर निकल कर पूछा—'क्या जहाज से उतरे हो?'

'नहीं, जहाज की इन्तजार में हूँ!'—पोलिश सरकार द्वारा बताए गए सांकेतिक शब्दों में मैंने उत्तर दिया।

'तब भीतर आओ!'—कहते हुए उसने मुझे एक कमरा दिखाया—'मेरा लड़का आज घर नहीं लौट रहा है, तुम उसके बिस्तरे पर सो सकते हो!'

थकावट से मैं ऐसा चूर हो रहा था कि बिना कपड़े उतारे ही मैं बिस्तर पर लेट गया। कुछ देर तक मैं खिड़की से [illegible] रोशनी और उसके प्रकाश के बीच घिरे तार देखता रहा। फिर मुझे नींद आ गई।

बाल्टिक तट

तारे तब भी जगमग कर रहे थे। सवेरा होने में कुछ देर थी। मैं समुद्र-किनारे टहलने निकला।

समुद्र उस समय भी सोया-सोया जान पड़ता था। पर, हवा में प्रभात की ताजगी आ गई थी। बालू पर बैठे समुद्री पक्षी अब उड़ने ही वाले थे।

सामुद्रिक नमकीन पानी के कुछ छींटे लगा, मैंने अपना चेहरा साफ किया; फिर, क्षितिज की ओर देखा। एक पालवाली नाव दिखलाई पड़ी। किनारे से वह बहुत दूर थी, उत्तरोत्तर वह और भी दूर ही हटती जा रही थी।

मुझे ऐसा लगा, मानों वह नाव सोवियत प्रभुत्व-क्षेत्र के लौह द्वार को तोड़कर बाहर जा निकलेगी।

तार से घिरे कैम्प की प्रदक्षिणा कर मैंने पता लगाया कि उसका

निकलने का एक ही बाहर दरवाजा था, जहाँ बन्दूक लिए एक सोवियत सैनिक पहरा दे रहा था। उस सैनिक का चेहरा ग्रामीण रूसी-सा दीखता था। मुझे अपने हाथ में वोद्का की एक बोतल उछालते देख, वह परिचित की भाँति हँसने लगा।

मैं उसे वह बोतल भेंट करना चाहता था, पर उसने इनकार करते हुए कहा—'अभी नहीं, अभी मैं पहरे पर हूँ।'

'तुम पहरा क्यों दे रहे हो ? कैम्प के भीतर तो कोई चहल-पहल दिखाई देती नहीं !'

'मैं सुन्दरियों का पहरेदार हूँ, बच्चू !'

'तब तो, तुम्हें बड़ा ही मजेदार काम मिला है।'

'तुम्हें ईर्ष्या हो रही है न ?'

'अबतक तो कोई सुन्दरी मुझे दिखाई नहीं पड़ी।'

'उनसे हम नावें रँगवाया करते हैं। आज तीसरे पहर जब मैं उनसे काम लेने उन्हें समुद्र-किनारे ले जाऊँगा, तब देखना।'

'वे सचमुच सुन्दरी हैं ?'

'बच्चू, उन्हें देखते ही तुम्हारा सिर लट्टू की तरह नाचने लगेगा।'

'और तेजी—क्या उनमें वोद्का जैसी है ?'

'और नहीं तो क्या ! अफसोस सिर्फ यह है कि हम मामूली सैनिक उन्हें हाथ नहीं लगा सकते। यह अधिकार सिर्फ अफसरों को है। खूबसूरती—तुमने ऐसी जिन्दगी भर न देखी होगी—गलत कहता होऊँ, तो मैं शैतान के पाले पड़ूँ !'

'तुम्हारा घर उन्होंने बिगाड़ दिया है !'

'और तुम्हारा भी बिगड़ जाएगा, देखना । लेकिन, यहाँ किनारे पर आते समय, वोद्का लाना न भूलना ।'

'मैं नहीं भूलूँगा !'

'तब अच्छी छनेगी !'

'जरूर !'

मैं समुद्र के ठीक किनारे पर बने मछुए के एक झोंपड़े में घुसा । मछुआ अकेले बैठे, अपने जाल मरम्मत कर रहा था । मुझे देखते ही उसने पूछा—'हुक्म ?'

'वैसे ही तुम्हें देखने आया हूँ ।'

'मिहरबानी, पर तुम रूसियों की मुलाकात से खुदा बचाए !'

'मैं रूसी नहीं हूँ !'

'तब खैरियत है ।'

'क्यों, तुम रूसियों से वैसा डरते क्यों हो ?'

'अजी, वे डाकू हैं, डाकू । वे घरों में जब घुसते हैं, तब दोस्त होने का दावा करते हैं और चलते समय सब कीमती चीजें—और औरतों तक को लेकर चलते बनते हैं ।'

'बिना कसूर वे किसी को थोड़े ही पकड़ ले जाते होंगे ?'

'बहानों की उन्हें क्या कमी ! कहेंगे, तुम्हारी झोपड़ी से रूसी जबान क्यों नहीं निकलती ? तुम जरूर खौफनाक फासिस्ट हो ! फिर, उसी मुहूर्त से तुम्हारा सब कुछ जब्त कर लेने का उन्हें कानूनी हक मिल जाता है ।'

कोई बीस औरतों को आगे हाँकता हुआ वह रूसी संतरी समुद्र-किनारे आया। बालू पर पड़ी नावों के पास पहुँच उसने उन्हें हुक्म दिया—'जल्लादों की बच्चियो! अब काम शुरू करो। पर देखना, रंग से अपने होंठ न रंगना, नहीं तो तुम्हारे सर की शामत उतार दूँगा।'

खुद वह मछुए के झोपड़े में कहता आया—'मेरा गला सूखता जा रहा है!'

'तर करने की चीज यहाँ हाजिर है'—कहते हुए मछुए ने मेरी वोद्का की बोतल से एक ग्लास भर, उसे दिया। संतरी उसे एक उछाल में ही उँड़ेल, कहने लगा—'हम रूसी सीधे-सादे आदमी होते हैं, इसीलिए सफेद वोद्का ही हमारा पेय पदार्थ है!' फिर, मछुए की ओर घूम, उसे फटकारने लगा—'और तुम जरमन शैतान! अब तुम्हें पता चल गया होगा कि हम रूसी कितने मजबूत होते हैं। हम आग भी निगल जा सकते हैं। तुमने हमारे खिलाफ लड़ने की हिमाकत क्यों कर दिखाई?'

'अब और कभी ऐसी गलती नहीं होगी!'—मछुए ने क्षमा के स्वर में कहा—'आपने उस दिन, अपनी चौकी पर, मेरी वह धुनाई की कि मैं हर रूसी को अपना सब से बड़ा हाकिम मानने लगा हूँ।'

'अब और कभी भूल न करना'—संतरी ने उससे कहा—'पर तू देखता नहीं, मेरा ग्लास जो खाली है!'

'अभी हुजूर!'—कह मछुए ने उसका ग्लास फिर से भर दिया,

उसे भी एक उछाल में डाल, संतरी मुझ से कहने लगा—'मुझे पता लगा है, अब अमेरिकन हम पर हमला करना चाहते हैं। तुम उनसे कह देना कि वह दिन दूर नहीं, जब हालीउड पर कब्जा कर मैं वहाँ की परियों से उसी तरह काम लूँगा, जिस तरह इन जरमन चुड़ैलों से ले रहा हूँ। आः, कितना मजा रहेगा!'

वह हँसने लगा। मल्लुआ भी हँस पड़ा। उसे डाँटते हुए संतरी ने कहा—'बेवकूफ! तुझे हँसने का अख्तियार नहीं! हँस तो सिर्फ सोवियत नागरिक सकते हैं। खैर! अब मैं यहाँ जरा आराम करूँगा, तू इन औरतों की निगरानी रखना। अगर इनमें से एक भी गायब हुई, तो तेरी खाल खींच लूँगा।'

मल्लुए का गला पकड़, उसे जोर-जोर से हिला, संतरी ने अपना हुक्म और कई बार दुहराया, फिर मुझ से कहा—'तुम्हें अब उन सुन्दरियों के देखने की मैं इजाजत देता हूँ। पर खयाल रखना, उन्हें छूना नहीं, नहीं तो······'

अपना वाक्य खत्म करने के पहले ही, नशे के झोंके में वह, एक ओर ढुलक पड़ा।

'यह साला अब शाम तक सोया रहेगा'—मल्लुए ने कहा—'और मुझे जाल फैलाना था!'

'कहो, मैं फैला आऊँ!'

'तुम्हें यह हिकमत मालूम है?'

'अच्छी तरह!'

'तो जाओ, वह पालवाली नाव ले लो। पश्चिम की ओर जाना। वहाँ तुम्हें और भी माझी मिलेंगे, जो तुम्हारी मदद कर देंगे। इस भालू के जगते ही मैं उधर आऊँगा।'

माझी को भी मैंने वोद्का की एक बोतल और कुछ सिगरेट भेंट की। मुझे हृदय से धन्यवाद दे, वह बोतल खोलने लगा।

बालू पर मैं तेज नहीं चल सकता था। सुन्दरियों को ग़ौर से देखने का यह अच्छा बहाना था। उनकी आवाज भी मेरे कानों में आई; पर मैं जिसकी तलाश में था, वह सुनाई न पड़ी।

आखिरी नाव के पास पहुँच मैं निराश हो चला! पर वहाँ पीछे फिर कर देखते ही मेरी निगाह एक नीली कमीज पर पड़ी। वह रंग परिचित-सा जान पड़ा। उस पर खुले बाल बहुत नीचे तक झूल रहे थे। मुँह फेरते ही उसका चेहरा दिखाई दिया। मेरे मुँह से निकल पड़ा—'सीग्रीद!'

वह उछल कर मेरे पास आना चाहती थी, पर मैंने उसे मना किया। पानी में तैरती एक पालवाली नाव की ओर दिखा, मैंने इशारे से बताया—'वहाँ!'

किनारे की सूखी झाड़ियों के बीच छिपती-छिपाती वह नाव के पास आ पहुँची। तब तक मैंने पाल ठीक कर लिया था। इस समय, उसके छिपाव का वह बहुत अच्छा साधन बन रहा था। मैंने उसे नाव की पेटी में छिप जाने के लिए कहा।

पाल में हवा लगते ही वह फूल उठा। हमारी नाव तेजी से, खुले समुद्र की ओर भाग निकली।

○○○

किनारे की रोशनी

सूर्य समुद्र में डूब गया। तब भी उसकी लाली से क्षितिज आलोकित हो रहा था। उस ओर निहारते हुए सीग्रीद ने कहा—'मुझे उधर कोई किनारा दिखाई नहीं देता।'

'ल्युबेक की खाड़ी बहुत चौड़ी नहीं है'—मैंने कहा—'कुछ देर में किनारा जरूर दिखाई देगा।'

लहरें नाव को थपथपाया करतीं, नाव उन्हें चीर कर आगे निकल जाया करती। कुछ दूर और जा निकलने पर, उसने फिर से क्षितिज की ओर ध्यान से निहार कर कहा—'शायद वहाँ रोशनी है। या यह भी मेरा भ्रम है?'

क्षितिज पर की लालिमा विलीन हो गई। लहरें ऊँची-ऊँची उठने लगीं। वे नाव को ऊपर की ओर उछाल दिया करतीं, पर पाल का जोर हवाओं की ओर, नाव को आगे ले के भागा करता।

वैसे ही एक मौके पर वह झोंककर मेरे पास आ गई। जिस हाथ से मैंने पाल की रस्सी पकड़ रखी थी, उसे उसने कस कर दबाया।

'डर रही हो?'—मैंने उससे पूछा।

'नहीं तो!'—उसने उत्तर दिया—'यहाँ समुद्र और आकाश ही तो हैं, क्रूर आदमी यहाँ नहीं हैं, यह मुझे बड़ा अच्छा लगता है।'

'कुछ कहना चाहती हो?'

'मेरी बड़ी अजीब हालत हो रही है। मैं एक साथ ही हँसना, रोना और गाना चाहती हूँ, पर किसी एक के लिए भी ताकत बची नहीं दीखती।'

वह नाव की मांगी पर जा बैठी और अंधेरे क्षितिज की ओर देखने की कोशिश करने लगी।

मुझे कुछ गुनगुन-सी आवाज सुनाई पड़ी। पता नहीं, यह समुद्र की थी या उसकी। बहुत से चित्र एक साथ याद आने लगे। शायद सीथीद का भी, मेरी ओर फिर, उसने कहा—'संगीत-अध्यापक की याद आती है। बताओ तो, इतने निरपराध आदमियों को रूसी क्यों सताया करते हैं? क्या यही मानव-कल्याण का उनका नया रास्ता है?'

अंधकार के कारण, उसके चेहरे में मुझे क्रिस्तेल का चेहरा दिखाई दिया। भय-सा लग आने के कारण, मैंने आँखें बन्द कर लीं।

'देखो'—उसने मुझे जगाते हुए कहा—'उधर रोशनी दिखाई देती है।'

नाव किनारे की बालू पर जाकर रुक गई। नीचे उतर हमलोग उसे सूखी जमीन पर खींच लाए। फिर उसे वहीं छोड़, हम लोग किनारे-किनारे आगे बढ़े।

'पता नहीं—' उसने कहा—'हम किस जगह उतर पड़े हैं?'

हमारे आगे-आगे चलनेवाले एक व्यक्ति ने कहा—'यह नौयस्टाट (नया शहर) है। यह ब्रिटिश अधिकार-क्षेत्र में पड़ता है।'

चाँद निकल आया था। लहरें उछल-उछल कर उसे छूना चाहती थीं। समुद्र भी हँसता दिखाई देता था।

उसका आँचल हमारे रास्ते तक को समेट लेता था। उससे बचने की चेष्टा में सौभद्र का सिर मेरी छाती से आ टकराया। उसे वहीं ही रखते हुए उसने कहा—

'हम यहीं से ही नया जीवन आरम्भ करेंगे।'